



महाविद्यालय - दर्पण

AISHE : C-28817  
NIRF : IR-C-28817  
RGPGIC : IC 202216531

# सौरभ

"Of the Students, By the Students, For the students"

भारतीय ज्ञान परम्परा विशेषांक

2024-25



**Raghunath Girls' Post Graduate College, Meerut**

Re-accredited by NAAC (4<sup>th</sup> cycle) with 'B<sup>+</sup>' Grade (CGPA 2.53) (2022)

"COLLEGE OF EXCELLENCE" STATUS BY UGC (2014)

## सरस्वती वन्दना



वर दे, वीणावादिनी वर दे!  
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव  
भारत में भर दें!

काट अन्ध उर के बन्धन-स्तर,  
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,  
कलुष-भ्रैष-तम हर प्रकाश भर  
जगमग जग कर दे!

नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव  
नवल कण्ठ, नव जलद-मन्द्ररव,  
नव नभ के नव विहग-वृन्द को  
नव पर, नव स्वर दे!

वर दे, वीणावादिनी वर दे!

### VISION OF THE COLLEGE

*Through the holistic development of women, grounded in the core values of empowerment, inclusivity, leadership and social responsibility, we envision a world of gender equality and sustainable social transformation of communities through mentorship, entrepreneurship and skill-oriented programs.*

### MISSION OF THE COLLEGE

*Empowering young women through inclusive, multidisciplinary education, dynamic leaderships, critical thinking to inspire transformative change in communities at national and global level aligned with universal core values of our Culture.*

## (विद्यालय का आदर्श वाक्य)

*Of the Students, By the Students, For the Students*

## विद्यालय गान

रहे अमर विद्यालय अपना ।  
नव विद्या की ज्योति जले नित,  
छात्राओं की सरिता बहे नित,  
पावन रहे सदा जल इसका,  
पूरा हो मन का यह सपना,  
रहे अमर विद्यालय अपना ।

एक ध्येय दानाय अर्ज्यते,  
हो प्रतीक पुष्पांजलि जयते,  
वीणावादिनी! वरद हस्त दे,  
दे नित-नित नव भाव कल्पना,  
रहे अमर विद्यालय अपना ।

कला, विज्ञान, वाणिज्य आदि का,  
सौरभ बिखराये दर्शन का,  
बनें सुगृहणी तथा सुमाता,  
सफल करें यों जीवन अपना,  
रहे अमर विद्यालय अपना ।

जीवन के सुन्दर समतल में,  
कर्म, धर्म की गति में, लय में,  
शौर्य, शील, शक्ति प्रतिमा बन,  
छू लें दूर क्षितिज नव अपना,  
रहे अमर विद्यालय अपना ।



**डॉ० लक्ष्मी कान्त बाजपेयी**

संसद सदस्य (राज्य सभा)  
मुख्य सचेतक, भा०ज०पा०  
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भा०ज०पा०

**Dr. LAXMIKANT BAJPAI**  
MEMBER OF PARLIAMENT (RAJYA SABHA)  
CHIEF WHIP, BJP  
NATIONAL VICE PRESIDENT, BJP



सत्यमेव जयते

अध्यक्ष / Chairman

सभा पटल पर रखे गये पत्रों संबंधी समिति  
COMMITTEE ON PAPERS LAID ON THE TABLE  
सदस्य/MEMBER

- कार्य मंत्रणा समिति / Business Advisory Committee
- गृह मंत्रालय की परामर्शदात्री समिति / Consultative Committee for the Ministry of Home Affairs
- ऊर्जा समिति / Committee on Energy

पत्रांक : 709/मे०/2025/रा०स०

दिनांक : 16.09.2025

## शुभकामना सन्देश

हर्ष का विषय है कि 'रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलिज' वार्षिक पत्रिका 'सौरभ' सत्र 2024-25 अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट महाविद्यालय शहर के नामचीन महाविद्यालयों में से एक है और इसी कॉलिज से पढ़ी छात्राएं अधिकतम सरकारी कार्यालयों और बड़ी-बड़ी कम्पनियों में कार्य कर अपने देश का नाम रोशन कर रही हैं।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'सौरभ' पत्रिका ज्ञान, सृजनशीलता और अभिव्यक्ति का मंच है। यह न केवल विचारों और प्रतिभाओं को प्रदर्शित करती है बल्कि आपको साहित्य, कला, विज्ञान और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से भी जोड़ती है, जिससे छात्राओं की कल्पनाओं को पंख लगाने में सहायक होती है।

महाविद्यालय के शिक्षकों व प्रचार्या जी को उक्त वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं देता हूँ और आशा करता हूँ कि उक्त महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं का भविष्य उज्ज्वल हो।

प्रतिष्ठा में,  
प्रो० निवेदिता कुमारी  
प्राचार्या,  
रघुनाथ गर्ल्स, स्नातकोत्तर कॉलेज,  
वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ।

(डॉ० लक्ष्मीकान्त बाजपेयी)

सांसद राज्यसभा  
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा

Office : Room No. 320, B-Block, Parliament House Annexe Extn. Building, New Delhi-110001. Tel.:011-23035826, 21410332

Residence : 167/10, New Mohanpuri, Meerut, Uttar Pradesh, Tel.: 0121-2664700, Mob.: +91 9412202149, +91 9528709142

House No. 11-A, Ashoka Road, New Delhi-110001. Tel.:011-23312332

E-mail : lbajpai6@gmail.com, lkb.mprs@sansad.nic.in



**अरुण चन्द्रप्रकाश गोविल**

सांसद  
मेरठ-हापुड़ लोकसभा  
उत्तर प्रदेश



सत्यमेव जयते

सदस्य : विदेश मामलों की स्थायी समिति  
सदस्य : आवास एवं शहरी मामलों के  
मंत्रालय की परामर्शदात्री समिति

पत्रांक : लो० स० मे०/1760/2025

दिनांक : 01.10.2025

## शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि रघुनाथ गर्ल्स, स्नातकोत्तर कॉलेज, वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'सौरभ' सत्र 2024-25 अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

इस अवसर पर आपके द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिका के लिए भी मैं अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। आपके इस उपक्रम से समाज की अगली पीढ़ी को समाज की परोपकार, समाज सेवा तथा देशभक्ति की सुदीर्घ व अनुकरणीय परम्परा का पता चलेगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

भवदीय

सांसद

(मेरठ-हापुड़ लोकसभा क्षेत्र)

प्रतिष्ठा में,  
प्रो० निवेदिता कुमारी  
प्राचार्या,  
रघुनाथ गर्ल्स, स्नातकोत्तर कॉलेज,  
वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ।

मेरठ निवास : ए-12ए, डिफेंस कालोनी, मवाना रोड, मेरठ-250001 (उ०प्र०)  
दिल्ली कार्यालय : 2-सी तालकटोरा लेन, नई दिल्ली-110001

दूरभाष : +91 8850345960  
ई-मेल : arungovil.mp@sansad.nic.in



कार्यालय कक्ष संख्या- एफ-1/2, चतुर्थ तल  
बापू भवन, सचिवालय, लखनऊ  
दूरभाष : 0522-2239302 (का०)/फैक्स  
बी-1 शास्त्री नगर, मेरठ (का० मेरठ)  
दूरभाष नं०- 0121-2602163  
मो० नं०- 08887150849

दिनांक : 18/09/2025

**डॉ० सोमेन्द्र तोमर**

राज्य मंत्री

ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत विभाग

उत्तर प्रदेश

## शुभकामना सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'सौरभ' सत्र 2024-25 का अंक प्रकाशित होने जा रहा है। महाविद्यालय एवं छात्राओं के उत्साहवर्धन के लिए यह महोत्सव हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने और समाज में एकता और सद्भावना का संदेश देने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

इस अवसर पर वार्षिक पत्रिका 'सौरभ' सत्र 2024-25 के अंक का प्रकाशन विद्यालय की छात्राओं, समाज की परंपराओं, संस्कृति और उपलब्धियों को एक नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करेगा।

पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका 'सौरभ' के प्रकाशन से छात्राओं में नई ऊर्जा और प्रेरणा का संचार होगा। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु प्रगति की कामना करता हूँ।

(डॉ० सोमेन्द्र तोमर)

राज्यमंत्री

ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा विभाग  
उत्तर प्रदेश सरकार

प्रतिष्ठा में,  
प्रो० निवेदिता कुमारी  
प्राचार्या,  
रघुनाथ गर्ल्स, स्नातकोत्तर कॉलेज,  
वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ।



**प्रोफेसर संगीता शुक्ला**

डी०एस०सी०  
कुलपति



**चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ-250 004 (उ०प्र०)**

पत्रांक : एस०वी०सी०/21/1559

दिनांक : 15.09.2025

## शुभकामना सन्देश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि रघुनाथ गर्ल्स (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'सौरभ' के शैक्षणिक सत्र 2024-25 का प्रकाशन किया जा रहा है, जो महाविद्यालय की प्रगति के दर्पण के रूप में एक सार्थक प्रयास है। महाविद्यालय द्वारा इस प्रकार के आयोजित विभिन्न कार्यक्रम विद्यार्थियों में नयी उमंग एवं उत्साह के साथ सकारात्मक सक्रियता के संवर्द्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए सर्वांगीण विकास करने में सहायक सिद्ध होते हैं। साथ ही साथ इस तरह प्रकाशित की जाने वाली पत्रिकाओं से नवप्रवेशित विद्यार्थियों को भी प्रेरणा मिलती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय सफलतापूर्वक अपनी पत्रिका 'सौरभ' प्रकाशित कर विद्यार्थियों को अपनी अभिव्यक्ति, ज्ञानोपयोगी लेखों एवं सृजनात्मक प्रतिभा को प्रकट करने का पूर्ण अवसर प्रदान करेगी।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(संगीता शुक्ला)

प्रतिष्ठा में,  
प्रो० निवेदिता कुमारी  
प्राचार्या,  
रघुनाथ गर्ल्स, स्नातकोत्तर कॉलेज,  
वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ।

कुलपति आवास, विश्वविद्यालय परिसर  
मेरठ - 250 004

कार्यालय : +91-0121-2760554, 2760551, फ़ैक्स: 2762838  
शिविर कार्यालय : 91-0121-2600066, फ़ैक्स: 2760577

वैबसाइट : [www.ccsuniversity.ac.in](http://www.ccsuniversity.ac.in)  
ई-मेल : [vc@ccsuniversity.ac.in](mailto:vc@ccsuniversity.ac.in)



9711829584

9454306532



0121-2664088

e-mail-reomeerut@gmail.com

दिनांक : 09/09/2025

**शशि भूषण उपाध्याय**

सहायक निदेशक

क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय

कचहरी परिसर, मेरठ

## शुभकामना सन्देश

'सौरभ' 2024-25 महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन हम सभी के लिए अत्यन्त गौरव का विषय है। 'सौरभ' की सुगन्ध से ज्ञान, विज्ञान, शिक्षण, प्रशिक्षण स्वरोजगार के अनगिनत आयाम आप्लावित हों, ऐसी मेरी कामना है।

महाविद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है। छात्रायें अपनी भूमिका की विधायक बन रही हैं। मैं आप सभी के स्वर्णिम भविष्य की शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद,

(शशि भूषण उपाध्याय)

सहायक निदेशक  
क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय  
मेरठ मण्डल, मेरठ

प्रतिष्ठा में,  
प्रो० निवेदिता कुमारी  
प्राचार्या,  
रघुनाथ गर्ल्स, स्नातकोत्तर कॉलेज,  
वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ।



**पुनीत नाथ**

सचिव  
प्रबन्ध समिति

## शुभकामना सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि रघुनाथ गर्ल्स, पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ इस वर्ष 'सौरभ' पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। यह अंक शिक्षा साहित्य कला एवं विज्ञान का सम्यक् ज्ञानपुंज है जो छात्राओं के साथ-साथ पाठकों के लिए भी मनोरंजक ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक होगा।

मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि वार्षिक पत्रिका 'सौरभ' का यह अंक अनूठा सिद्ध होगा। पत्रिका के प्रकाशन हेतु मैं प्राचार्या, शिक्षिकाओं, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के साधुवाद देता हूँ। इसके सफल प्रकाशन के प्रयास हेतु सम्पादक मण्डल को मेरी अनन्त शुभकामनायें।

सचिव  
प्रबन्ध समिति

प्रतिष्ठा में,  
प्रो० निवेदिता कुमारी  
प्राचार्या,  
रघुनाथ गर्ल्स, स्नातकोत्तर कॉलेज,  
वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ।

## उद्बोधन संदेश...



प्रिय छात्राओं, शिक्षकों एवं पाठकों,

सर्वप्रथम मैं आप सभी को 'सौरभ' वार्षिक पत्रिका 2024-25 भारतीय ज्ञान परम्परा विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई देती हूँ। यह पत्रिका मात्र एक संकलन नहीं है, वरन् हमारे महाविद्यालय की जीवन्त आत्मा का प्रतिबिम्ब है। यह छात्राओं की सृजनात्मकता एवं उनकी कल्पनाशीलता का एक ऐसा मंच है, जो उन्हें आत्म-अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करता है।

यह महाविद्यालय ज्ञानार्जन का स्थान नहीं है, वरन् यह वह भूमि है जहाँ विचारों के बीज बोये जाते हैं। पत्रिका में छात्राओं ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज, संस्कृति, विज्ञान एवं जीवन के विविध आयाम प्रस्तुत किए हैं। यह पत्रिका विश्वास दिलाती है कि शिक्षा तभी सार्थक है, जब वह सृजनशीलता एवं संवेदनशीलता से जुड़ी हो। इस पत्रिका की विशेषता है कि यह छात्राओं के लिये, छात्राओं की एवं छात्राओं द्वारा संकलित है। हमारा महाविद्यालय सदैव इस बात पर बल देता है कि शिक्षा मात्र पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रहे, वरन् वह जीवन मूल्यों एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों से सम्बन्धित भी हो।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं संकाय सदस्यों को धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने 'सौरभ' पत्रिका को सुरूप प्रदान किया एवं छात्राओं को पत्रिका के माध्यम से अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित किया।

अन्त में, यही कहूँगी कि 'सौरभ' पत्रिका हमारे महाविद्यालय का दर्पण है, हमारी सामूहिक मेहनत का प्रतीक है। सभी छात्राओं का भविष्य उज्ज्वल हो, यही मेरी शुभकामना है।

सप्रेम....

प्रो० निवेदिता कुमारी  
प्राचार्या



## सम्पादकीय

महाविद्यालय के सौरभ को सर्वत्र प्रसारित करते हुए **सौरभ** पत्रिका का नवीन अंक **भारतीय ज्ञान परम्परा विशेषांक** आपके समक्ष है जो महाविद्यालय की गरिमामयी परम्परा के अक्षुण्ण प्रवाह का परिचायक है, सामयिक प्रगति के परिचय के साथ-साथ यहाँ की शैक्षणिक और बौद्धिक प्रतिभा को प्रस्तुत करने में सक्षम है।

जीवन का स्वर्णिम काल है- विद्यार्थी काल, जिसमें उत्तरदायित्व का बोझ नहीं, जीवन-निर्वाह की चिन्ता नहीं। उसके लिए माता-पिता और परिवार है। उस काल में असीम आशाएं हैं, दिशाएं हैं, उड़ने को आकाश है, उड़ान भरने वाला मन है, कल्पनाएं हैं, विचार हैं, स्वप्न हैं, आकांक्षाएं हैं। लक्ष्य निर्धारित करने के अवसर हैं, बाधाओं और चुनौतियों का सामना करने का साहस है और शारीरिक तथा मानसिक शक्ति है। कमजोर पड़ने पर परिवार और शिक्षकों का सम्बल है।

विद्यार्थी काल में आप बहुविध शिक्षा ग्रहण करते हैं। इस काल में मिलने वाली शिक्षा वास्तविक अर्थों में पुस्तकों और कक्षाओं की परिधि से भी परे है। शिक्षा द्वारा ज्ञान का संचय ही नहीं, अपितु बुद्धि का विकास होता है। शिक्षा शैक्षणिक उत्कृष्टता के अवसरों के द्वार खोलती है और यथावसर भविष्य का निर्देश देती है, किन्तु हमारे नैतिक मूल्य दिशासूचक की भाँति इसका निर्धारण करते हैं कि अवसरों का सदुपयोग कर उनका लाभ कैसे प्राप्त किया जाए। ईमानदारी, जिम्मेदारी और सत्यनिष्ठा मात्र अमूर्त आदर्श नहीं हैं, अपितु श्रेष्ठ जीवन के निर्माण का आधार है। अतः नैतिक मूल्य एक सार्थक जीवन की नींव है।

तीव्र गतिशील तकनीकी प्रगति, शैक्षिक प्रतिस्पर्धा और निरन्तर परिवर्तनशील सामाजिक परिवेश के युग में नैतिक मूल्यों की महती आवश्यकता है। नैतिक मूल्यों के प्रति आस्थावान् व्यक्ति ही प्रलोभित हुए बिना जिस मार्ग को चुनता है, वह मार्ग कठिन भले ही हो, परन्तु सम्मान प्रदान करने वाला होता है और व्यक्तित्व तथा चरित्र को दृढ़ता प्रदान करता है।

नैतिक मूल्य अनुशासन और सहभागिता की भावना उत्पन्न करते हैं। ये आपको शिक्षकों का सम्मान करने, अपने सहपाठियों को मित्र बनाने, उन्हें संजोने तथा अपने आस-पास के लोगों का उत्थान करने के लिए प्रेरित करते हैं। महाविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण में ही यही नैतिक मूल्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, परीक्षाओं में निश्छलता, प्रयासों में ईमानदारी और विकास में सहयोग को बढ़ावा देते हैं और कठिन परिस्थितियों में अपने विश्वासों पर अडिग रहने की क्षमता प्रदान करते हैं।

सभी छात्राओं से सस्नेह आग्रह है कि वे नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण जीवन जीने का प्रयास करें। सफलता के पीछे न भागें, सफलता को अपनी ओर आकर्षित करें अपने श्रम से, अपनी ईमानदारी से, अपनी सत्यनिष्ठा से।

शुभकामनाओं सहित।

*Dr. Anurag K. Singh*  
प्रो० पूनम लखनपाल  
सम्पादिका

# अभिनन्दन



# महाविद्यालय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राएँ

सत्र 2024-25



**Satakshi Bhardwaj**  
M.A.  
(Drawing & Painting Deptt.)  
Marks - 92.10%



**Ruby**  
M.A.  
(Music Deptt.)  
Marks - 89.75%



**Ankita Ujjwal**  
M.A.  
(Geography Deptt.)  
Marks - 86.5%



**Kanchan Tyagi**  
M.A.  
(Home Sc. Deptt.)  
Marks - 83.4%



**Priya Rani**  
M.A.  
(History Deptt.)  
Marks - 80.66%



**Nisha Pal**  
M.A.  
(Hindi Deptt.)  
Marks - 80%



**Prerna**  
M.A.  
(Sanskrit Deptt.)  
Marks - 73.66%



**Misba Zaidi**  
M.A.  
(English Deptt.)  
Marks - 76%



**Bhawna Singh**  
M.Sc.  
(Zoology Deptt.)  
Marks - 78.10%



**Huda Zaki**  
M.Com.  
(Commerce Deptt.)  
Marks - 80%



**Varnika**  
B.A. VI Sem  
(Geography Deptt.)  
Marks - 81.61%



**Aditi Kaushik**  
B.Sc. VI Sem  
(Zoology Deptt.)  
Marks - 87.83%



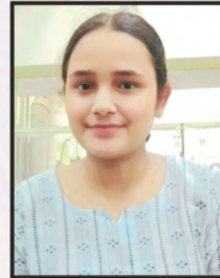
**Shivani Sirohi**  
B.Sc. VI Sem  
(Chemistry Deptt.)  
Marks - 83.5%



**Khushi Gaur**  
B.Sc. VI Sem  
(PCM)  
Marks - 80.27%



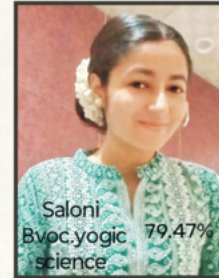
**Aruna**  
B.Sc. 3rd year  
(Computer Sc.)  
Marks - 62.12%



**Ashi Upadhyay**  
B.Sc. VI Sem  
(Food Science)  
Marks - .....%



**Siddhi Sharma**  
B.Com. VI Sem  
(Commerce)  
Marks - 74%



**Saloni**  
B.Voc. VI Sem  
(Yogic Science)  
Marks - 79.47%

विश्वविद्यालय की योग्यता सूची में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राएँ  
सत्र 2024-25



**Ankita Ujjain**

Geography Deptt.  
Highest Marks - 86.5%  
First Rank in University



**Satakshi bhardwaj**

Drawing & painting deptt.- M.A.  
Highest Marks - 92.10%  
First Rank in University



**Ruby**

Music Deptt. - M.A.  
Highest Marks - 89.75%  
First Rank in University



**Monika Singh**

Music Deptt. - M.A.  
Highest Marks - 88.20%  
Second Rank in University



**Kanupriya Chaudhary**

Botany Deptt. - M.Sc.  
Highest Marks - 90.55%  
First Rank in University



**Aditi Kaushik**

Biology deptt.- B.Sc.  
Highest Marks - 87.83%  
First Rank in University



**Varnika**

Geography Deptt. - B.A.  
Highest Marks - 81.61%  
First Rank in University



**Kashish Sharma**

B.Voc. (ACP)  
Highest Marks - 85.97%  
First Rank in University



**Rupanshi**

B.Voc. (ACP)  
Marks - 85.11%  
Second Rank in University



**Priya**

B.Voc. (ACP)  
Marks - 84.50%  
Third Rank in University



**Saloni**

B.Voc. (Yogic Sc.)  
Marks - 79.47%  
First Rank in University



**Tannu Rani**

B.Voc. (Yogic Sc.)  
Marks - 78.64%  
Second Rank in University



**Nikita Pal**

B.Voc. (Yogic Sc.)  
Marks - 77.52%  
Third Rank in University

# श्री राम के जीवन चरित्र विषयक पेंटिंग



# सांझी कला प्रशिक्षण कार्यशाला



# सृजनात्मक कार्यशाला अनुभव : मंडला एवं लिप्पन कला



# एन०सी०सी०

1&3/22 UP Girls' BN NCC,  
Raghunath Girls' Post Graduate College, Meerut



**A Grade in 'B' certificate (2025) from 22 UP Girls' BN NCC, Meerut**  
 Regt No. – UP/22/SW/A/626580  
 Name – CPL Prachi  
 Father's Name – Sushil Kumar



1&3/22 UP Girls' BN NCC,  
Raghunath Girls' Post Graduate College, Meerut



**Only Cadet to Pass in 'C' Certificate (2025) with A Grade in 22 UP Girls' BN NCC, Meerut**  
 Regt no. – UP/22/SW/A/625957  
 Name – SUO Annu  
 Father's Name – Sushil Kumar



1&3/22 UP Girls' BN NCC,  
Raghunath Girls' Post Graduate College, Meerut



**A Grade in 'B' certificate (2025) from 22 UP Girls' BN NCC, Meerut**  
 Regt no. – UP/22/SW/A/626495  
 Name – CPL Anushka Adhana  
 Father's Name – Anil Kumar Adhana




# एन०सी०सी०



## राष्ट्रीय कैडेट कोर



सेवा में,

एनसीसी/जीडी/6903, मेजर  
पूनम लखनपाल  
एनसीसी निदेशालय, उ.प्र.

राष्ट्रीय कैडेट कोर की 76 वीं वर्षगांठ पर राष्ट्रपति आपको इस कोर में 26 वर्ष की प्रशंसनीय सेवा के पश्चात सेवा-निवृत्ति के अवसर पर राष्ट्रीय कैडेट कोर में मेजर का अवैतनिक रैंक प्रदान करते हैं।

आशा है सेवा-निवृत्ति के उपरान्त भी आप राष्ट्रीय कैडेट कोर में रुचि लेते रहेंगे।



31 अक्टूबर 2024

*Chirpal*

(गुरवीरपाल सिंह)

लेफ्टिनेंट जनरल

महानिदेशक राष्ट्रीय कैडेट कोर

(गुरवीरपाल सिंह)  
(Gurvirpal Singh)  
Lieutenant General  
National Cadet Corps  
Director General National Cadet Corps



# योग विभाग



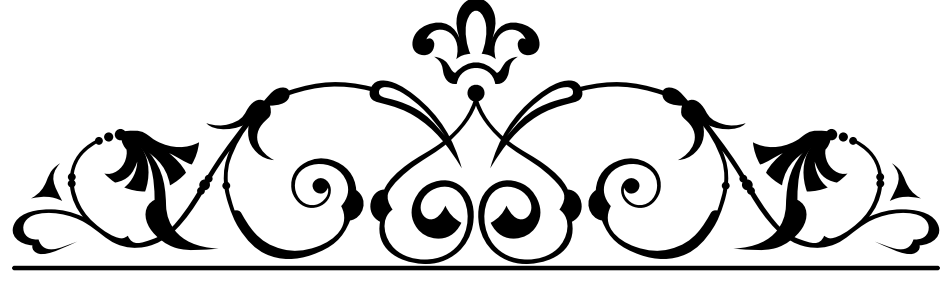
## अनुक्रमणिका

क्र०सं०	विषय	पृष्ठ संख्या	क्र०सं०	विषय	पृष्ठ संख्या
<b>हिन्दी विभाग</b>					
<b>सम्पादकीय</b>					
1.	कढ़ी जो बहुत कुछ कह गयी	5	31.	मेरा मेरठ	21
2.	वो लड़कियाँ	6	32.	मंजिल मेरी	21
3.	भारतीय ज्ञान परम्परा	6	33.	भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ	22
4.	मन की आँखें	7	34.	लघु कथा- सकारात्मकता : सफलता के लिए धैर्य का होना अत्यंत आवश्यक	24
5.	महक	7	35.	समय क्या है	24
6.	सेहत का राज मोटा अनाज	8	36.	खजुराहो मन्दिर : चन्देलों की सांस्कृतिक धरोहर	25
7.	अनवरत	9	37.	कल्पना एवं रंगों की कहानी	27
8.	आजाद रहिए विचारों से, लेकिन बंधे रहिये संस्कारों से	9	38.	प्राचीन भारतीय संस्कृति में विवाह संस्कार	29
9.	माँ बाप का प्यार	10	39.	संगीत में कैरियर के विभिन्न क्षेत्र	30
10.	असमर्थता	10	40.	शहरीकरण की चपेट में भारतीय गांव	32
11.	आतंकवाद का अंत सुनिश्चित	11	41.	भारत में बढ़ती बेरोजगारी के कारण	33
12.	दहेज- एक कुप्रथा	11	42.	राजस्थानी चित्रकला में रूप श्रृंगार परम्परा का निरूपण : एक अनुशीलन	34
13.	शक्ति का संकल्प ऑपरेशन सिंदूर	12	43.	गुरु और शिष्य के संयोग से ही सम्भव है घराने का अस्तित्व	36
14.	खुद को संवारने की बारी	12	44.	सुकून : एक वर्तमान आवश्यकता	37
15.	जीवन का लक्ष्य	13	45.	दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति	38
16.	मन की आवाज	13	46.	भविष्य में ललित कलाओं में संगीत शिक्षा की सम्भावनाएँ	40
17.	वीर जवानों सा ना कोई	14	47.	विजुअल परफॉर्मिंग आर्ट - स्कल्पचर	41
18.	फौजी हमारे देश की शान	15	48.	नारी : परिवर्तन की प्रेरणा	42
19.	भारत माता की जान	15	49.	भोजपुरी फिल्मों में संगीत	43
20.	दो किनारे	16	50.	कथक नृत्य : एक पारम्परिक शास्त्रीय कला	44
21.	आत्मनिर्भर भारत	16	51.	स्वतंत्र भारत में संगीत की प्रगति	45
22.	देशभक्ति	16	52.	श्रुति	46
23.	रू-ब-रू	17	53.	सर्वांगीण विकास में एन०सी०सी० की भूमिका	47
24.	एन०सी०सी० कैडेट का योगदान	17	<b>संस्कृत विभाग</b>		
25.	मैं एक मीडिया हूँ	18	<b>सम्पादकीय</b>		
26.	कॉलेज की यादें	18	54.	नारदपुराणे भक्तिस्वरूपम्	51
27.	स्वतंत्रता की छांव में हमने खुशियाँ बिखेरी थी	19	55.	संस्कृतगानम्	52
28.	सैनिक	19	56.	मेघाः आगताः	52
29.	कविता	20	57.	गङ्गागाथा	53
30.	आत्मनिर्भर भारत	20			

## अनुक्रमणिका

क्र०सं०	विषय	पृष्ठ संख्या	क्र०सं०	विषय	पृष्ठ संख्या
58.	आचार्य: देवो भव	53	84.	Miracle Tree	90
59.	अन्धकासुरवधकथा	54	85.	Women Empowerment in the Digital Age	91
60.	दधीचिकथा	55	86.	The Road Ahead	93
61.	कौतूहलप्रहेलिका:	56	87.	Nature's Harmony	93
62.	जयगाथा	57	88.	The Pain of Goodbye	94
63.	जय महामङ्गले.....	57	89.	A Flicker in the Fog	95
64.	उद्यममहर्षि: टाटामहोदय:	58	90.	Understanding and Nuturing Mental Health in Students	96
65.	सर्वश्रेष्ठगुरुदक्षिणा	59	91.	The Sprit Of NCC	97
66.	देवा धर्मरता नित्यं, दम्भशीला महासुरा:	60	92.	Symphony of Culinary Science	97
67.	देवा धर्मरता नित्यं दम्भशीला महासुरा:	61	93.	Status of Women Litracy in India	98
68.	रामायण:	63	94.	Climate Change	99
69.	महाकवि कालिदास की कृतियों में ईश्वर-चित्रण	64	95.	Facts that you must know	100
70.	भक्ति का लक्ष्य	66	96.	Rising Again	100
71.	महाकवि: कालिदास:	69	97.	Fashion : A Craze World Over	101
72.	'गीता' का उपदेश अर्जुन को ही क्यों ?	70	98.	Why can't a Women be more like a Man	101
73.	में	71	99.	The Last Day of College	102
74.	श्रीमद्देवीभागवतपुराणे रुद्राक्षमहत्त्वम्	72	100.	Cancer Survivors : Warriors of victims of Society	103
<b>English Section</b>			101.	Life And Its Values	106
<b>EDITORIAL</b>			102.	Keys to Successful And Happy Life	107
75.	I Shall Not Die In Vain	75	103.	The Menace of Pollution : Understanding, Effects and Solutions	108
76.	Digital Stress : Causes Effects & Remedies In The Modern Age	76	104.	Environmental Degradation And Its Consequences	110
77.	Second Innings	80	105.	Cutting Down on Highly Processed Foods : A Way to Improve Health	111
78.	Education and Employability	82	106.	Puranic Tradition	113
79.	From Chalkboards to Chatbots : Embracing Digital Tools In Modern Education	83	107.	Environmental Issues	117
80.	The Role of Zoology in Society	84	108.	NCC Camp Life	119
81.	Look Deep in to the Nature	86	109.	महाविद्यालय प्रशासनिक कार्नर	120
82.	Psychology of Colours : A Journey into the Mind's Palette	87			
83.	Nature In The Fight Against Cancer	89			

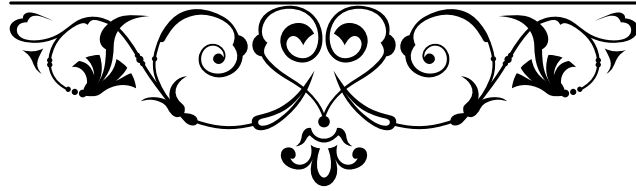
सौरभ : 2024-2025



सृजनात्मिका.....

हिंदी

खाण्ड




## सम्पादकीय

साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं उसका पथदर्शक भी है, और है नीर क्षीर विवेक वाला एक मानस 'हंस' जो बहते समाज नीर से अवांछित को अलग कर नवीन वांछित को ग्रहण कर नए समाज का निर्माण करता है। अतः साहित्य केवल वर्तमान की प्रस्तुति ही नहीं अपितु भविष्य का स्रष्टा भी है।

आज पश्चिमीकरण का प्रभाव सर्वत्र व्याप्त है। पश्चिम का प्रभाव पूर्णतया अनुचित नहीं है यह समय की मांग है, परन्तु हमारी अपनी एक समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा है, धरोहर है। पश्चिमी प्रभाव की अतिशयता से हमारे सांस्कृतिक मूल्य, हमारा व्यक्तित्व, हमारा आचरण निरन्तर अपनी गरिमा को खो रहा है। आज आवश्यकता है नूतन एवं पुरातन पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कारों एवं मान्यताओं में सामंजस्य स्थापित करने की। युवा छात्रशक्ति ही अपने शिक्षकों के सानिध्य में अपने पुरातन ज्ञान, संस्कृति एवं नूतनता तथा पाश्चात्य प्रभाव में सामंजस्य स्थापित कर सकती है। पत्रिक के इस अंक में इस प्रकार की रचनाओं को विशेष महत्त्व दिया गया है जो वर्तमान एवं पुरातन के सम्यक् समायोजन का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

साहित्य, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य की संगम यह पत्रिका सौरभ नवीन कलेवर में आपके समक्ष प्रस्तुत है। आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।



  
प्रो० सुनीता  
हिन्दी विभाग



## कढ़ी जो बहुत कुछ कह गयी

प्रो० निवेदिता मलिक  
प्राचार्या

मम्मी की कढ़ी गर्मी की....  
और सरसों का साग सर्दी का....  
वो मेहनतकश हाथ.....  
जो रुकना और थकना नहीं जानते थे.....  
असीम स्नेह एक मां का.....  
एक उन्मुक्त - सा रिश्ता माँ का....  
जिसमें ना कोई बंधन ना कोई शर्त  
बस है तो एक समर्पण अनन्त.....  
सृष्टि की इस जननी की डायरी पढ़ती हूँ तो.....  
मुझे उनकी गर्मी की कढ़ी याद आती है.....  
सर्दी का साग याद आता है....  
न जाने क्या था उस एक कटोरी कढ़ी में.....  
जिसे पड़ोसी भी मांग कर खाते थे....  
और उंगलियां चाट कर खाते थे.....  
अगली बार कब बनेगी इस बात का वादा लेकर खाते थे.....  
डायरी पढ़ते-पढ़ते याद आया....  
न जाने कब कलम उंगलियों की टकटक में बदल गई.....  
जाने कब मेरी वह कटोरी की कढ़ी पिज्जा में बदल गई.....  
अब वह पहले जैसी मां कहीं ढूँढने से मिलती तो होगी.....  
किसी उन्मुक्त भाव से जीना सिखाती तो होगी.....  
वो कहीं खिलखिलाती तो होगी.....  
अक्श अपना देखकर मुस्कुराती तो होगी.....  
उसके इन चन्द पन्नों में सिमटा है जहान.....  
कौन कहता है आसमां तक है जहान.....  
महसूस तो करें अगर.....  
हर कण में सिमटा है जहान ।.....



## वो लड़कियाँ

डॉ० पूनम लता सिंह  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
इंजिनियरिंग एवं पेंटिंग

अपनी पर जो आ जाएं,  
तो  
आंसू आँख से गिरने नहीं देतीं  
वो लड़कियाँ  
जिनको जमाना नाजुक बताता है  
उठा सकती हैं जो बोझ  
पूरे घर जमाने का,  
बिता दें जिंदगी पूरी,  
उलझे-उलझे से रिश्तों में  
बड़ा मजबूत होता है  
उनकी आत्मा का बल  
जो देता है उन्हें ताकत  
अन्तस में धधकने की,  
सुलगने की  
सारे ताप पीकर भी  
शीतल पवन सी बहने की ।



## भारतीय ज्ञान परम्परा

डॉ० कल्पना चौधरी  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
जन्तु विज्ञान विभाग

प्राचीन काल से चली आ रही  
भारतीय ज्ञान परम्परा,  
जिसमें वेद, ज्योतिष, दर्शन, संग  
उपनिषद्, आयुर्वेद, धर्मश्ररस्त्र भरा।  
भारतीय संस्कृति की समृद्धि  
और उसकी ज्ञान परम्परा,  
भाषाओं और साहित्य के द्वारा  
दे रही विश्व को योगदान बड़ा।  
साहित्य की विभिन्न विधाएँ  
कविता, थिा, नाटक, निबन्ध,  
भारतीय ज्ञान की अभिव्यक्ति का  
बिखेर रही चहुँ ओर रंग।  
तुलसीदास की रामचरितमानस  
भरी हुई नैतिकता से,  
भारतीय धर्म के मूल्य बताती  
प्रेम, त्याग, कर्तव्यनिष्ठ सिखाती।  
सूरदास और कबीर के दोहे  
भक्ति गीत और दोहों से,  
सामाजिक सुधार हैं लाते  
आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार कराते।  
प्रेमचंद की सभी कहानी  
बहुत ही सुन्दर सरल जुबानी,  
जनमानस के मन में रहती  
सामाजिक वास्तविकता कहतीं।  
सुमित्रानंदन पंत जी आए  
मनोवैज्ञानिक चिंतन लाए,  
रामधारी सिंह दिनकर आते  
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सुनाते।  
चलो आज हम कदम मिलाएं  
भारतीय ज्ञान परम्परा को बढ़ाएं,  
सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत बनाएं  
पाठ्यक्रम में इसको पढ़ाएं।



## मन की आँखें

हीना यादव  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
ड्राइंग एवं पेंटिंग

अक्सर हमने 'देखने' को सिर्फ देखने तक देखा है,  
एक बार बहती हवा को महसूस करके देखिए,  
फिजा में बिखरी है रौशनी, और खुशबुएँ  
खिलते हुए फूलों को सूँघकर देखिए।  
जिन्दा तो है कहने को हर शक्स यहाँ  
तिल-2 घटती इस खूबसूरत जिन्दगी का स्वाद चख  
कर देखिए।  
खुली आँखों से देखना भी क्या देखना  
एक बार आँखे बंद करके 'मन की आँखों' से देखिए।  
बंद आँखों से दिखते है हर वो ख्वाब  
जिन्हे हम पहले ही जी लेते है मन के समन्दर में,  
सोचा तो पाया, क्यों आँखें बंद होने पर मन का  
उजाला अन्दर भरने लगता है।  
जो धुंधला था, कुछ दबा सा, धीरे-2 उमरने लगता है,  
ख्वाब, एहसास, जज्बात और अनगिनत  
वो सारे ख्यालात, जो खुली आँखों से कभी नही दिखते।

## महक

रचना हरित  
लैब असिस्टेंट  
ड्राइंग एवं पेंटिंग

महक मेरे जज्बातों की  
दिन की हो या रातों की ये तो महक है  
बस मेरे जज्बातों की  
उड़ने दो दवाओं में, मेरे अरमानो के परिंदों को,  
अभी इनमें महक है बाकी मेरे पुरानी यादों की  
तिनका-तिनका करके महकाया है मैंने  
कुछ ऐसे अपने जज्बातो को सजाया है मैंने  
माना मोती हार की होती है कीमत  
मैंने अपनी मेहनत से खुद को अनमोल बनाया है।  
फर्क नहीं पड़ता मुझे, किसने क्या पाया है  
नायाब हूँ मैं जैसा ईश्वर ने मुझे बनाया  
मैंने तो खुद के आगे ही खुद का सर झुकाया है।  
माना जिन्दगी इम्तेहान बहुत लेती है।  
कभी हँसाती है कभी रुलाती है।  
फिर भी मेरे जज्बातों की महक  
मुझे खुद में महका जाती है।



## सेहत का राज मोटा अनाज

श्वेता त्यागी  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
गृह विज्ञान विभाग

सुखद स्वास्थ्य का यही आधार, करना होगा मोटे अनाज से प्यार।  
मोटा अनाज खाना छोड़ा, बीमारी से नाता जोड़ा ।  
दवाइयों के सहारे भूल गए जीवन पुरखों का,  
अगर खाओगे ज्वार, बाजरा, मक्का, नहीं लगेगा कभी बीमारी का धक्का।  
सुखद स्वास्थ्य का यही आधार, करना होगा मोटे अनाज से प्यार।  
बनाना है मजबूत हड्डी, रागी खाओ खेलो कबड्डी ।  
रागी ज्वार का बड़ा जोर, खून को कर देता प्योर।  
सुखद स्वास्थ्य का यही आधार, करना होगा मोटे अनाज से प्यार।  
मक्का, बाजार की निराली शान, किडनी लीवर में फुकेगी जान।  
मोटे अनाज में प्रोटीन भरपूर, कर देता कमजोरी को दूर ।  
सुखद स्वास्थ्य का यही आधार, करना होगा मोटे अनाज से प्यार।  
“सेहत का राज मोटा अनाज”



## अनवरत

डॉ० शुभम त्यागी  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
बी० एड० विभाग

हाथों के छाले और पैरों की फटी बिवाइयां  
द्योतक हैं कठिन परिश्रम के  
पूर्व आनंद हैं उस लक्ष्य की प्राप्ति का,  
जो हमने सोचा है...  
खुशी हैं उस ख्वाब की, जिसे हमने संजोया है.....  
कोई भी पाथेय, कोई भी आलंबन, कोई भी उत्प्रेरण,  
कोई भी अभिकर्मक  
सहायक होता है उस लक्ष्य के संधान का... .  
साथ ही, कोई भी अवरोध,  
कोई भी नकारात्मक अभिप्रेरणा  
कोई भी विघ्न, कोई भी स्तंभन,  
भी देते हैं साहस, ऊर्जा, चैतन्यता  
उस लक्ष्य को पूर्ण करने का,  
बस हम सकारात्मक हों....  
इसलिए मत सोचो और न ही रुको और चलते रहो,  
निरंतर, अनवरत, अविराम, सतत, निर्बाध  
“चरैवेति चरैवेति“ को साकार करते हुए.....  
क्योंकि तुम वंशज हो  
गार्गी के, घोषा के, अपाला के.....  
युद्ध स्वयं का ही स्वयं से, सार है सब कल्प का।  
ज्ञान का विस्तार ही हो, काम कुछ न अल्प का।  
अवरोध कितने ही मिलेंगे मार्ग में बस याद रखना,  
विकल्प कुछ होता नहीं मन में लिए संकल्प का।

## आजाद रहिए विचारों से, लेकिन बंधे रहिये संस्कारों से

श्रीमती नीरू बत्रा  
अतिथि प्रवक्ता

फूड साइंस एण्ड क्वालिटी कंट्रोल विभाग

मन को उड़ान दो, विचारों को बहने दो,  
असीम आकाश में, खुले पंखों को रहने दो।  
हर कल्पना को, अपनी दिशा में उड़ने दो,  
पर संस्कारों की जड़ों से जुड़े रहने दो।  
स्वतन्त्र विचारों का समंदर हो,  
हर तरंग में नवीनता का आनन्द हो।  
मन की मर्जी से बहने का आनन्द हो,  
पर संस्कारों की मिट्टी से मिलन का अनुबंध हो।।  
कल्पनाओं के पंख लगाकर, उन्मुक्त गगन में विचरें,  
हर सपने को साकार करने का साहस मन में भरें।  
पर जो शिक्षा पायी है, जो मूल्य जीवन ने सिखाये,  
उनकी डोरी से बँधे रहें, उन्हें सदा अपनायें ।  
स्वतन्त्रता और संस्कारों का मेल,  
दोनों को साथ रखना ही सच्चा खेल।  
आजाद विचारों की शक्ति को अपनायें,  
पर संस्कारों की मिठास से जीवन को सजायें।



## माँ बाप का प्यार

इंशा  
विजिटिंग फैकल्टी  
ड्राइंग एण्ड पेंटिंग डिपार्टमेंट

हर माँ बाप अपनी औलाद से बहुत  
प्यार करते हैं।.....  
मगर प्यार का मतलब सिर्फ ख्वाहिशें  
पूरी करना और उनकी हर बात  
मानना नहीं होता, बल्कि प्यार का  
मतलब है उन्हें सही-गलत का फर्क  
समझाना और सही-गलत में चुनने  
की आजादी देना।  
यही प्यार मेरे माँ-बाप ने मुझसे किया है।.....  
उन्होंने मेरी हर बात मानी है, लेकिन  
साथ ही अपनी बात मनवाना भी  
सिखाया है। उन्होंने मेरी सारी ख्वाहिशें  
पूरी की हैं, और अपनी मर्जी करने  
की आजादी भी दी है उन्होंने मुझ  
पर विश्वास किया है- जो हर माँ-बाप  
को अपनी औलाद पर करना चाहिए।  
अपनी औलाद पर विश्वास ही माँ-बाप  
का सबसे सच्चा प्यार होता है.....

## असमर्थता

वंशिका शर्मा  
बी०ए० तृतीय वर्ष

पत्ता पत्ता दिन मुरझाया,  
फूल फूल मुरझायी रात  
चर्चाओं के दौर चले,  
पर रही अधूरी अपनी बात  
'मैं' और 'हम' के बीच फासला,  
शर्तों से कब मिट पाया,  
प्यार कहा तक बच पाया,  
जब जीत हार की आई बात,  
ऊंचा पद पा लिया सिफारिश से,  
रिश्तेदारी के चलते,  
टिकी रही नीची सतह पर,  
किंतु परंतु की औकात,  
कड़वे सच का घूंट पीकर,  
जैसे तैसे आए हैं,  
शहरों से खाली लोटे को,  
क्या दे पाएगा देहात,  
अक्सर कोई भीगा बाहर,  
कोई अंदर से भीगा  
वर्षा से सब भीगा लेकिन,  
एक ना हो पाई बरसात।



## आतंकवाद का अंत सुनिश्चित

ईशा चौधरी  
बी०एड० विभाग

हर तन में देशभक्ति का संचार होना चाहिए,  
विश्व से आतंकवाद का संहार होना चाहिए।  
आज पूरे विश्व में मंडरा रहा आतंक का साया,  
न जाने उन दुष्टों ने, कितने मासूमों को मार गिराया।  
शहीदों की शहादत के प्रति आभार होना चाहिए,  
विश्व से आतंकवाद का संहार होना चाहिए।  
हिंदु-मुस्लिम भाई-भाई का नारा सिद्ध न हो पाया,  
भारत-पाकिस्तान में बँटा देश और आतंक पनप आया।  
हर आत्मा में भाईचारा विद्यमान होना चाहिए,  
विश्व से आतंकवाद का संहार होना चाहिए।  
कश्मीर को पाने की चाह में, लादेन ने पैतरा अपनाया,  
आतंक का कट्टरपंथ फैला, भारत पर वार कराया,  
धर्म के आधार पर न ये अपराध होना चाहिए,  
विश्व से आतंकवाद का संहार होना चाहिए।  
शहीद के मृत शव को जब उसके घर पहुंचाया,  
माँ की आँखों से अश्रु का दरिया बह आया,  
उस लाचार माँ के हर आँसू का हिसाब होना चाहिए,  
विश्व से आतंकवाद का संहार होना चाहिए।



## दहेज- एक कुप्रथा

साक्षी अहलावत  
बी०ए० द्वितीय वर्ष

कितने देखे उसने सपने  
संग पिया के अपने  
बनी दुल्हन वो चहकने  
आई ससुराल में रमने ।  
छोड़ आई वो घर अपना  
किसी और का बसाने अंगना,  
भूली अपने अम्मा और अन्ना  
पति हो देवता ऐसी करी कल्पना ॥  
हैसियत से भी दिया ज्यादा  
ढूँढ़ा एक ऐसा शहजादा  
पर निकला राक्षस वो साहिबजादा  
ना ही रखी कोई लोक मर्यादा ।  
दहेज के लालची दरिंदो ने  
कितना मारा बेटी को उसने  
घर में नहीं दिया घुसने  
और जलाकर मार दिया सबने ॥  
जलती है जिसकी बेटी  
वो माँ सिसक सिसक कर रोती  
काश! न होती ये दहेज की रीत  
तो आज वो बिटिया जीवित होती।



## शक्ति का संकल्प ऑपरेशन सिंदूर

नेहा आर्या

शोधछात्रा : गृह विज्ञान विभाग

मैं अबला नादान नहीं हूँ,  
दबी हुई कोई पहचान नहीं हूँ।  
दिलों में बस जाए वह मोहब्बत हूँ,  
कभी बहन कभी ममता की मूरत हूँ।  
सिन्दूर की रेखा नहीं बस सजावट थी,  
वह प्रतिज्ञा थी एक जंग की हिम्मत थी।  
सामाजिकता की सीमाओं को लाँघ आई,  
मैंने अपने वजूद की लौ खुद ही जलाई।  
हिंदुस्तान की बेटी ने बांधी कमर,  
जहां हर गूंज बनी एक नई अमर।  
दुश्मन की सीमा पर जो तूफान उठा,  
वह नारी के अदम्य साहस से ही थम उठा।  
ये ऑपरेशन सिन्दूर था, एक जवाब  
न अबला न बेचारी हूँ, आज के युग की नारी हूँ।  
वो जहां खड़ी हुई क्रांति वहीं से शुरू हुई,  
न झुकी न रुकी युद्ध का रूप बन उठी।  
जब एकता के स्वर में वीरता जगी,  
तो दुश्मन की हर चाल खुद डर भागी।  
मैं अब नादान नहीं हूँ, कोई दबी हुई पहचान नहीं हूँ।

## खुद को संवारने की बारी

चारु

शोधछात्रा

सुन नारी,  
अपने परिवार को संवारने में तूने पूरी जिंदगी निकाली,  
कब आयेगी तेरी खुद को संवारने की बारी?  
कब तू तौलिये के नीचे से उन वस्त्रों को निकालेगी,  
जिनको छुपाने की नहीं धूप लगने की जरूरत है।  
कब तक तू कागज के अखबारों में लपेट कर सेनेट्री  
नैपकिन्स लायेगी,  
कब तक छुपायेगी महीने के वो 5 दिनों तक रहने  
वाली परेशानी,  
यहाँ तेरी परवाह कोई नहीं करेगा, कोई तेरी दिक्कत  
परेशानी नहीं पूछेगा,  
अब तू ही सबको बता की खून की चार बूंदें तुझे हर  
महिने अपिवत्र नहीं बना सकती।  
कुछ समय अपने लिए लाया कर, समाज में हर बात  
खुल कर बताया कर।  
सुन नारी !  
अब तू खुद ला खुद को संवारने की बारी।



## जीवन का लक्ष्य

सना  
बी०ए० द्वितीय वर्ष

वह जीवन भी क्या जीवन है  
जिसमें आशा का निर नहीं  
पथ पर आगे बढ़ाना है क्या  
जब लक्ष्य के लिए अधीर नहीं

जीवन की कठिन परीक्षा में  
आशा ही एक सफलता है  
जीवन पथ पर आगे बढ़ना  
यही तो जीवन की सुंदरता है

खुद के लिए जिए तो क्या जिए  
कभी औरों के लिए जीना सीखो  
पथिक के पथ प्रदर्शक बनकर  
सबको राह दिखाना सीखो

द्वेष दम्भ और मन को अप्रसन्नता  
मन से दूर भागो तुम  
हृदय की प्रशंसा ही जीवन है  
इसको सार बनाओ तुम



## मन की आवाज

लायबा  
एम०ए० (समाजशास्त्र विभाग)

इतना सा बीज थी मैं कली बनने भी नहीं दिया।  
कली बनी तो फूल खिलने भी नहीं दिया ॥  
इस समाज ने मुझे जीने भी नहीं दिया ।  
इस समाज ने मुझे जीने भी नहीं दिया ।

कुछ लोगों ने कहा लड़की है, नदी में बहा दो ।  
कुछ ने कहा लड़की है मिट्टी में दबा दो ॥  
कुछ ने कहा लड़की है जिन्दा जला दो ।  
इस समाज ने मुझे जीने भी नहीं दिया ॥

पर मेरी माँ ने कहा, पर मेरी माँ ने कहा ।  
जीने दो मेरी कली को खिलने दो ॥  
खिलेगी यह कली फूल बनकर रोशन करेगी जहाँ को।  
इस समाज ने मुझे जीने भी नहीं दिया ॥

मेरी माँ की नहीं सुनी लोगो ने  
दे दिया मौत के मुँह में मुझे ।  
रो-रोकर आँखे लाल कर ली माँ ।  
कलेजे में ठण्डक पहुँच गयी लोगों के ॥

इस समाज ने मुझे जीने भी नहीं दिया ।  
इस समाज ने मुझे जीने भी नहीं दिया ॥



## वीर जवानों सा ना कोई

काजल  
एन०सी०सी० कैडेट

“वीर जवानों सा ना कोई  
ना ही कोई हो पाया है,”  
अपनी इस धरती माँ की रक्षा की खातिर  
वीरों ने मौत को गले लगाया है,  
क्या भूल गए अब हम उनको  
जिन्होंने ये आजादी का परचम लहराया है,  
“वीर जवानों सा ना कोई  
ना ही कोई हो पाया है,”  
झुक गए दुश्मन भी, जब हौसला उनका देख लिया,  
थे तो वो पावन धरती पर,  
जहाँ बात आए रक्षा पर तो,  
रानी लक्ष्मी बाई जैसी वीरांगनाओं का भी हौसला देख लिया,  
करते है बोर्डर पर रक्षा सैनिक तभी चैन की सांस हम ले पाते हैं  
देकर जान भी अपनी, अपना फर्ज निभाते हैं।  
बढ़ चला देश आगे जिस पर अब,  
वो वीरों ने सरताज सजाया है, कभी सोता था जो माँ के आँचल में,  
आज वक्त ने रुख मोड़ दिया,  
सो गया वो उस आँचल में,  
जो धरती माँ का आँचल कहलाया है,  
वीर जवानों सा ना कोई हो पाया है  
हम भी ऐसा बनेंगे जो वीरों सा कहलाया है,  
यू ही नहीं आया नाम पन्नों पर उनका,  
खून से इतिहास रचाया है  
ऐसे ही वो मेजर संदीप वीर जवान थे  
जो देश की रक्षा की खातिर जान की बाजी खेल गये  
जब तक साँस चली दुश्मन पर भारी  
फिर दुश्मन की गोली झेल गये।  
वीर जवानों सा ना कोई ना ही कोई हो पाया है।



## फौजी हमारे देश की शान

समीहा  
एन०सी०सी० कैडेट

यूँ तो सरहद पर खड़े हैं कुछ ऐसे शख्स,  
जिन्हें नहीं है अपनी जान की फिक्र ।  
करके खुद को वतन के हवाले,  
लगाते हैं यह तो सिर्फ भारत माँ के नारे ।  
गंवाई जान, कराकर अपनी धरती की दुश्मनों से रिहाई,  
गर्म लपटें चाहे हो सर्द हवाएं,  
वो भी खुद को बेबस पाएँ रास्ते में इनके टिक ना  
पाएँ,  
दिल में मुकाम करते हर पल भारत माँ को प्रणाम।  
इनकी हर साँस में तिरंगा लहराता है,  
दुश्मन भी इनके सामने टिक नहीं पाता है।  
यूँ तो लोगों ने इन पर अनेक बार प्रश्न चिन्ह लगाया  
है,  
पर हर दम इन्होंने अपनी जान देकर देश का सम्मान  
बचाया है  
चादें सितारे भी गाते हैं इनके गुणगान,  
क्योंकि कोई नहीं हैं इन सा बलवान ।  
ये तो नहीं है कोई आम इंसान,  
हैं ये फौजी हमारे देश की जान ।



## भारत माता की जान

आकांक्षा  
एन०सी०सी० कैडेट

भारत माता के शीश मुकुट की शान हूँ मैं,  
करोड़ों भारतीयों का अभिमान हूँ मैं।  
वैसे तो बहुत दयावान हूँ मैं,  
पर दुश्मन की मौत का सामान हूँ मैं।  
देश का वीर जवान हूँ मैं,  
एक माँ से दूर हूँ तो एक माँ के पास हूँ मैं।  
हर देशवासी की सुरक्षित रहने की आस हूँ मैं,  
दुश्मन के दिल में भरता त्रास हूँ मैं।  
भारत माँ के चरणों में शीश नवाता एक दास हूँ मैं,  
दुश्मन का विफल करता हर प्रयास हूँ मैं।  
हर एक भारतीय का अखण्ड विश्वास हूँ मैं,  
बस तू रो मत माँ, दूर होकर भी तेरे पास हूँ मैं।  
जानता हूँ तेरे लिए सबसे खास हूँ मैं,  
माँ बस उदास ना हो मैं वापिस जरूर आऊँगा।  
तुझसे किया जो वादा उसे निभाऊँगा  
जिंदा ना सही तिरंगे में लिपटा लाया जाऊँगा,  
पर वादा है तुझसे मैं वापिस जरूर आऊँगा।



## दो किनारे

साक्षी अहलावत  
बी०एड० प्रथम वर्ष

औरत खूटे से बंधी एक डोर है  
आदमी आकाश में उड़ता आजाद पंछी  
इन दोनों का मेल कराओगे कैसे ।  
आपसी तालमेल बिठाओगे कैसे ॥

औरत एक रूढ़िवादी परम्परा में बंधी चिरय्या  
आदमी एक आजाद सोच का परिंदा  
इन दोनों का मेल कराओगे कैसे।  
आपसी तालमेल बिठाओगे कैसे ॥

औरत एक उफनती हुई नदी पर बंधी पुल के समान  
आदमी कल कल-कल बहता सागर के समान  
इन दोनों का मेल कराओगे कैसे  
आपसी तालमेल बिठाओगे कैसे ॥

दोनों नदी के दो के दो किनारों से हो गये,  
जो न दूर जा सके और न मिल सके।

## आत्मनिर्भर भारत

प्रियंका  
बी०ए० प्रथम वर्ष

आत्मनिर्भर भारत का अब  
हमें आगाज करना है  
जिम्मेदारियों का अपनी अब हमें  
एहसास करना है  
एक जुट होकर अब हमें  
सब संकटों से लड़ना है  
हाँ अब मेरे भारत को आत्मनिर्भर  
बनाना है, सारी गलतियाँ भूल कर,  
अर्थव्यवस्था को सुधारना है

बार फिर से मेरे देश को  
सोने की चिड़ियाँ बनाना है,  
कमजोर मनो में फिर से विश्वास  
भरना है, हो जाए हम खुद पर निर्भर  
अब ऐसा काम करना है,  
इस सपने को हमारे अब हमें  
आगे बढ़ाना है साथ मिल कर,  
हाथ पकड़कर सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ना है,  
अब हमें आत्मनिर्भर का सपना साकार  
करना है।

## देश भक्ति

खुशी गौतम  
बी०ए० द्वितीय वर्ष

सरहद पे सिर जो कटा गये हैं,  
पहचान अपनी बना वो गये हैं ॥.....  
फक्र है माँओ को बेटों पर ऐसे,  
वतन के लिये काम आ जो गये है ।.....

आस्ती के साँपों का फन जो कुचलते,  
मंजिल तक रास्ता बना जो गये हैं ।.....  
फना हो गये जो खाके - वतन पर,  
तिरंगा फलक पर वो लहरा गये है।

मकसद था जिनका हिफाजत वतन की,  
खिदमत से हस्ती मिटा वो गये हैं ।  
ता-उम्र जिन्दा है कुर्बानी उनकी,  
सागर दिलों में समा गये हैं ।.....

मैं यह प्रमाणित करती हूँ, की  
यह कविता मैंने स्वयं लिखी है।



## रू-ब-रू

डॉ० गरिमा कुमारी  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
झाड़ंग एवं पेंटिंग

ऐ जिंदगी हकीकत से रू-ब-रू ना करा,  
अभी बहकावे में रहने दे।  
फसाना अभी बाकी है, अफसाना अभी अधूरा सा।  
रूह से लिपटा ये व्यर्थ जो आशियाना है,  
कुछ ढल जाना है, कुछ जल जाना है।  
जिंदगी की इन उमड़ती लहरों में,  
अभी थोड़ा बह जाने दे।  
ऐ जिंदगी हकीकत से रू-ब-रू ना करा,  
अभी बहकावे में रहने दे।  
ना जगा इतनी जल्दी से जिंदगी मुझे,  
तेरे इम्तिहान अभी बाकी है बहुत।  
थोड़ी मोहलत दे, थोड़ी राहत दे  
कुछ देर और मुझे ख्वाबों में रहने दे।  
ऐ जिंदगी हकीकत से रू-ब-रू ना करा,  
अभी बहकावे में रहने दे।  
दिल चाहता है कुछ और बहानों की तलाश हो,  
कुछ अधूरे फसानों में थोड़ी मिठास हो ।  
समय आएगा जब सामना कर ही लेंगे,  
पर अभी मुझे सपनों में रह जाने दे।  
ऐ जिंदगी हकीकत से रू-ब-रू ना करा,  
अभी बहकावे में रहने दे ।

## एन०सी०सी० कैडेट का योगदान

ऋषिका  
बी०ए० तृतीय वर्ष

“जब जब काल ने पृथ्वी पर मृत्यु का गीत सुनाया है।  
बचपन ने क्रीडा त्यागी बूढ़ों पर यौवन छाया है।  
विकट कोरोना की यह क्षण सदियों सदियों पर भारी है।  
श्वासों - श्वासों से जीवन ने द्वंद अंत से हारी है।  
उस क्षण देश के युवाओं ने बढ़-बढ़ कर अभियान किया।  
एन०सी०सी० आगे आयी एक्स एन०सी०सी० योगदान  
किया।  
लॉकडाउन के दिनों में हमने अनुशासन सिखलाया है।  
दो गज दूरी मारक जरूरी जन-जन को बतलाया है।  
मंदिर-मस्जिद, हिन्दू-मुस्लिम उन दिनों भी बहुत हुआ।  
जगह-जगह दंगे भरके कहीं आग लगी कहीं उठा धुँआ।  
हम सब भारतीय हैं नारा फिर मिल कर सबने गान किया।  
एन०सी०सी० आगे आयी एक्स एन०सी०सी० योगदान  
दिया।  
हमने बतलाया सबको गर युद्ध देश मे छाता है।  
28 किलो भार पहन कर वीर समर में जाता है।  
हे! मेरे देश के जन गण तुम देश के अंदर रार करो।  
एक मास्क का केवल वहन करो सेनेटाइजर से प्रहार करो  
जब-जब देश ने की पुकार प्रतिउत्तर में हमने जान दिया।  
एन०सी०सी० आगे आयी एक्स एन०सी०सी० योगदान  
दिया ।



## मैं एक मीडिया हूँ

प्रेरणा  
बी०ए० द्वितीय वर्ष

मैं एक मीडिया हूँ जो संचालन का कार्य करता हूँ ।  
पल पल की खबरों को घर-घर पहुँचाने की कोशिश करता हूँ  
मैं एक मीडिया हूँ जो संचालन का कार्य करता हूँ ।  
मुझ पर लोगों का पूरा विश्वास है जिसको  
मैं बनाए रखने की कोशिश करता हूँ  
मैं एक मीडिया हूँ जो संचालन का कार्य करता हूँ ।  
लोगों के सवालों के जवाब मांगने की कोशिश करता हूँ  
समाज की घटनाओं से लोगों को रू-ब-रू कराने की कोशिश करता हूँ  
मैं एक मीडिया हूँ जो संचालन का कार्य करता हूँ ।  
कुछ खबरों में जान जाने का डर होते हुए भी  
उन खबरों का आप तक पहुँचाने की कोशिश करता हूँ  
मैं एक मीडिया हूँ जो संचालन का कार्य करता हूँ ।  
मेरा कार्य लोगों को व्यापार का कार्य लगता है  
मैं लोगों को सच्चाई दिखाने की कोशिश करता हूँ  
मैं एक मीडिया हूँ जो संचालन का कार्य करता हूँ ।

## कॉलेज की यादें

रिया कुमारी  
षष्ठ सेमेस्टर

कुछ लम्हे थे कुछ ख्वाहिशें थी।  
स्कूल की टेबल कुर्सी थी,  
जहां हमने पढ़ी कायदों की रवायतें थीं  
कुछ हम बड़े बड़े से तो थे,  
पर हरकतें अभी भी कुछ बचकानी थी,  
कुछ अनजाने से दोस्त बने थे हमारे,  
पर आदतें कुछ जानी पहचानी थी,  
कुछ नए रास्तों पर,

पुरानी गलियों की कुछ यादें सुनानी थी !  
कुछ लम्हें ये कुछ ख्वाहिशें थी !  
कुछ कर गुजरने की चाहतें  
और जुनून से भरी कहानियाँ थी।  
कुछ जिक्र था तुम्हारा उन सन्नाटों मे,  
जहां छुपायीं हमने अपनी परेशानियाँ थी।  
कुछ लम्हें थे कुछ ख्वाहिशें थी ।



## स्वतंत्रता की छांव में हमने खुशियाँ बिखेरी थी

शगुन सिंह  
बी०ए० तृतीय वर्ष

स्वतंत्रता की छाँव में हमने जो खुशियाँ बिखेरी थी,  
भारत माँ की अंगदान पर दुश्मन ने आँखें घेरी थी!  
पश्चिम से पूर्व में रक्त रक्त का जो कतरा था,  
मासूमों की जिंदगियों पर बढ़ता पग-पग पर खतरा था!  
सोये ओढकर चादर जो सुबह निराली होने को,  
किए अपनों पर अपनों ने वार बेशक बदहाली होने को!  
दिसम्बर तीन वो काली रात लोगेवाला पर खतरा था,  
मेजर कुलदीप के साहस ने दुश्मन के टैंको को कतरा था!  
ध्वस्त करके टैंको को मेजर ने सम्मान बढ़ाया था,  
हंटर ने भी लालिमा मे तिरंगा ऊँचा फहराया था!  
बंगाल की खाड़ी मे खड़ा था विक्रांत शानों में,  
गाजी को भी किया ढेर किया राजपूत के निशानों ने !  
माँ भारती के सपूत बढे हर मानस को न्याय दिलाने को,  
मुक्ति वाहिनी का साथ दिया फिर से उजियारा आने को!  
इकहत्तर में सातवाँ बेडा चला था हमें ललकारने को,  
मित्र देश का बढा था आगे चालीसवाँ बेडा साथ निभाने को!  
निर्मलजीत का वो सन्देश दिया नियाली को आदेश,  
आत्मसमर्पण किया उन्होंने बन गया एक बांग्लादेश !  
इकहत्तर से इक्कीस तक और युगों युगों तक गाथा दोहरायेगे,  
स्वर्णिम विजय वर्ष में हम माँ भारती का सम्मान बढ़ाएँगे!

## सैनिक

अनू  
एन०सी०सी० कैडेट

सर्दी हो या गर्मी, चाहे हो बरसात  
देश की रक्षा की खातिर, सैनिक सीमा पर तैनात  
झुकने नहीं देते तिरंगे को, देते है अपना बलिदान  
इंसानियत को फैलाकर करते हैं नव निर्माण !  
जब दुश्मन ललकारते है। तोपों और गोलों से,  
हमारी सैनिकों ने जवान दिया, अंगारी के शोलों से  
जो लड़ते है देश के खातिर, करते हैं हम उनका गुणगान  
नाज है उन पर सबको, जो कहते हैं मेरा भारत महान  
ऋणी हैं हम उन वीरों के, जिन्होंने त्यागे अपने प्राण  
अपनी जान पर खेलकर जिन्होंने, बढ़ाया अपने देश  
का मान।  
नहीं लड़ना चाहते हम, आखिर दुश्मन भी तो है इंसान  
पर भूल गये हैं वे इंसानियत का कोई निशान।  
खुशनसीब हैं वे माता-पिता जिनके पुत्र बने देश की  
शान।  
अपने शरीर का कतरा-कतरा, कर दिया जिन्होंने देश  
के लिए कुर्बान।  
बहुत सह चुके, बहुत है खोया, अब ना सहेंगे।  
हिन्दुस्तान भारत के सैनिक तुझे सलाम



## कविता

अर्पिता वर्मा  
बी०ए० तृतीय वर्ष

जहाँ करुणा सी गंगा माँ, खुद वीरता की अवतारी माँ,  
शौर्य की संगिनी जो, स्वयं भारती हो प्यारी माँ  
जहाँ आँगन की तुलसी हो माँ, जो वीर सपूतों की  
क्यारी माँ  
जो दुखों के अंधकार से जन्मी थी, वो आजादी भी  
नारी माँ ॥

उस पूजित पावन मिट्टी में, खुद 'रक्षक' बन कटारी माँ,  
मणिपुरी जो आह निकली "प्रज्वल" महल में कराह माँ  
राजनीति के खेल में उलझी, हर और है अस्मित हारी माँ  
वो चीख अभागी तेरी धरा पर, पर्वतों से भी भारी माँ।

अब राह न तक "सपूतों" की, तू हाथ बना बलधारी माँ  
तेरे हाथों में शक्ति हो, तेरी बाहों में बहारी माँ  
तू आग जमा, बड़ा भाग्य बना, लिख दे तू सुनहरी  
कहानी माँ,  
इतिहास गवाह था, गवाह बनेगा, भर आँख ज्वाला,  
बन काली सी प्रहारी माँ  
याद दिला तू भारती है, अडिग, अचल, ओजस्वी नारी  
माँ ॥



## आत्मनिर्भर भारत

सुनीता मुण्डेफी  
बी०ए० प्रथम वर्ष

कैसे बनेगा आत्मनिर्भर भारत  
सोचो और विचार करो,  
सपना मत बनने दो इसको,  
देखो और साकार करो ।

भ्रष्टाचार और बलात्कार का  
पहले तुम निदान करो,  
आत्मनिर्भर भारत बनने में  
तुम भी कुछ बलिदान करो।

ये माटी बहुत कुछ दे जाती है  
तुम भी कुछ उपकार करो  
स्व उद्यम को प्रोत्साहन कर  
तुम भी आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ो ॥

जब आत्मनिर्भर बनेगा भारत  
तब हम भी आत्मनिर्भर बन जाएंगे ॥  
देश को उन्नति की राह पर  
हम भी अग्रसर हो जाएंगे ॥

तब भारत देश हमारा एक दिन  
आत्मनिर्भर देश कहलाएगा ॥  
इस आत्मनिर्भर भारत का एक दिन  
पूरे विश्व में परचम लहराएगा ॥



## मेरा मेरठ

—निक्की  
बी०ए० तृतीय वर्ष

वो औघड़नाथ मंदिर की शान  
वो चौपलें का जाम ।  
वो मेरठ की हवा  
वो राधे चाट वाले की टिक्की का तवा ।  
वो नौचन्दी की शाम  
जो भी दोस्तों के नाम ।  
वो कॉलिज में मस्ती  
वो दोस्तो की बस्ती ।  
वो दयाराम सैनी के समोसे  
वो रमेश के डोसे ।  
वो कॉलिज का ग्राउंड  
वो लालकुर्ती का प्राउंड ।  
वो मेरठ की गलियाँ  
वो आर०जी० पी०जी० की कलियाँ ।  
वो कचहरी की सड़कें  
जहाँ कितनों के दिल धड़के ।  
वे मस्ती शरारतें  
वो दोस्तों की बातें ।  
ऐसी ही कुछ है  
हमारे मेरठ की यादें ।



## मंजिल मेरी

—निष्ठा भारद्वाज  
बी०ए० द्वितीय वर्ष

सोच रही थी मैं, जीवन में भी कितनी उलझ है,  
मन कितना औझल हैं, न राह की पहचान है,  
न मंजिल की समझ है,  
तभी मंजिल ने मुझसे कहा इतनी भी क्या मुसीबत है।  
ढूँढ नहीं सकती, मुझे तो जिंदगी जीने का भी  
क्या मललब है?  
माना कि थोड़ी दूर हूँ, लेकिन रास्ता तो मेरा भी है।  
कटीला, पथरीला, ऊबड-खाबड है, लेकिन पहुँचना  
नामुमकिन तो नहीं है।  
तभी मंजिल से पूछा मैंने, इतना भी तुझे  
क्या घमण्ड है, तू तो है ही स्वार्थी, किसी  
के पास तो किसी से दूर है।  
किसी के लिए चिकनी, तो किसी के लिए खुरदरी है,  
फिर भी तुझे पाने की जिद तो है ही,  
किस्मत का खेल है समय का थेड़ा फेर है,  
जरा सबर कर थेड़ी क्योंकि लाठी अभी  
मेरी कमजोर है।



## भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ

भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ (Indian Knowledge Systems (IKS) भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) द्वारा स्थापित एक नवाचारी इकाई है। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणालियों के सभी पहलुओं पर अंतर्विषयी अनुसंधान को बढ़ावा देना, उनका संरक्षण करना और आगे के अनुसंधान तथा सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए उनका प्रसार करना है। यह प्रकोष्ठ कला और साहित्य, कृषि, आधारभूत विज्ञान, इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी, वास्तुकला, प्रबंधन, अर्थशास्त्र आदि क्षेत्रों में देश की समृद्ध विरासत और पारंपरिक ज्ञान को फैलाने में सक्रिय भूमिका निभाता है। IKS का लक्ष्य प्राचीन भारतीय ज्ञान को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करना है, ताकि युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ सके और वैश्वक चुनौतियों का सामना कर सके। यह प्रकोष्ठ विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में सेल स्थापित करके कार्यशालाओं, व्याख्यानों, अनुसंधान परियोजनाओं और पाठ्यक्रमों के माध्यम से भारतीय ज्ञान को मुख्यधारा में लाने का प्रयास करता है।

### रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ में भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ :

रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ (उत्तर प्रदेश) में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) सेल की स्थापना IKS की मुख्य पहल के अंतर्गत की गई है। यह कॉलेज उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख महिला शिक्षा संस्थान है, जो 1929 में स्थापित हुआ और NAAC द्वारा 'B+' ग्रेड से मान्यता प्राप्त है। भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणालियों को कॉलेज की शिक्षा और अनुसंधान प्रणाली में एकीकृत करना है, ताकि आधुनिक संदर्भ में उन्हें पुनर्जीवित और मुख्यधारा में लाया जा सके। सेल की प्रभारी प्रो० पूनम लखनपाल हैं। यह प्रकोष्ठ छात्राओं को प्राचीन भारतीय ज्ञान, जैसे वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद, साहित्य और दर्शन से परिचित कराने के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित करता है। प्रकोष्ठ कॉलेज की लाइब्रेरी, IQAC और इनोवेशन सेल के साथ मिलकर कार्य करता है और इसका फोकस छात्राओं में सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाना है।

इस वर्ष (2025) IKS सेल ने भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित कई कार्यक्रम आयोजित किए हैं, जो छात्राओं को पारंपरिक ज्ञान से जोड़ने और आधुनिक शिक्षा में उसके महत्व को समझाने पर केंद्रित हैं। इन कार्यक्रमों में व्याख्यान, कार्यशालाएं, प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम और सांस्कृतिक गतिविधियां शामिल हैं। कुछ प्रमुख कार्यक्रम निम्नलिखित हैं—

### भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रमों की सूची—

1. अतिथि व्याख्यान “ज्ञान विज्ञान के आदी स्रोत : वेद”, वक्ता- प्रो० सोगदेव शान्तनु, दिनांक-13.07.2024
2. अतिथि व्याख्यान “भारतीय ज्ञान परम्परा : नीडोनॉमिक्स और अनुगीता पर आधारित गीता”, वक्ता- प्रो० एम० एम० गोयल, दिनांक : 19.07.2024
3. “कार्यशाला कला पर”, चित्रकला विभाग द्वारा, दिनांक : 22.07.2024 से 24.07.2024
4. अतिथि व्याख्यान “वेदों में शिक्षा प्रणाली”, वक्ता- प्रो० वाचस्पति मिश्रा, दिनांक : 05.08.2024
5. सूक्ति लेखन प्रतियोगिता, दिनांक : 06.08.2024
6. ‘संस्कृति के लिए एक पेड़ वृक्षारोपण’, दिनांक : 08.08.2024
7. ‘देशभक्ति का उत्सव (स्वतन्त्रता दिवस)’, दिनांक : 09.08.2024

8. 'निबन्ध प्रतियोगिता : भारतीय ज्ञान', दिनांक : 20.08.2024
9. 'साँझी सृजन : परम्परा का स्पर्श', दिनांक - 28.09.2024
10. 'स्वर तरंगिणी', दिनांक : 16.10.2024
11. 'हरिवंशपुराण पर आधारित वाद-विवाद प्रतियोगिता, दिनांक : 03.11.2024 से 09.11.2024
12. 'कार्यशाला- श्रीराम का जीवन-चरित्र', दिनांक : 05.11.2024
13. 'व्याख्यान श्रृंखला : संस्कृत और अंग्रेजी', संस्कृत और अंग्रेजी विभाग, दिनांक : 01.12.2024 से 06.12.2024
14. 'भारतीय ज्ञान परम्परा एवं सांस्कृतिक विरासत के अन्तर्गत पर्यावरणीय स्थिरता', दिनांक- 04.12.2024
15. 'टएनो-मेडिसिनल प्लान्ट', दिनांक : 09.12.2024
16. 'हर्बल उद्यमिता कल्याण : व्यवसाय', पादप संरक्षण सोसाइटी, दिनांक : 10.12.2024 से 14.12.2024.
17. 'गीता जयंती महोत्सव', दिनांक : 12.12.2024
18. 'प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के लिए वैदिक गणित का महत्व', दिनांक : 22.12.2024
19. 'भारतीय ज्ञान परम्परा में संस्कृत काव्यशास्त्रियों का अवदान', वक्ता- प्रो० मधु श्रीवास्तव, दिनांक : 28.01.2025
20. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं श्रीमद्भगवद्गीता, वक्ता, डॉ० अर्चना विश्णोई एवं श्री वी०के० आर्य, दिनांक : 06.02.2025
21. आध्यात्मिक कला यात्रा : महाकुंभ और साधु', दिनांक : 13.02.2025
22. श्रीमद्भगवद्गीता एवं तनाव प्रबन्धन, 'वक्ता- प्रो० रुची गुप्ता, दिनांक : 30.05.2025
23. 'बौद्धिक संपदा अधिकार और पेड़', वक्ता प्रो० प्रभात सिंह, दिनांक : 30.05.2025



महाविद्यालय पुस्तकालय में भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बन्धित पुस्तकों का खण्ड

## लघु कथा

### सकारात्मकता : सफलता के लिए धैर्य का होना अत्यंत आवश्यक

डॉ० नलिनी द्विवेदी  
असिस्टेंट प्रोफेसर

कुछ लोग मेहनत के बाद भी सफल नहीं हो पाते हैं और फिर निराशा बढ़ने लगती है। ऐसी स्थिति में सकारात्मकता बनाए रखनी चाहिए।

धैर्य के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी सफलता देर से मिलती है। इस संबंध में गौतम बुद्ध से जुड़ा एक प्रसंग प्रचलित है, एक बार गौतम बुद्ध अपने शिष्यों के साथ किसी गांव में उपदेश देने जा रहे थे। गांव पहुंचने से पहले रास्ते में जगह-जगह बहुत सारे गड्ढे खुदे हुए दिखाई दिए। एक शिष्य ने अपने गुरु से पूछा, एक साथ इतने सारे गड्ढे किसने और क्यों खोदे हैं? गौतम बुद्ध ने जवाब दिया कि किसी व्यक्ति ने पानी की तलाश में इतने सारे गड्ढे खोदे हैं। अगर वह धैर्यपूर्वक एक ही जगह पर गड्ढा खोदता तो उसे अवश्य पानी मिल जाता, लेकिन वह थोड़ी देर गड्ढा खोदता और पानी न मिलने पर दूसरी जगह गड्ढा खोदना शुरू कर देता। इस प्रसंग का सार यह है कि अगर कोई व्यक्ति किसी काम में सफल होना चाहता है तो उसे कड़ी मेहनत करनी होगी, लेकिन कड़ी मेहनत के साथ ही स्वभाव में धैर्य होना भी जरूरी है।

## समय क्या है

प्रो० (डॉ०) अपर्णा वत्स  
इतिहास विभाग

एक गतिमान चक्र  
जो घूमता है अपनी धूरी पर निरंतर  
सुख-दुख, यश-अपयश को  
अपने में समेटे.....घूमेगा  
मानव..... इस कर्मक्षेत्र में  
अपने कर्मों की खेती कर  
जैसा बोएगा, वैसा पाएगा।  
यहीं पर.....  
समय अपने रंग में रंगेगा अवश्य  
पर कितना चढ़ पाएगा यह रंग ?

‘आह’ और ‘वाह’ के बहाने दूढ़ेगा  
निज कर्मों से उबरने की राह चुनेगा ।  
सत्कर्म सत्य मार्ग तक पहुँचाएंगें ।  
मुस्कुराहट बिखेरो चहुँ ओर  
जीवन को सतरंगा बनायें  
समय की शिला पर  
मधुर चित्त बनाएं  
स्वयं उनको समझें  
और सबको समझाएं ।



## खजुराहो मन्दिर : चन्देलों की सांस्कृतिक धरोहर

प्रो० अर्चना रानी

प्रोफेसर : ड्राइंग एवं पेंटिंग विभाग

मैं एक मीडिया हूँ जो संचालन का कार्य करता हूँ। प्राचीनकाल से भारत में कला-संस्कृति की समृद्ध परम्परा रही है। भारत प्राचीनकाल से ही पर्यटन की दृष्टि से भी अत्यन्त समृद्ध रहा है। राजस्थान, उत्तरांचल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत या यूँ कहें, जम्मू-कमीर से कन्याकुमारी तक कला की विविध छटायें पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रही हैं। भारत में अनेक पर्यटन स्थल ऐसे हैं जिसका महत्व ऐतिहासिकता के साथ-साथ कलात्मक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। इन्हीं पर्यटक स्थलों में एक महत्वपूर्ण नाम खजुराहो का भी है। भारतीय स्थापत्य के इतिहास में मध्य प्रदेश में स्थित चंदेल शासकों द्वारा निर्मित खजुराहो के मन्दिर अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं, साथ ही अपने कलात्मक मूर्ति शिल्प के वैभव के लिए सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध हैं। खजुराहो के ये मन्दिर हमें बीते हुए समय की याद दिलाते हैं, उस बीते हुए समय की जिसमें एक गौरवमय इतिहास छिपा हुआ है। यह इतिहास उन योद्धाओं का, वास्तुशिल्पकारों का, कवियों का, संगीतज्ञों का, संतो और दार्शनिकों का है जो समय के लम्बे अंतराल के बीच अपनी ठोस, धरोधर के रूप कलात्मक, अवशेषों के रूप में छोड़े गये हैं।

कलास्थापत्य की इस समृद्धशाली परम्परा के वाहक इस प्रदेश को वैश्विक पहचान दिलाने में चन्देल शासकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य बुन्देलखण्ड में कला एवं साहित्य के रस को समझने व उसका सम्मान एवं संरक्षण प्रदान करने वाले शक्तिशाली चन्देल राजवंश का उदय हुआ, जिन्होंने अपनी प्रथम राजधानी खजुराहो को विश्व के श्रेष्ठ कलात्मक स्थापत्य से सजाया। खजुराहो को चन्देल शासकों ने अनेक उत्तुंग शिखरों से युक्त हिमालय जैसी शृंखला से शोभायमान मन्दिरों तथा झीलनुमा सरोवरों से अलंकृत किया था। स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार यहाँ प्रारम्भ में पिच्चासी मन्दिर थे, परन्तु वर्तमान में मात्र पच्चीस मन्दिर ही चन्देल शासकों की यश गाथा गा रहे हैं। ये मन्दिर आठ किलोमीटर क्षेत्र में फैले हैं। खजुराहो में निर्मित ये मन्दिर नागर मन्दिर स्थापत्य शैली के चरमोत्कर्ष को अभिव्यक्त करते हैं।

नगर शैली के इन मन्दिरों का निर्माण दो प्रकार के पत्थरों से किया गया है- ग्रेनाइट पत्थर, लालबलुआ पत्थर। खजुराहो के मन्दिर प्रायः ठोस ऊँची चौकी या चबूतरे बनाये गये हैं। प्रथम बार मन्दिर की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए डर सा लगता है तथा ऊपर चढ़ने के उपरान्त नीचे उतरते समय भी भय सा लगता है। लेकिन मन्दिरों के दर्शन करते-करते यह स्वाभाविक लगने लगता है। इन मन्दिरों के चारों ओर कोई सीमा रेखा या दिवार नहीं बनी है। मन्दिरों के चारों ओर प्रदक्षिणा करने हेतु चौड़ा स्थान छोड़ा गया है। मन्दिरों के निर्माण में वायु एवं प्रकाश की व्यवस्था का पूर्ण ध्यान रखा गया है। मन्दिर की दिवारों के ऊपर छत न बनकर शिखर बने हैं। यह शिखर मन्दिर के गर्भगृह अर्थात् प्रमुख प्रतिमा जहाँ स्थापित है, ठीक उसके ऊपर बने हैं।

लम्बे निर्माण काल एवं कलानुसार बदलते शासकों की रुचियों के अनुसार यहाँ निर्मित मन्दिर भले ही विभिन्न धर्म या सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व करते हों, किन्तु वास्तुव शिल्प योजना में सभी में समानता है, जो खजुराहो एवं चन्देल शासकों की अपनी विशिष्टता भी है। पश्चिमी क्षेत्र में सर्वाधिक और महत्वपूर्ण मन्दिर हैं। यहाँ चौसठ योगिनी, कंदरिया महादेव मन्दिर, देवी जगदम्बा, चित्रगुप्त, विश्वनाथमन्दिर, वराह और नंदी मन्दिर हैं। दक्षिणी हिस्से में हुलादेव मन्दिर और चतुर्भुज मन्दिर हैं। पूरब

की ओर सभी जैन मन्दिर हैं जैसे पार्वनाथ मन्दिर, आदिनाथ मन्दिर, शांतिनाथ मन्दिर और हिन्दू मन्दिरों में जावरी मन्दिर, वमण मन्दिर और हनुमान मन्दिर भी है। सभी मन्दिर ठोस और ऊँचे चबूतरे पर बने हैं। निर्माणकाल के अन्तर और कला विकास की दृष्टि से अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर खजुराहो मन्दिर समूह को प्रारम्भिक व परवर्ती दो वर्गों में बाँटा गया है। चौंसठ योगिनी, लालगुंवा-महादेव, ब्रह्मा, मातंगेश्वर एवं बराह मन्दिर को छोड़कर शेष मन्दिर परवर्ती काल के हैं। चौसठ योगिनी मन्दिर शिव सागर झील के दक्षिण-पश्चिम केन्द्र में स्थित हैं एवं शाक्त सम्प्रदाय से सम्बन्धित है। ग्रेनाइट चट्टानों से निर्मित यह खजुराहो में ज्ञात सबसे प्राचीन चन्देल मन्दिर है। मन्दिर स्थापत्य की दृष्टि से यह ऊँची जगती व दो भागों में विभक्त दीवार इसकी प्रमुख विशेषता है। स्थापत्य शिल्प तथा मूर्तियों पर अंकित लेखों के आधार पर इसे नवीं शताब्दी के अन्त में निर्मित माना जा सकता है। नवीं एवं दसवीं शताब्दी के मध्य निर्मित अन्य परवर्ती मन्दिरों में ब्रह्मा और लाल गुवां का मन्दिर जो क्रमशः वैष्णव व शैव मन्दिर हैं तथा मातंगेश्वर मन्दिर जो कि इस वर्ग का सबसे बड़ा तथा सबसे सादा मन्दिर है, का प्रमुख स्थान है। इस समूह के सभी मन्दिर थोड़े बहुत अन्तरो के साथ उत्तरोत्तर विकसित स्वरूप दर्शाते हैं।

खजुराहो की कलानिधियों में पूर्वी और पश्चिमी भारतीय कलाओं के समन्वय का सुन्दर निदर्शन मिलता है। अपने भव्य रूप, भावों की गूढ़ता एवं शिल्पियों की मौलिक चेतना खजुराहो को आज भी भारतीय कला के प्रतिनिधि के रूप में विश्व के समक्ष प्रस्तुत करती है। साथ ही यह चन्देल शासकों की धार्मिकता, कला प्रियता एवं अक्षुण्ण कीर्ति के अमिट स्मारक तथा भारतीय कला संपदा का अगाध आगार हैं। यही कारण है कि खजुराहो आज यूनेस्को की हेरिटेज साइट पर देखा जा सकता है।



## कल्पना एवं रंगों की कहानी

प्रो० अर्चना रानी

प्रभारी, विजुअल आर्ट : ड्राइंग एवं पेंटिंग विभाग

शहर की तंग गलियों में, जहाँ धूल और कोलाहल का साम्राज्य था, एक छोटा-सा स्टूडियो छिपा हुआ था। यह स्टूडियो न तो बहुत आलीशान था, न ही उसका कोई नाम था, पर यहाँ की दीवारें रंगों की कहानियाँ कहती थीं। यह था कल्पना का स्टूडियो, एक ऐसी युवती का ठिकाना, जो आधुनिक कला की दुनिया में अपनी पहचान बनाने के लिए जूझ रही थी। उसका नाम था- कल्पना। कल्पना के लिए कला जीवन थी और जीवन-एक सतत संघर्ष। कल्पना का जन्म एक छोटे से गाँव में हुआ था, जहाँ कला का अर्थ था मंदिर की दीवारों पर उकेरी गई पुरानी चित्रकारी या मेले में बिकने वाली मिट्टी की मूर्तियाँ। उसके पिता एक किसान थे और माँ गृहिणी। कल्पना बचपन से ही उन चीजों में रंग भरती जिनमें लोग कोई सुंदरता नहीं देखते थे फटे-पुराने कागज, टूटे हुए खिलौने, दीवारों के टूटे फूटे प्लास्टर। माँ कभी-कभी नाराज हो जाती थीं, “ये क्या गंदगी फैला रखी है?” पर पिता बस मुस्करा देते, “हमारी ये लड़की अलग है।”

जब पहली बार गाँव में एक मेले में कला प्रतियोगिता हुई, तब कल्पना ने मिट्टी के छोटे-छोटे दीयों को अलग-अलग रंगों में रंगकर उन्हें एक कहानी की तरह सजाया। उसकी कहानी थी-अंधेरे में उजाले की तलाश। उस दिन कल्पना को कोई पुरस्कार नहीं मिला, मगर गाँव की कुछ औरतें उसके पास आईं और कहा, हमारी कहानी भी कुछ ऐसी ही है। यही वह क्षण था, जब कल्पना ने जाना कि कला सिर्फ सुंदरता नहीं, अनुभव भी है।

कक्षा 12 के बाद, कल्पना ने जब आर्ट कॉलेज में दाखिला लिया तो पूरे गाँव में चर्चा फैल गई। “कल्पना पढ़ेगी? इससे क्या मिलेगा?” रिश्तेदारों ने मुँह बनाया, माँ की आँखों में चिंता थी, मगर पिता ने सिर्फ इतना कहा, “जा कल्पना, अपने रंगों को पंख दे।” शहर आकर कल्पना ने आधुनिक कला की दुनिया को देखा-वह दुनिया जहाँ रंग, आकार और भावनाएँ किसी नियम से बंधी नहीं थीं। जहाँ पेंटिंग सिर्फ पेड़-पौधे, पहाड़ या चेहरों तक सीमित नहीं थी। वहाँ दर्द को, विद्रोह को, प्रेम को और आत्मा की अभिव्यक्ति को भी अभिव्यक्त किया जाता था। कल्पना को यह आजादी भा गई।

उसका पहला कैनवास एक पुरानी साड़ी थी, जिसे उसने अपनी माँ के संदूक से निकाला था। कल्पना ने उस पर लाल, नीले और पीले रंगों की बौछार कर दी। कोई चेहरा नहीं, कोई आकृति नहीं-बस रंगों का एक तूफान। यह कैनवास उसने अपने कॉलेज की प्रदर्शनी में लगाया। कुछ लोग हँसे, कुछ ने नाक सिकोड़ी। एक प्रोफेसर ने टिप्पणी की-“ये क्या है? कोई बच्चा भी ऐसा बना सकता है!” मगर कल्पना ने सिर ऊँचा किया और कहा, ये रंग मेरे गाँव की औरतों की चुप्पी के सूचक हैं। ये उनकी अनकही कहानियाँ हैं। उस दिन कल्पना को समझ आया कि उसकी लड़ाई सिर्फ कला की पहचान के लिए नहीं थी, बल्कि उन आवाजों के लिए भी थी जो सदियों से दबाई जाती रहीं।

कॉलेज के बाद कल्पना ने शहर के एक पुराने इलाके में एक छोटा-सा स्टूडियो किराए पर लिया। न खिड़की, न रोशनी, बस एक दीवार और एक छत। मगर यही उसका मंदिर था। यहाँ वह तूलिका, रंग, पुराने कपड़े और टूटी चीजें इकट्ठा करती। वह टायरों से मूर्तियाँ बनाती, बोतलों में रंग भरकर लटकाती, लकड़ी के टुकड़ों पर कहानियाँ उकेरती। उसकी कला में रूप कम और भावना अधिक थी। हर एक चित्र, हर एक मूर्ति एक प्रश्न था-तुम सोचते क्यों नहीं? तुम टालते क्यों हो?

एक दिन उसने एक पुराने दरवाजे को उठाकर उस पर एक चित्र बनाया। वह चित्र एक औरत का चेहरा था-आधा उजाले में, आधा अंधेरे में। देखने पर लगता मानों वह कुछ कह रही हो, मगर होंठ बंद थे। इस चित्र को देखकर लोग रुकते, चुप होते

और फिर अपनी बेचौनी को लेकर आगे बढ़ जाते। यह चित्र उसकी सबसे चर्चित कृति बनी, अनकही अधूरी आवाज के रूप में।

धीरे-धीरे कल्पना की कला सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गई। कुछ लोग उसकी कला को बकवास कहते, कुछ ने कहा वह असली कलाकार नहीं है। लेकिन हर नफरत भरे संदेश के बीच उसे ऐसे संदेश भी मिलते : आपकी पेंटिंग ने मेरी कहानी कह दी, मैंने पहली बार किसी औरत के चेहरे में अपना दर्द देखा।

फिर एक दिन, मुंबई शहर की बड़ी आर्ट गैलरी से कल्पना को निमंत्रण मिला। वे उसकी कला को प्रदर्शनी में शामिल करना चाहते थे। कल्पना के लिए यह एक सपने के सच होने जैसा था। पर जब उनसे कहा गया कि वह अपने चित्रों की कीमत लगाए, तो कल्पना ने इंकार कर दिया। “मेरी कला मेरी आवाज है, इसे कीमत नहीं दी जा सकती।” गैलरी वाले हैरान थे, पर कल्पना की जिद के आगे झुक गए।

प्रदर्शनी में लगी उसकी कलाकृति का शीर्षक था-“चुप्पी की चीख”। कल्पना ने इसमें एक विशाल कैनवास पर कूड़े-कचरे से एक औरत की मूर्ति बनाई थी, जो टूटी-फूटी चीजों से बनी थी, मगर उसकी आँखों में उम्मीद थी। उस मूर्ति के नीचे लिखा था- “मैं ही समाज हूँ, मैं ही सवाल।”

प्रदर्शनी में कल्पना की कृतियाँ सबसे अलग थीं। वहाँ रोशनी कम थी पर प्रभाव गहरा। दर्शकों को जैसे एक दर्पण दिख रहा था, जिसमें वे अपनी परछाई देखते थे। अखबारों में कल्पना की चर्चा होने लगी। कुछ ने उसे आधुनिक भारत की आवाज कहा, तो कुछ ने नाटकबाज कलाकार, पर कल्पना को इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ा। वह जानती थी कि कला की असली कसौटी आलोचना है। प्रदर्शनी के दौरान एक बुजुर्ग औरत आई-माथे पर झुर्रियाँ, आँखों में वर्षों का दर्द। उन्होंने कल्पना से कहा, “तुमने मेरी जिंदगी को कैनवास बना दिया है। क्या मैं तुम्हारे स्टूडियो आ सकती हूँ?”

कल्पना ने उन्हें अगले दिन बुलाया। वे आई और बैठीं। एक लंबी चुप्पी के बाद उन्होंने अपनी कहानी सुनाई- पति की मार, बेटे की बेरुखी और दुनिया का तिरस्कार। कल्पना ने उनकी कहानी सुनी और एक कैनवास उठाकर काम शुरू कर दिया। इस बार उसका कैनवास सफेद था और उस पर सिर्फ एक बिंदी थी-लाल, मगर धुँधली। उस दिन के बाद, कल्पना के स्टूडियो में औरतें आने लगीं। कोई घर छोड़ चुकी थी, कोई बस चुप थी। कल्पना उनकी कहानियों को कला में अभिव्यक्ति देती। धीरे-धीरे उसका स्टूडियो अब सिर्फ एक कला केंद्र नहीं था, वह एक शरणस्थली बन गया था, जहाँ टूटे सपनों को रंग, आकार मिलते थे। आज कल्पना का स्टूडियो एक तीर्थस्थल बन चुका है। नई पीढ़ी के कलाकार वहाँ आते हैं, सीखते हैं और अपने सपनों को रंग देते हैं। कल्पना अब भी वही पुरानी साड़ी लिए बैठी है और सोचती है कि अगला कैनवास कैसा होगा। आज वह एक वर्कशॉप भी चलाती है, जहाँ वह युवाओं को सिखाती है कि कला केवल कौशल नहीं, आत्मा की पुकार है। कभी-कभी वह उस दरवाजे की तरफ देखती है, जिस पर “अधूरी आवाज” बनी है, और मुस्कुरा देती है। अब वह अधूरी नहीं रही। माया की कहानी सिर्फ एक कलाकार की कहानी नहीं है। यह हर उस व्यक्ति की कहानी है जो समाज के बनाए ढाँचों को तोड़ता है और जो अपने अस्तित्व को रंगों में ढाल देता है।



## प्राचीन भारतीय संस्कृति में विवाह संस्कार

प्रो० (डॉ०) अपर्णा वत्स  
इतिहास विभाग

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में विवाह संस्कार को प्रमुखता दी गयी है। प्राचीन साहित्य में कहा गया है कि व्यक्ति के लिए धर्म का पालन करना सबसे बड़ा पुरुषार्थ है तथा इस पुरुषार्थ की पूर्ति गृहस्थ आश्रम से ही होती है। व्यक्ति का समाज से सीधा व प्रत्यक्ष संबंध गृहस्थ आश्रम में ही रहता है। गृहस्थ आश्रम से ही व्यक्ति के आर्थिक और सामाजिक जीवन का लौकिक अस्तित्व प्रारम्भ होता है। हिंदू षोड्स संस्कारों में विवाह सबसे प्रधान स्थान रखता है। विवाह संस्कार से गृहस्थ आश्रम प्रारंभ होता है। विवाह मनुष्य की मनोवैज्ञानिक सामाजिक एवं जैविक आवश्यकता है। आदिम सामाजिक व्यवस्था के मूल में विवाह संस्था को अधिकांश सामाजिक वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है। वन्य समाज के बाद धातु युग में इसे और अधिक महत्व प्राप्त हुआ। ऋग्वेद के अनुसार विवाह का उद्देश्य गृहस्थ जीवन में प्रवेश करके देवताओं की प्रसन्नता के लिए यज्ञ करना तथा सन्तानोत्पत्ति करना है। ऋग्वेद में विवाह के एक संपूर्ण रूप से प्रतिष्ठित और गौरव मंडित संस्कार के रूप में मान्यता दी गयी है। विद्योपार्जन उपरांत विद्यार्थी का ब्रह्मचर्य आश्रम से घर लौटने पर यह संस्कार संपन्न होता था। विवाह व्यक्ति के सामाजिक जीवन के साथ-साथ जैविक गतिशीलता के लिए भी परमावश्यक माना गया है। महाभारत में गृहिणी जो घर का पर्याय कहा गया है। उत्तरवैदिक काल में आश्रम व्यवस्था के विकास के फलस्वरूप विवाह संस्था का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता गया। अन्य आश्रमवासियों के भरण-पोषण का दायित्व गृहस्थाश्रमियों पर था। अस्तु विवाह गृहस्थ जीवन का पवित्र संस्कार स्वीकार कर लिया गया। लगभग 200 ई० पू० तक के काल में विवाह संस्कार स्त्री-पुरुषों के लिए एक पुनीत कर्तव्य माना जाने लगा। सामाजिक जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए तत्कालीन शास्त्रकारों ने विवाह संस्थाओं में दृढ़तापूर्वक प्रतिष्ठित करना प्रारंभ किया।

स्वभाव से मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अपनी सामाजिक प्रवृत्ति के कारण मनुष्य एकाकी नहीं रह पाता और वह विवाह करके परिवार बना कर रहता है। विवाह संस्कृति के कारण ही स्त्री व पुरुष अपने कर्तव्यों का निर्वहन भलीभांति कर पाते हैं। परस्पर एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायित्व रखने वाले पति-पत्नी अपनी योग्यतानुसार श्रम व विभाजन करे सुगमतापूर्वक जीवन यापन कर लेते हैं। वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक साहित्य तक, सभी जगह विवाह को एक आवश्यक कृत्य माना गया है।



## संगीत में कैरियर के विभिन्न क्षेत्र

डॉ० किरण शर्मा  
एसोसिएट प्रोफेसर  
संगीत विभाग

‘कला’ विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, कलाएं मानव मन की सुखद अभिव्यंजनायें हैं। कलायें किसी भी राष्ट्र की परंपरागत संस्कृति की पहचान हैं। भारत वर्ष ललित कलाओं के सौन्दर्य से परिपूर्ण है। कलायें क्या हैं? कलायें मानव के अन्तर्मन में व्याप्त भावों की सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति हैं। वैदिक कला से ही संगीत कला जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध हुई है। सर्वप्रथम तो ये जिस प्रकार मन में व्याप्त विचारों अथवा कल्पनाओं को साकार रूप से देती है उसमें जीवन की सांस्कृतिक परम्परा की व्याख्या होती है। ‘कला’ का उद्गम तथा प्रचार प्रसार सामाजिक प्रक्रिया का ही एक अंग है।

हम देखते हैं कि किसी भी समाज में वर्तमान समकालीन संस्कृति कला परिवेश पर गहन प्रभाव डालती है। आधुनिक युग प्रमुखतः वैज्ञानिक, व्यवसायिक तथा भौतिक वादी दृष्टिकोण पर आधारित है। संगीत कला मात्र भावात्मक अभिव्यक्ति या मनोरंजन का साधन होकर ही सीमित नहीं रह रही है। किसी भी कला का एक उद्देश्य यह भी है कि वह अर्थोपार्जन तथा जीविकोपार्जन में सहायक हो। संगीत कला भी आज कैरियर निर्माण तथा रोजगार परक एक व्यवसाय के रूप में अपना स्थान बना चुकी है।

वस्तुतः भारतीय संगीत के इतिहास को देखने पर ज्ञात होता है कि वैदिक काल में भी गायक वादन का एक पृथक व्यवसाय प्रारंभ हो चुका था। डॉ० शरत चन्द्र के अनुसार “संगीत” का प्रसार तत्कालीन दास वर्गों में भी था। दासियों का एक प्रकार का वृत्तलुकार नृत्यगीत हुआ करता था। इन्हे ‘गाथा’ नामक लोक गीतों की उपमा दी गयी। दासी वर्ग का यह नृत्य अर्थोपार्जन हेतु ही माना जाता था। डॉ० पराजपे के अनुसार यह संगीत का व्यवसायिक पक्ष ही था। ठाकुर जयदेव सिंह के अनुसार “वैदिक युग में ही व्यवसायिक रूप से गाने वालों का एक वर्ग था। इतिहास काल में मागध और सूत लोग वीरगाथा के बहुत ही कुशल व्यवसायिक गायक थे। व्यवसायिक संगीतज्ञों को इस काल में सूत, मागध वंदी व वैतालिक संज्ञा दी जाती थी।

आज संगीत स्वयं में एक उद्योग की भाँति स्थापित होने की ओर अग्रसर है। इसमें कोई भी शंका नहीं है कि आज अधिकतर संगीतज्ञ अपने ज्ञान की और प्रतिभा का मूल्य समझ रहे हैं। संगीत का अपने जीवन के हर पक्ष में चाहे वो भौतिक हो अथवा मानसिक, एक श्रम के रूप में सफल उपयोग तथा उपभोग हो रहा है।

संगीत अपने शास्त्रीय रूप में सुदृढ़ परम्परा तथा तकनीकी का सामंजस्य है। हम देखते हैं कि किसी भी समाज में वर्तमान समकालीन संस्कृति कला परिवेश पर गहरा प्रभाव डालती है। आधुनिक युग प्रमुखता वैज्ञानिक, व्यवसायिक, एवं भौतिक कलावादी दृष्टिकोण पर आधारित है। संगीत भी आज एक औद्योगिक रूपरूप से विकास की ओर अग्रसर है। आज हमारी संगीत शिक्षण प्रणाली को वैज्ञानिकता तथा व्यवसायिकता से अधिकाधिक सम्बद्ध करने की आवश्यकता हो गयी है। संगीत शिक्षण-प्रशिक्षण ऐसा हो कि रोजगार के अधिक से अधिक अवसर प्राप्त हो तथा जीविकोपार्जन में सहायक हो। किन्तु ध्यान रहे कि अपने मूल स्वरूप को स्थापित रखते हुए समाज की उन्नति में भी सहायक हो।

वर्तमान में संगीत का व्यवसायिक पक्ष बहु आयामी हो गया है। नवीन वैज्ञानिक प्रगति के इस आधुनिक युग में संगीत सम्बन्धी क्षेत्र में व्यवसायिक संभावनाओं की एक लम्बी सूची बन सकती है। पाठ्यक्रम का निर्माण व्यवसायिक दृष्टिकोण को सामने रखकर किया जाना चाहिए, जिसमें संगीत के प्रयोगात्मक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ **Special Courses** की भी व्यवस्था हो। यद्यपि यह भी विचारणीय तथ्य है कि व्यवसायिक तथा उपभोक्ता वादी संस्कृति कहीं संगीत की मूल भावना को ही ना अस्त व्यस्त कर दे। मानव के अन्तः स्थल से अभिव्यक्त होने वाली इस कला का मुख्य उद्देश्य मात्र एक बिकने वाली वस्तु के रूप में ही ना सिमट जाये। बिकाऊ संगीत बचाने के प्रयास में कहीं सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों का पतन ना होने लगे। प्रसिद्ध संगीत कम्पनियां जो बाजार एवं व्यापार के मानकों से प्रभावित होती है, निश्चय ही वही बनाना पसंद करती है जो चलता तथा बिकता हो। यद्यपि इस उपभोक्ता वादी संस्कृति ने संगीत साधकों के लिए कुछ नये आयाम भी खोल दिए हैं। संचार क्रान्ति के इस युग में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने तथा कैरियर निर्माण के अनेकानेक अवसर हैं बस हमें ध्यान रखना होगा कि इससे संगीत के मूल स्वरूप तथा सामाजिक मूल्यों का हास न हो। आज हम देखते हैं “कि विविध संगीत प्रतियोगिताओं टी०वी० टेलेंट शोज के माध्यम से अनेकानेक युवा प्रतिभायें सामने आ रही हैं उन्हें एक मंच मिल रहा है जहाँ वह अपनी कला का प्रदर्शन भी कर रही हैं तथा साथ ही अर्थोपार्जन भी कर रही हैं। यह उभरते हुए कलाकारों को अधिक संघर्ष करने के लिए प्रेरित कर रहा है। वे पूरी लगन से संगीत की आराधना कर रहे हैं। उन्हें संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़ने के अनेकानेक अवसर प्राप्त हो रहे हैं। संगीत को एक उद्योग के रूप में हमारी नीति क्या हो, प्रबन्धन कैसा हो, योजना तथा निवेश के साथ अन्य क्षेत्रों के साथ किस प्रकार सामंजस्य स्थापित किया जाये इसकी भी जानकारी होना आवश्यक है क्योंकि व्यवसायिकता लाभ हानि के समीकरणों पर आधारित होती है। उद्यमी किसी भी क्षेत्र में लाभ हानि के समीकरण पर ही निवेश कर सकता है



## शहरीकरण की चपेट में भारतीय गांव

स्वाति मिश्रा  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
हिन्दी विभाग

आधुनिक जीवन प्रणाली की देन ही इसे कह सकते हैं कि बचपन में ही सपनों का बोझ लादे शिक्षा के लिए जननी तथा जन्मभूमि से विलग होना पड़ता है। क्योंकि शहरी शिक्षा इस स्वप्न पूर्ति में अधिक कारगर साबित हो रही है। सोचने समझने की पर्याप्त दृष्टि विकसित होने के बाद का संभवतः यह पहला अवसर है जो इतने समय तक गांव में रुकने को मिला। वरना एक ऐसी भीड़ का हिस्सा बनकर ही शहर में जीना पड़ता है जहां कितना भी दौड़ लो, लेकिन पाओगे खुद को पीछे ही। खैर विगत कुछ महीनों से गाँव में रहते हुए उन दृश्यों की ओर दृष्टि आकृष्ट हुई, जो किसी भी भूभाग को गाँव की संज्ञा प्रदान करते हैं। आज शहरीकरण का प्रकोप इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि भारतीय गांवों का अस्तित्व खतरे में नजर आता है। स्थितियां इतनी भयावह होती जा रही हैं कि गांवों में भी गांव खोजने की नौबत आ गयी है। वाह्य संरचना और आपसी सौहार्द दोनों ही स्तरों पर। बढ़ते संसाधनों के चलते लोगो की स्वनिर्भरता आज लोगो को अपने तक सीमित कर रही है। नई पद्धतियों के चलते आज परंपरागत कृषि साधनों का विलोप होता जा रहा है, जो किसी भी गांव के जीवंत रूप के लिए आवश्यक होते हैं। बैलों से कृषि करने वालों किसानों का पशुओं के प्रति मित्रवत व्यवहार देखने योग्य होता है। ये पशु उनके लिए किसी भी पारिवारिक सदस्य से कम नहीं होते हैं। साहित्यकार महादेवी वर्मा के गिल्लू, सोना, रोजी का प्रेम देखना है, तो देहात के इन किसानों के पास आना होगा।

इतना ही नहीं वर्तमान में कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के समय में सर्वाधिक सुरक्षित जगह ये गाँव ही हैं, जहाँ लोग न तो मानसिक रूप से कोरोना के खौफ से डरे हुए हैं और न ही शारिरिक रूप से ही कोई ग्रसित है। ऐसे जगहों के मिटते अस्तित्व को लेकर चिंतित होना स्वाभाविक है। लेकिन केवल चिंता करने से ही काम नहीं चलने वाला है। भारतीय गांवों में लगातार घर करता शहर चिंता का विषय है। यदि ये भारतीय गाँव इसी गति से अस्तित्व विहीन होते रहे तो बहुत संभव है कि आने वाले दशकों में गांवों में भी गांव खोजने की नौबत आएगी।

भारतीय गामीणों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। उनके परंपरागत व्यवसायों तथा उनकर साधनों का नवीनीकरण होना चाहिए। तभी उनका रुझान इन कार्यों में होगा और उनकी अगली पीढ़ी इसे सहजता से स्वीकार करेगी। अन्यथा बहुत संभव है कि वे पलायन करने के लिए विवश होंगे।

आज शहरीकरण का दायरा इतना तेजी से बढ़ रहा है कि शहरों के उबाऊ जीवन से जब लोग गांव की ओर आकृष्ट होते हैं, तो पता चलता है कि गांव पहुँचकर भी उन्हें शहर ही मिलता है गांव नहीं। गांवों में भी लोगो की व्यस्तताएँ इस कदर बढ़ती जा रही हैं कि उनके पास किसी से मिलने या सामूहिक गतिविधियों के आयोजन का समय नहीं है, हालांकि इसका कारण लोगो की मनः स्थितियां भी है। आज गांव के लोगो में भी सौहार्दपूर्ण संबंधों की कमी होती जा रही है। इसका कारण औद्योगिक सभ्यता है, जहाँ कितना भी इकट्ठा कर लो वह कम ही नजर आता है। लोगो में अतृप्ति का भाव इतना बढ़ गया है कि वे दिन-रात केवल अधिकाधिक संग्रह में लगे रहते हैं। ऐनकेन प्रकारेण वे सही या गलत माध्यमों की परवाह किए बिना भौतिक संसाधनों को जुटाने में लगे रहते हैं। इन बातों को देखकर दृष्टि चार्ल्स मेटकाफ के उस कथन पर जाती है जो भारतीय गांवों के संदर्भ में है - "गाँव छोटे छोटे गणतंत्र थे। उनकी अपनी आवश्यकताएं गाँव में ही पूरी हो जाती थीं। बाहरी दुनिया से

उनका कोई संबंध नहीं था। एक के बाद दूसरा राजवंश आया, एक के बाद दूसरा उलटफेर हुआ हिंदू, पठान, मुगल, सिक्ख, मराठों के राज्य बनें और बिगड़े, पर गाँव वैसे के वैसे ही बने रहे।“ भारतीय गाँवों का वह रूप आज कहाँ गया, जहाँ सब एक दूसरे के साथ हिलमिल कर रहते थे, गाँव संयुक्त परिवार की मिशाल हुआ करते थे। गाँवों से विलुप्त होते वृक्ष उन्हें भौगोलिक रूप से भी नष्ट कर रहे हैं। उत्पादन की दर को बढ़ाने की दौड़ वृक्षों के लिए विनाशकारी साबित हो रही है। वृक्षों के विनाश से जहाँ एक ओर मृदा अपरदन बढ़ रहा है वहीं दूसरी ओर नदियों तालाबों का भी अस्तित्व समाप्त हो रहा है, जिससे जल संरक्षण का संकट खड़ा होता जा रहा है। इसका परिणाम लगातार गिरते जलस्तर के रूप में दिखाई पड़ रहा है।

गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने का यह अच्छा अवसर है। कोविड 19 के चलते जहाँ एक ओर श्रमिक-मजदूरों का शहरो से अपने गाँवों की ओर तेजी से पलायन हुआ है, वहीं मानसिक रूप से भी वे गाँव में कार्यों को करने के लिए तैयार हुए हैं। यह सही समय है उन्हें गाँवों में रोजगार के लिए प्रोत्साहित करने का। देश में बंदी के चलते लोग अपने आसपास ही रोजगार की इच्छा जाहिर करते हैं। यदि उनको दिशा निर्देश देने तथा आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने का प्रयास सरकार तथा संस्थाओं द्वारा किया जाय तो निःसंदेह वे पीछे नहीं हटेंगे। कारण यह कि जो हजार किलोमीटर की दूरी को पैदल ही नापने की इच्छाशक्ति रखता है, उसकी कार्य क्षमता पर संदेह नहीं किया जा सकता है। आवश्यकता है उन्हें सही दिशा देने की, चलने में तो वे खुद ही माहिर हैं।

आज इन सभी संदर्भों को दृष्टिगत रखते हुए गाँवों को विकसित करने की आवश्यकता है जिससे कि उनका अस्तित्व भी बचा रहे और उनका विकास भी हो सके। गाँवों को शहर बनाना उनका विकास करना नहीं है। गाँवों को विकसित करने के लिए ग्रामीण मॉडल की तलाश करनी होगी, तभी इनका अस्तित्व शेष रह पायेगा।

## भारत में बढ़ती बेरोजगारी के कारण

अर्वांतिका

एम०ए० राजनीति विज्ञान

भारत एक महत्वपूर्ण बेरोजगारी चुनौती का सामना कर रहा है, और कई कारण इस समस्या में योगदान करते हैं तेजी से बढ़ती जनसंख्या एक प्रमुख कारण है, क्योंकि अधिक लोग कार्य क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। जिससे नौकरियों के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा होती है, यह स्थिति विशेषकर युवाओं में उच्च बेरोजगारी दर का कारण बन सकती है। बेरोजगारी को दूर करने के लिए भारत को अपनी जनसंख्या वृद्धि का प्रबंध चाहिए। अधिक रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए स्टार्टअप इंडिया योजना जैसी पहल को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। दूसरा कारण तकनीकी शिक्षा की कमी है भारत में कई स्कूल और कॉलेज पुराने पाठ्यक्रम पेश करते हैं जो मौजूदा नौकरी बाजारों की मांगों के अनुरूप नहीं हो सकते हैं। आज की दुनिया में तकनीकी कौशल के महत्व को देखते हुए, युवाओं को शुरुआत में ही तकनीकी शिक्षा प्रदान करने पर ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि वे बाद में उपयुक्त रोजगार पा सकें। देश में धीमी गति से आर्थिक वृद्धि भी चिंता का विषय है। धीमी गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था पर्याप्त नई नौकरियों पैदा नहीं कर सकती है इससे निपटने के लिए सरकार को आर्थिक विकास में तेजी लाने, रोजगार के अधिक अवसर पैदा करने के लिए काम करना चाहिए।



## राजस्थानी चित्रकला में रूप श्रृंगार परम्परा का निरूपण : एक अनुशीलन

डॉ० नाजिमा इरफान  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
संगीत विभाग

भारत का प्राचीन साहित्य युग युग से जन मानस के लिये आकर्षण, श्रद्धा एवं अध्ययन का विषय रहा है। उसी प्रकार श्रृंगार के प्रति नारी का अनुराग और आकर्षण का भाव स्वाभाविक, सौभाग्यकांक्षा एवं सहज प्रवृत्ति का घोटक है। चित्रकला में सौन्दर्य की अभिव्यक्ति मुख्यतः नारी के माध्यम से की गई है क्योंकि भारतीय कला मूल उद्देश्य सौन्दर्य दर्शन रहा है। यद्यपि काव्य, नाटक और कामशास्त्र के रचयिताओं ने नारी के विविध स्वरूपों अवस्थाओं और मनोदशाओं तथा स्वाभावों का बड़ा सहज व सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है। नारी की सुन्दरतम बाह्य अभिव्यक्ति में श्रृंगार का बहुत अधिक महत्व है। नायिका के विविध रूपों के वर्णन में हिन्दी साहित्य में केशव, देव, बिहारी व मतिराम आदि कवियों ने अपनी लेखनी द्वारा श्रृंगार का सुन्दर वर्णन किया है तथा इन्हीं साहित्यकारों के काव्यों ने राजस्थानी कलाकारों की तूलिकाओं में एक नये यौवन को अपने चरम आकर्षण के साथ प्रस्तुत किया है।

सृष्टि के आरंभ से ही श्रृंगार की प्रवृत्ति मनुष्य में अनुभव की गई है। आदि मानव के पास तन ढकने के लिये वस्त्र नहीं थे तब भी वह प्राकृतिक उपादानों जैसे वृक्ष के पत्तों, फूलों, पत्तियों इत्यादि से अपना तन ढकता व श्रृंगार किया करता था। अतः हम कह सकते हैं कि मनुष्य में श्रृंगार की प्रवृत्ति को जन्म देने वाली प्रकृति ही है। पाषाण काल से आज तक शरीर को सजाने के अनगिनत उपक्रम कालों का प्रभाव पड़ा तथा काल परिवर्तन के अनुसार ही श्रृंगार के प्रकारों व श्रृंगार में प्रयोग होने वाले उपादानों में भी परिवर्तन हुए। प्रत्येक काल में समाज व संस्कृति के अनुरूप ही श्रृंगार के माध्यम व तरीके बने। इस प्रकार विभिन्न समय काल में बनाये गये चित्रों द्वारा उस काल की श्रृंगार परम्परा एवं सामग्री का परिचय मिलता है।

भारत में अनेक ऋतुओं के परिवर्तन के कारण भी नारी श्रृंगार में परिवर्तन प्रायः देखा जाता है। जिस प्रकार ऋतु परिवर्तन पर प्रकृति विभिन्न रंग बिरंगे पुष्पों के द्वारा स्वयं को सुसज्जित करती है, उसी प्रकार प्राचीन नारियाँ भी मौसम के अनुरूप ही उपलब्ध प्राकृतिक सामग्री द्वारा अपना श्रृंगार किया करता थी। आदि काल में नर व नारी दोनों ही समान रूप से अलंकरणों का प्रयोग व श्रृंगार करते थे, परन्तु काल परिवर्तन के साथ-साथ तथा समय के अनुरूप अपने कार्य के अनुसार पुरुषों की रूची श्रृंगार व आभूषण गया।

नारी ईश्वर की सर्वाधिक अनुपम कृति है। नारी का सुकोमल शरीर, उसके हाव भाव व अंग प्रत्यंग के सौन्दर्य को स्थिर रखने का उसका परम कर्तव्य है, जिसके हेतु उसे श्रृंगार की आवश्यकता होती है। यद्यपि सर्वविदित है कि यह शरीर नश्वर है। प्रारम्भिक काल में पत्तों की घघरियाँ तथा उर्ध्व वस्त्रों गेरू के लेप तथा हड्डियों के आभूषण बनाये गये। समय की निरन्तरता के साथ ही चन्दन का लेप, मेहन्दी, महावर इत्यादि का चलन प्रारम्भ हो गया, क्योंकि प्रकृति हमारे चारों ओर हमारे आदर्श के रूप में रहती है, जिस कारण प्रकृति का सामीप्य हमें प्रसाधन की ओर ले जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि श्रृंगार तथा प्रसाधन परम्परा प्रकृति की देन है, तथा उसी को नारी ने अपनाकर स्वयं को अलंकृत किया। भारत में अलंकार प्रियता के प्रमुख कारण जिसमें प्रमुख बाह्य रूप को और अधिक आकर्षण बनाना, सौभाग्यकांक्षा की भावना होना स्वयं को अवयवों की रक्षा करना अनेक जन आभूषण एवं अलंकारों, अनुलेपों का प्रयोग अपनी उम्र को छिपाने तथा युवा दिखने के लिये करते हैं।

सोलहवीं शती के आरम्भ में दो प्रमुख कलाधाराओं राजस्थानी एवं मुगल के एक साथ दर्शन होते हैं। चित्रकला की दृष्टि से राजपूत शैली का निर्माण मध्ययुग की सबसे बड़ी देन है। यह शैली अपनी परम्परागत पद्धति की रक्षा करते हुए विभिन्न शैलियों एवं उपशैलियों के आकर्षणों एवं प्रभावों को आत्मसात् करते हुए समृद्धि के पथ पर अग्रसर होती गयी। राजपूत शैली की आत्मा पूर्णरूप से भारतीय है, जो तत्कालीन उदार राजपूत राजाओं, सामन्तों आदि की छत्रछाया में विकसित एवं पल्लवित हुई। कला इतिहासकारों के अनुसार राजस्थानी चित्रकला वस्तुतः पश्चिमी शैली (अपभ्रंश शैली) की उत्तराधिकारी ही नहीं अपितु नवीन संस्करण भी है। राजस्थानी जन सामान्य की कला है, जो समाज के प्रत्येक वर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें देवियों, नर्तकियों दासियों व नायिकाओं के साथ-साथ सामान्य नारियों का भी अंकन हुआ है। इसमें श्रृंगार का बहुत ही सजीवता के साथ अंकन हुआ है। राजस्थानी चित्रकला के चित्रों में नारी का श्रृंगार प्रमुखता से जुड़ा है। कभी-कभी तो उसके समक्ष अन्य चित्रित पात्र गौण प्रतीत होते हैं। यँ तो राजस्थानी चित्रशैलियों में नारी की रूपाकृति दैहिक गठन, देह प्रमाण में कदाचित अन्तर है, किन्तु उनके स्थानीय प्रभाव के फलस्वरूप उनके व्यक्तित्व परस्पर भिन्न हैं, किन्तु फिर भी उनके श्रृंगार, प्रसाधन व वेशभूषा में एकरूपता के दर्शन होते हैं।

राजस्थानी कला के आरम्भिक चित्रों में नारी लम्बी चौड़ी बनी हुई है, जिसके सिर पर मोती के गुच्छे लटकते हुए अंकित हैं परन्तु कालान्तर में खुले हुए केश प्रदर्शित हैं। नारी प्रसाधन एवं श्रृंगार के अर्न्तगत कामुकता को दर्शाने के लिये नारी आकृतियों के केश अधिकांशतः खुले हैं। चित्रों में नारी आकृति के कपोलों पर बालों की सर्पाकार या घुमावदार लट खुला छोड़ने का प्रचलन था। राजस्थानीय नारियाँ विभिन्न प्रकार की जूतियाँ धारण करती थीं, जिन पर सोने-चाँदी के तारों की कढ़ाई की जाती थी, राजस्थानी शैली के चित्तेरों ने नारी आकृति के समस्त अंगों को उनके आकार प्रकार व आवश्यकता के अनुसार आभूषण से सुसज्जित किया। राजस्थान की उप शैली मेवाड में नारी एक स्वर्ण टीका धारण करती थी जिसे 'बोरला' कहते हैं। जिसे आज भी वहाँ की स्त्रियाँ धारण करती हैं। इसके अतिरिक्त आगे झुका हुआ माँग टीका भी धारण करती थी, वह स्वर्ण निर्मित होता था। उसमें मोती की लटकने अंकित हैं। जोधपुर शैली में उर्ध्वन्दाकार टीका अंकित है, जिसके किनारों पर मोती की लटकने हैं तथा माथे के दोनों ओर मोती की लड़ें कानों तक गई हैं। किशनगढ़ शैली के अर्न्तगत माँग टीके बहुतायत से दिखाई देते हैं। बूँदी शैली में माथे की उँचाई पर माँग टीका अंकित है जो कि स्वर्ण निर्मित तथा रत्न जड़ित है तथा चारों ओर मोती जड़े हैं।

नाक में पहने जाने वाले आभूषणों में नथ प्रमुख है। मेवाड व मारवाड़ी शैली में इसका अंकन कम हुआ है। किशनगढ़ शैली में अंकित नथ में रंगीन तथा सफेद मोती पिरोये गये हैं तथा कहीं-कहीं एक फूल भी पिरोया गये है। नासिका में पहने जाने वाले आभूषण 'बुलाकी' का भी यदा कदा अंकन मिलता है। इसी प्रकार राजस्थानी चित्रकारों ने नारी का श्रृंगार विभिन्न कर्णाभूषणों के द्वारा किया है जिनमें प्रमुख हैं कर्णफूल, कर्णकंद, झुमके इत्यादि जोकि मोती की लडियों के सहारे कान में टिके रहते हैं। इन कर्णाभूषणों में मोती, स्वर्ण, रत्नों का बहुत अधिक चित्रांकन हुआ है। मेवाड शैली में मोती के गुलबन्द तथा स्वर्ण हारों का अंकन है जोकि पीछे काली डोरी से बंधे हैं तथा जिनके किनारों पर मोती के फूंदने लटकते हैं। उदयपुर, जोधपुर, जयपुर इत्यादि विविध राजस्थानी शैलियों में स्त्रियों ने मोतियों की लड़ें गले में सर्वाधिक आभूषण धारण करती थी। वे विविध प्रकार की मोती की मालायें तथा बीच बीच में रत्नों की लड़िया पहनती थी, जिनके बीच में रंगीन मोती भी पिरोए गए हैं। राजस्थानी नारियों ने हाथों, बाजू और अंगुलियों में विशेष प्रकार के आभूषण धारण किये हैं। प्रारम्भिक राजस्थानी शैली में स्त्रियों को कमरपेटी पहने चित्रित किया गया है, जिसके चारों ओर मोती और काली डोरी की लटकने अंकित हैं। कालांतर में यह करधनी आधी हो गई है, जिसके किनारों पर सोने के तिकड़े अंकित हैं। जयपुर, अलवर, जोधपुर शैलियों में स्त्रियों को दो लड़ों की मुक्ता मेघला कमर के चारों ओर धारण किये चित्रित किया गया है।

पादाभूषणों में पायल एवं उंगली में पहनने वाला आरोप्य आभूषण बिछुआ का भी चित्रण किया गया है। ये पायल तथा बिछुए सोने, चाँदी, मोती तथा माणिक के साथ चित्रित हैं। राजस्थानी शैली की प्रमुख विशेषता आभूषणों से सजी संवरी नारियों के चेहरे सौम्य एवं मोहक हैं। नारी आकृतियों में नारी सुलभ, लावण्य एवं सुकुमारता सर्वत्र दृष्टिगत होती है। राजस्थानी चित्रकला के अन्तर्गत ना केवल नारी आकृतियाँ अपितु पुरुषाकृतियाँ भी विभिन्न आभूषणों से अलंकृत हैं। पुरुषों में आभूषण सज्जा की दृष्टि से मुकुटों, मालाओं एवं कंकणों की शोभा विशेष दर्शनीय है। पुरुषों की विविध वस्त्र-आभूषण सज्जा जहाँ उनमें सौंदर्य की वृद्धि करती है वहीं उनकी स्थिति यथा राजा, सामन्त, सेवक आदि को भी दर्शाती हैं।

इस चित्रांकन ने राजस्थानी चित्रकला को संसार भर की अग्रणी चित्रकला शैली में अपना एक अलग एवं विशिष्ट स्थान बना लिया। नारियों के अंकन में कलाकार का ध्यान नख, शिख और अंग प्रत्यंग पर बराबर बना रहा है। राजस्थानी चित्रशैली की नारियों रूप, रंग, मुद्रा प्रसाधन तथा अपनी समूची अभिव्यक्ति में नारी सौंदर्य को मुखरित करती है। जिसके द्वारा नारी में कामुकता को दर्शाने के लिये प्रत्येक सम्भव प्रयत्न किये गये हैं। राजस्थानी चित्रकला अपने उद्भवन और विकास के चरम सीमा तक पहुँची तथा भारतीय कला इतिहास को अपने अद्वितीय चित्रण सामग्री से लाभान्वित किया।

## गुरु और शिष्य के संयोग से ही सम्भव है घराने का अस्तित्व

अंजलि  
अतिथि प्रवक्ता  
संगीत विभाग

भारतीय शिक्षा पद्धति में (गुरु) का स्थान सर्वोपरि माना गया है यथा—

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुसाक्षात् परब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

संगीत-जगत में (घराना) शब्द का विशेष स्थान है, घरानों का महत्व केवल संगीत में ही नहीं वरन् मनुष्य के दैनिक जीवन में भी है, व घराना शब्द का अर्थ है— परम्परा, कुटुम्ब, वंश, परम्परा, परिवार, वर्ग, सम्प्रदाय।

हिंदुस्तानी संगीत एवं घराना संगीत के ही एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं घराना रीति या शैली का दूसरा नाम है। घरानों की गुरु-शिष्य परम्परा के द्वारा ही संगीत के प्राचीन रूप, कलात्मक स्वरूप सामान्य सिद्धान्तों एवं प्राचीन रचनाओं (वदिशों) को जीवित रखते हुए कलान्तर में नवीन प्रयोगों को भी समुचित स्थान दिया गया है जिससे प्राचीन सिद्धान्त एवं रचनाएं आज भी उतनी ही नवीन एवं समसामायिक हैं।

घरानों का प्रचलन उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत दोनों में समान रूप में पाया जाता है, उत्तर भारत में इसे (घराना) तथा दक्षिण भारत में (सम्प्रदाय) कहते हैं।

सम्प्रदाय शब्द हमारी संगीत परम्परा के लिए नया नहीं है। कला तथा साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में भी विभिन्न सम्प्रदाय पाये जाते हैं। इसे पाश्चात्य देशों में (स्कूल्स) कहा जाता है।



## सुकून : एक वर्तमान आवश्यकता

डॉ० ममता कुमारी  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
गृह विज्ञान विभाग

आज के समय में “सुकून” केवल एक भावना नहीं, बल्कि जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। आधुनिकता और तकनीकी प्रगति ने हमारे जीवन को सुविधाजनक बना दिया है, लेकिन इसके साथ ही मानसिक शांति खोने का खतरा भी बढ़ गया है। इस बदलती दुनिया में सुकून अब केवल एक भावना नहीं, बल्कि जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

सुकून का मतलब है मानसिक शांति, तसल्ली और तनाव से मुक्त होना। यह वह अवस्था है जब मन शांत होता है, चिंता दूर रहती है, और व्यक्ति अपने अंदर एक गहरा संतोष महसूस करता है। बिना सुकून के जीवन अधूरा और बोझिल लगता है।  
**वर्तमान जीवन में सुकून की कमी के कारण**

- व्यस्त दिनचर्या: काम, परिवार, और सामाजिक जिम्मेदारियों के बीच इंसान खुद के लिए समय निकालना भूल जाता है।
- अधिक तकनीकी निर्भरता: मोबाइल, इंटरनेट, सोशल मीडिया की लत से मानसिक थकान बढ़ती है।
- प्रतिस्पर्धा और तनाव: करियर, आर्थिक स्थिति, और सामाजिक अपेक्षाओं का दबाव हमारे मन को अस्थिर करता है।
- असंतुलित जीवनशैली: सही नींद, संतुलित आहार, और व्यायाम का अभाव भी मन की शांति को प्रभावित करता है।

### सुकून पाने के उपाय

1. ध्यान और योग: मानसिक शांति पाने के लिए ध्यान और योग अत्यंत प्रभावी साधन हैं। ये न केवल तनाव कम करते हैं, बल्कि मन को स्थिर भी करते हैं।
2. प्रकृति के साथ समय बिताना: प्रकृति की गोद में समय बिताने से मन को आराम मिलता है और सुकून की अनुभूति होती है।
3. सकारात्मक सोच: नकारात्मक विचारों से बचकर सकारात्मक सोच को अपनाना जीवन को बेहतर बनाता है।
4. परिवार और मित्रों के साथ समय: अपने करीबी लोगों के साथ समय बिताने से मन को खुशी और सुकून मिलता है।
5. अपनी पसंद की गतिविधियाँ: किताबें पढ़ना, संगीत सुनना, या कोई हॉबी अपनाना भी सुकून दिलाने में मदद करता है।
6. डिजिटल डिटॉक्स

स्मार्टफोन और इंटरनेट से कुछ समय के लिए दूरी बनाना मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाता है। यह डिप्रेशन और चिंता को कम करने में मदद करता है।

### निष्कर्ष

आज के इस भागदौड़ भरे जीवन में सुकून प्राप्त करना मुश्किल जरूर है, लेकिन असंभव नहीं। हमें अपने जीवन में संतुलन बनाकर, सही प्राथमिकताओं के साथ और खुद को समय देकर सुकून पा सकते हैं। यही सुकून हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने और खुशहाल जीवन जीने की शक्ति देता है। सुकून की खोज में, हमें अपने भीतर झांकना होगा और उन साधनों की अपनाना होगा जो हमें आंतरिक शांति प्रदान करें। यह न केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन को समृद्ध करेगा, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन लाएगा।

## दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति

डॉ० स्वाति शर्मा  
असिस्टेंट प्रोफेसर (संगीत विभाग)

**भगवतशरण शर्मा के अनुसार—** दक्षिण भारत मुसलमानों के आक्रमणों से बचा होने के कारण इनके प्रभाव में नहीं आया। अतः वहाँ की “संस्कृति एवं संगीत” उत्तर भारत की संस्कृति एवं संगीत से भिन्न अपने रूप में कायम रही। इसी के परिणामस्वरूप ही भारतीय संगीत में दो अलग-अलग शैली उत्तरी एवं दक्षिणी संगीत पद्धति का निर्माण हुआ।

### दक्षिण संगीत पद्धति का उद्भव एवं विकास

वर्तमान में भारतीय संगीत की दो विधाएं प्रचलित हैं—

#### (1) उत्तर भारतीय (2) दक्षिण भारतीय

उत्तर भारतीय की हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति और दक्षिण भारतीय को कर्नाटक संगीत भी कहते हैं, परन्तु अर्थानुरूप उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय नाम ही अधिक उचित हैं। वर्तमान दक्षिणी संगीत में पंचश्रुतिक, षटश्रुतिक तथा जन्य-जनकोमल जैसी संज्ञाओं का प्रयोग होता है। अतः इन संज्ञाओं का प्रयोग कल्लिनाथ के द्वारा किया जाना अप्रत्यक्ष रूप से कर्नाटक संगीत के तत्कालीन अस्तित्व का घोटक है। इनकी पद्धति का अनुसरण रामामात्य ने किया, इसके बाद औरों ने भी इनका अनुसरण किया। स्पष्ट है कि संगीतरत्नाकर के काल में दक्षिण भारतीय पद्धति के बीच अंकुरित हो चुके थे।

### कर्नाटक संगीत का परिचय—

उत्तरी तथा दक्षिणी दोनों ही संगीत पद्धतियों में सप्तक के बारह स्वरों को आधार मानते हैं। दक्षिण भारतीय संगीत में विकृत स्वरों को श्रुति संख्या के आधार पर नाम दिए जाते हैं। जैसे- रे को चतुश्रुतिक कहा जाता है। दक्षिण भारतीय संगीत में स्वरों की शुद्ध अवस्था कम श्रुतियों वाली अर्थात् नीची होती है। कर्नाटक के शुद्ध स्वर उत्तरी संगीत के कोमल स्वरों के बराबर सिद्ध होते हैं। कर्नाटकी स्वरों में किसी स्वर को कोमल अवस्था में नहीं माना गया है। दक्षिण भारतीय संगीत में मध्य सप्तक के लिए कोई चिन्ह नहीं होता। मंद्र सप्तक के लिए स्वर के नीचे बिन्दु लगा दिये जाते हैं। राग सौन्दर्य के लिए मींड, नमक तथा मुर्की आदि का भी प्रयोग किया जाता है। गायन के साथ वायलिन या मृदंगम का प्रयोग होता है। दक्षिणी संगीत में तार्किकता और वैज्ञानिकता का ध्यान रखा जाता है।

#### (2) दक्षिण भारत में प्रचलित गायन, वादन की प्रमुख शैलियाँ

**प्रबन्धगायन—** दक्षिणात्य संगीत परम्परा में सम्पूर्ण राग को “पन” और षाडव् औडव् राग की संज्ञा ‘तिरम्’ थी। इन्हीं ‘पन’ और ‘तिरम्’ में देवार प्रबन्ध गाए जाते थे। ये सातवीं आठवीं शताब्दी की रचनाएं हैं तथा इनके रचयिता ज्ञानसंबधअप्पर, वागीशर, सुंदरमूर्ति ये तीन शैव आचार्य रहे हैं।

**पदम्—** पदम् दक्षिण भारत की विशिष्ट गायन शैली है, जो विलम्बित लय व गंभीरता के कारण उत्तर भारत की ध्रुपद गायन शैली के समान है। पुरून्दरदास कनकदास आदि कवियों ने प्रचलित राग-रागनियों में अनेक पदों की रचना की। पदम् में मुख्यरूप में तीन पंक्तियाँ थीं, पल्लवी, अनुपल्लवी और चरणम्। गायक इच्छानुसार इनमें से किसी भी पंक्ति अथवा अंग से गायन को आरंभ कर सकता था। ‘भरतनाट्यम्’ नृत्य के लिए खासकर के इनकी रचना की गई है, संगीत सभाओं में भी गाई जाने वाली लोकप्रिय रचना है।

**कीर्तन या कीर्तनम्—** कीर्तन दक्षिणात्य संगीत पद्धति की महत्वपूर्ण, सर्वाधिक प्रसिद्ध, लोकप्रिय कृष्ट रचना है। राग तथा ताल आदि नियमों से बद्ध गंभीरता लिए हुए साहित्य के साथ श्रोताओं के दिल पर प्रभाव डालने वाली ईश्वर स्तुति मूलक कृति विशेष “कीर्तन” कहलाती है। इसके मुख्य रूप से तीन अंग हैं— (1) पल्लवी (2) अनुपल्लवी (3) चरणम् प्रारम्भिक

राग प्रवर्तक थोड़ा आलाप करके कीर्तन प्रारंभ करते हैं, परन्तु कृति के रूप में कीर्तन को प्रस्तुत करते 'आलाप' को पूर्व में कीर्तन में रेनू, तेनू, नोम्, तोम् आदि स्वरात्मक अक्षरों के द्वारा विस्तारपूर्वक प्रस्तुत करते हैं।

**वर्णम्**— इसकी रचना स्थायी, आरोही, अवरोही, संचारी इन चारों वर्णों के आधार पर की जाने से इसका नाम 'वर्णम्' सार्थक सिद्ध होता है। वर्तमान दक्षिणात्य पद्धति की शिक्षा में रागस्वरूप को निर्धारित करने के लिए आवश्यक माना जाता है। इसकी पाँच धातु— पल्लवी, अनुपल्लवी, मुक्तायंपु, चरणतम् एवं चिठ्ठेस्वरम् मानी जाती है। इसके चार भेद— चोक वर्णम्, पद वर्णम्, तान वर्णम्, ध्रुव वर्णम्।

**जावली**— जावली का अर्थ है— श्रृंगारमयगीत। यह प्रायः एक आधुनिक गीत का प्रकार है। जावली उत्तर भारत की 'ठुमरी' गायन शैली के समान है। इसमें नायक नायिका के प्रेम संबंधों का वर्णन मिलता है। इसमें पल्लवी, अनुपल्लवी, चरणम् आदि अंग होते हैं। कभी-कभी एक से अधिक चरण भी होते हैं। प्रसिद्ध रागों व तालों में ही प्रायः जावलियाँ निबद्ध होती हैं। यह खताज, काफी, झिंझोटी जैसे रागों में गायी जाती है। इसमें आठ मात्रा की आदि अथवा छः मात्रा की रूपक, ताल का प्रयोग होता है। इसके श्रृंगार, संयोग, वियोग, करूण, रस का भी प्रयोग होता है।

**तिल्लाना**— ताल की विभिन्न गतियों तथा पेंचीदा स्वर संचारों को चमत्कारपूर्ण शैली में बद्ध करना 'तिल्लाना' कहलाता है। इसे उत्तर भारतमें तराना के नाम से जानते हैं। इसका प्रयोग नृत्य के साथ किया जाता है तथा चोल्लकेटुओं अर्थात् पटाक्षर की इसमें प्रधानता होती है। इसमें भी पल्लवी, अनुपल्लवी, चरणम् आदि का भाग है। इस गायन शैली को 'ओम तत् सत्' आदि स्तुति मूलक शब्दों का विकृत रूप।

### (3) दक्षिण संगीत के प्रमुख वाद्य

(1) **बेला वाद्य**— बेला दक्षिण भारतीय संगीत में संगत के रूप में प्रयोग किया जाता है। गायन के साथ बेलावादक को विशेषकर आलाप करते समय तथा गायक द्वारा प्रस्तुत तानादि क्रियाओं के अनुकरण के लिए प्रदान किया गया सुअवसर मनोरंजन होने के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी होता है।

(2) **दक्षिणात्य वीणा**— वीणा वादन के साथ मुख्य रूप से गायन का ही अनुकरण अर्थात् संगत की जाती है। दक्षिणात्य वीणा वादन अभी भी पर्याप्त लोकप्रिय और विकसित रूप में प्रचलित है। दक्षिण भारत में वीणा वादन क्रिया प्राचीनस्वरूप को सुरक्षित रखने के साथ ही नवीनता को भी अपना रही है। इसलिए दक्षिण भारत में वीणा वादन में समयानुकूल विकास होता जा रहा है।

(3) **नागस्वरम् या तूर्य**— नागस्वरम् दक्षिण भारत के देवालयों में उत्सव, शादी तथा जुलूस आदि मंगल अवसरों पर बजाया जाता है। दूर से देखने में यह उत्तर भारतीय शहनाई जैसा ही प्रतीत होता है, किन्तु आकार में यह शहनाई से बड़ा होता है। इसका आकार लम्बे धतूरे जैसा होता है। इसकी लंबाई डेढ़ हाथ होती है। मुख का व्यास धीरे-धीरे बड़ा होता जाता है, जो अन्त में फूल के समान खिले हुए आकार का हो जाता है।

### मृदंगम्

यह कर्नाटक संगीत में प्रयोग होने वाला ताल वाद्य है। उत्तर भारतीय मृदंग आकार में इससे कुछ बड़ी होती है उसकी लम्बाई कर्नाटकीय मृदंग से कुछ अधिक होती है। मृदंगम् में दक्षिण मुख के समान ही वाम मुख में आटे की पूलिका लगाने का स्थान छोटा होता है। मृदंगम् में लगभग मध्यमा उंगली के समान पतले गट्टे हैं। मृदंगम् में हाथ रखने का ढंग महाराष्ट्र की ढोलकी जैसा है, जिसमें तबला तथा ढोलक बजाने के मिले-जुले ढंग से हाथ रखा जाता है। गायक के आधास्वर में मिलाते हैं।



## भविष्य में ललित कलाओं में संगीत शिक्षा की सम्भावनाएँ

डॉ० सुमन सिंह  
गेस्ट फेकल्टी (संगीत विभाग)

संगीत की शिक्षा प्रदान करने का जो वर्तमान स्वरूप हमारे सामने है, उसके प्रमुख सोपान छात्र शिक्षक, शिक्षण-पद्धति प्रशासन व यू०जी०सी० इत्यादि। एवं संगीत की परीक्षा-प्रणाली है। इन पाचों के कर्तव्य-निर्वाह परस्पर समन्वय व सहयोग तथा निजी रुझान एवं संगीत के प्रति वाहित जुननी समर्पण के फलस्वरूप जो स्तरीय परिणाम सामने आने चाहिए वे आज प्रायः दृष्टिगत नहीं हो रहे। फलतः संगीत शिक्षा के स्वरूप में उन्नतीकरण की आवश्यकता विगत 25-30 वर्ष से तीखे रूप में उभरकर सामने आयी है। साथ ही आज की शिक्षण प्रणाली से जुड़े हुए कुछ ज्वलन्त सवाल हमारे समक्ष स्वतः उपस्थित होते हैं। जैसे क्या वर्तमान संगीत-शिक्षा संगीत के प्रचार-प्रसार और संरक्षण का कार्य व्यापक स्तर पर करने में सफल है? कहीं वर्तमान समय में अन्य विषयों के साथ दौड़ और होड़ करते हुए संगीत शिक्षा का सूक्ष्म और साधनामय रूप खो तो नहीं रहा? क्या विद्यार्थी और शिक्षक अपने-अपने दायित्वों का निर्वाह पूर्ण ईमानदारी से कर रहे हैं। क्या संगीत समग्र शिक्षा के अवसर व संसाधन प्रशासन द्वारा विद्यार्थियों को उपलब्ध कराये जा रहे हैं? क्या संगीत के दोनों पक्षों-क्रिया चतंबजपवसद्ध और शास्त्र जमवतद्ध की शिक्षा समान रूप से विद्यार्थियों को दी जा रही है? कहीं संस्थाओं में शिक्षा महज औपचारिक सूचनाओं को प्रदान करके ही तो धीमे-धीमे दूर नहीं हो रहे हैं? क्या परीक्षा प्रणाली विद्यार्थियों की प्रतिभा को बाहर निकालने के साथ-साथ उनको वांछित न्याय दिलाने की गुणवत्ता पर विचार किया जा रहा है।

वर्तमान समय में संगीत-शिक्षा से सम्बन्धित प्रशासन की नीतियों एवं योजनाओं के निर्धारण में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् आदि संस्थानों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है और इसके साथ-साथ कुछ अप्रशासनिक एवं औद्योगिक केन्द्रों द्वारा संचालित संगठनों के प्रयासों को भी प्रोत्साहन मिला है। आज देश के कई विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तरीय स्तर तकनीकी संगीत शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया जा चुका है।

आई०टी०सी० की संगीत रिसर्च अकादमी कलकत्ता आदि उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ संगीत अकादमी इन्दिरा कला संगीत, संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़, बम्बई की नेशनल सेन्टर फॉर दि परफार्मिंट आर्ट विश्व-भारती शान्ति-निकेतन प्रयाग संगीत समिति-इलाहाबाद, भारतखण्डे संगीत विश्वविद्यालय (डीमड), लखनऊ तथा प्राचीन कला केन्द्र चण्डीगढ़ आद शिक्षण संस्थाएँ निरन्तर शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में और विशेषतः शिक्षा के स्तर को बनाए रखने के लिए सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।



## विजुअल परफॉर्मिंग आर्ट - स्कल्पचर

डॉ० सुमन सिंह  
अतिथि प्रवक्ता (संगीत विभाग)

कला के विभिन्न माध्यमों में मूर्ति शिल्प कला निःसन्देह सर्वाधिक शक्तिशाली और बहुआयामी माध्यम रही है जिसमें जीवन के विविध धार्मिक और लौकिक पक्षों को विस्तृत आयाम देते हुए रूपायित किया गया है प्रारम्भिक मूर्तिकाल से लेकर अब तक की मूर्तिकला पर यदि दृष्टिपात किया जाये तो हम पायेगे कि जिस तरह से चट्टानों को काट कर बनाई गई मूर्तियाँ जो हमें अजन्ता ऐलोरा ऐलीफेन्टा की गुफाओं में देखने को मिलती है धातु से बनी मूर्तियों के साक्ष्य मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से मिले हैं इन धातु से बनी मूर्तियों को देखकर उनकी चित्रकारी के साथ संस्कृति का भी पता चलता है समय के साथ-साथ मूर्तियों के बदलते रूप सामने आते गये इस आधुनिक युग में मूर्तियों को पत्थर से काटकर बनाने के साथ-साथ उसे नई तकनीकी नये माध्यम के साथ ढाला जा रहा है मूर्तिकारों ने लकड़ी, सीमेन्ट, पेपरवेट, धातु, फाइबर अन्य माध्यमों द्वारा मूर्ति को नई तकनीकी के साथ अद्भुत रूप दिया जो मूक होते हुए भी बहुत कुछ कहती है जो जीवन के अन सुलझे पहलुओं को मानव के सामने प्रस्तुत करती है। मूर्तिकला सौन्दर्य के साथ मानव का जीविका का माध्यम भी रही है। जिस तरह से अलीगढ़ की पीतल की मूर्तियाँ यहाँ के लोगों की जीविका का माध्यम बनी हुई है। यहाँ पीतल की मूर्तियों का काम सन् 1955 से होता आ रहा है। यहाँ बौद्ध व हिन्दू धर्म से सम्बंधित मूर्तियों की अनुकृतियां बनाई जाती हैं। इन मूर्तियों को मूर्तिशिल्पी के द्वारा नहीं बनाया जाता बल्कि यहाँ के आम लोगों के द्वारा ये मूर्तियाँ बनाई जाती है। यहाँ के छोटे-बड़े घरों-गलियों में मूर्तियों को बनाने का काम काफी वर्षों से चला आ रहा है। पीतल की मूर्ति को बनाने से पहले उसका सांचा बनाया जाता है ये सांचा पीली मिट्टी व रेत से बनाकर तैयार किया जाता है। एक साँचे से एक जैसी अनेक मूर्तियाँ ढाली जा सकती हैं। बड़े आकारों की मूर्तियाँ ढालने में कम समय लगता है और छोटे आकार की मूर्ति को ढालने में समय अधिक लगता है। क्योंकि छोटे आकार की मूर्ति के हर भाग का सांचा बनाया जा सकता है। जिसे बनाने से समय व मेहनत दोनों अधिक लगती है। इन मूर्तियों की ढलाई भट्टियों के द्वारा की जाती है। जिसमें मिट्टी के बने सांचे में पिघली हुई पीतल डाली जा सकती है, जो मिट्टी के बने आकार में फैल जाती है। ढलाई के बाद उसके भागों को जोड़ने के लिये वैलडिंग की जाती है। वैलडिंग के बाद हथौड़ी व छैनी से मूर्ति की बरीकी से चिताई के द्वारा उसके हर एक जंग को उभारा जाता है।



## नारी : परिवर्तन की प्रेरणा

सुश्री अदिति भारद्वाज  
कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

“यत्र नार्यस्तुपज्यते, रमते तत्र देवताः”

जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता भी निवास करते हैं। नारी केवल एक शरीर नहीं, एक चेतना है— जो सृजन

जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता भी निवास करते हैं। नारी केवल एक शरीर नहीं, एक चेतना है— जो सृजन करती है, सहती है, और फिर भी मुस्कराती है। इतिहास गवाह है कि जब-जब नारी ने अपनी शक्ति पहचानी है, तब-तब समाज ने नई दिशा पाई है। प्राचीन भारत में गार्गी, मैत्रेयी और रानी लक्ष्मीबाई ने ज्ञान, साहस और आत्मबल का परिचय दिया। वहीं आधुनिक भारत में कल्पना चावला, किरण बेदी, मिताली राज और सुधा मूर्ति जैसी महिलाओं ने दुनिया को दिखाया कि नारी सीमित नहीं, असीमित है। नारी एक माँ है, जो अपने सपनों को त्यागकर बच्चों के सपनों को पालती है। वह एक शिक्षिका है, जो समाज को विचार देती है। वह एक कर्मयोगिनी है, जो घर और बाहर दोनों को संभालती है। लेकिन वास्तविकता यह है कि आज भी कई नारियाँ शिक्षा, सम्मान और अधिकार से वंचित हैं। उनके अस्तित्व को केवल घर की चारदीवारी में बाँधने की कोशिश की जाती है। दहेज, बाल विवाह, घरेलू हिंसा और लैंगिक असमानता जैसे प्रश्न आज भी समाज के सामने खड़े हैं। अब समय है— नारी को केवल सहने वाली नहीं, निर्णय लेने वाली बनाने का। अब समय है— कि उसे सुरक्षा नहीं, सशक्तिकरण दिया जाए। जब एक नारी शिक्षित होती है, तो एक पूरा परिवार उज्ज्वल होता है। जब एक नारी आत्मनिर्भर बनती है, तो एक पूरा समाज प्रगति करता है। नारी को सशक्त बनाना कोई कृपा नहीं, बल्कि एक कर्तव्य है। हमें बेटियों को सिर्फ दहेज नहीं, पढ़ाई, उड़ान और सम्मान देना होगा। नारी केवल “अस्तित्व” नहीं एक “क्रांति” है और वह दिन दूर नहीं जब हर नारी अपने आत्मबल से अपना मुकाम खुद तय करेगी। एक लड़की जो हर सुबह सबसे पहले उठती है, सबका नाश्ता बनाती है, स्कूल जाती है, होमवर्क करती है, और फिर चुपचाप एक सपना देखती है उड़ने का... पर समाज कहता है: तुम लड़की हो, जमीन पर चलो। यही तो है नारी की सच्चाई— सपनों से भरी, पर सीमाओं में बंधी।

“नारी तू आदर्श है, तू ही धर्म का सार,  
तू सहनशीलता की मिसाल है, तू जीवन का आधार ।  
तू माँ है, तू शक्ति है, तू ही सृजन की बीज,  
तेरे बिना अधूरी है हर एक इतिहास की पृष्ठभूमि।”



## भोजपुरी फिल्मों में संगीत

प्रतिभा कुमारी  
शोधार्थी (संगीत विभाग)

संगीत, मानव दृश्य का सूक्ष्म-स्पंदन है। स्वर में असीम शक्ति है। संगीत हो या लोकसंगीत किसी भी मोड़ से गुजरे किसी भी आकार में ढले या किसी भी वर्ग में पले, वह आनन्दमयी ही होता है अर्थात् संगीत के किसी भी ढलान में प्रवेश कीजिए चाहे वहाँ चित्रपट संगीत, लोकसंगीत हो, सुगम संगीत हो, अथवा शास्त्रीय संगीत, निश्चित रूप से आनन्द ही प्राप्त होगा। मानव की हृदयगत भावनाएँ, आनंदित या व्यथित होकर, जब पहाड़ों से निकले झरने की भाँति फूट पड़ती है तब यह स्थिति संगीत आदि कलाओं को जन्म देती हैं।

मानव की बदलती हुए रूची एवं प्रवृत्ति के कारण उपरोक्त कलाओं का जन्म हुआ। उसी प्रकार विज्ञान के आविष्कारों तथा मानव के प्रयासों ने प्राचीन नाट्य कला को चित्रपट के रूप में परिवर्तित कर दिया। यँ तो चित्रपट में विभिन्न कलाओं का समावेश रहता है फिर भी यह एक स्वतंत्र यांत्रिक कला है। चित्रपट, रंगमंच के समान दृश्य एवं श्रव्य कला का एक नवीन स्वरूप है। आज के युग में चित्रपट एक स्वतंत्र नवीन कला के रूप में, मनोरंजन का सर्वाधिक सुलभ साधन के रूप में सम्मुख आया।

समाज का सर्वोपरी मनोरंजन करने वाली कला जिसमें नाट्य और संगीत दोनों ही समाहित थे। चित्रपट संगीत के नाम से जाने जाते हैं। 20 वीं सदी से लेकर अब तक जिस कलारूप कम समय में सबसे ज्यादा हमारे जीवन पर असर डाला है, कह सकते हैं वह चित्रपट है। चूँकि मेरा विषय “भोजपुरी चित्रपट संगीत के लोकगीत” है इसलिए मैं यहाँ भोजपुरी चित्रपट में प्रयुक्त लोकगीत और भोजपुरी चित्रपट पर चर्चा करूँगी। सीधी सरल भाषा में भोजपुरी चित्रपट में प्रयुक्त होने वाली संगीत भोजपुरी चित्रपट संगीत कहलाया परन्तु प्रत्यक्ष में भोजपुरी चित्रपट लोकसंगीत, संगीत की एक अनूठी धारा प्रवाहित हुई, जिसमें बच्चे, बूढ़े, जवान सभी आनंद विभोर होकर डुबकियाँ लगाते रहे हैं अर्थात् भोजपुरी चित्रपट लोकसंगीत, सर्वसाधारण समाज के सभी वर्गों का प्रिय संगीत कहलाया। भोजपुरी चित्रपट गाँव में रहने वाले सीधी-सादी जनता, शहर का पढ़ा लिखा परन्तु शास्त्रीय संगीत से अनभिज्ञ जनमानस या शास्त्रीय संगीत जाननेवाला या नहीं जानने वाला सभी कला प्रेमी के लिए मनोरंजक उत्साहवर्धक तथा चौतन्यपूर्ण समृद्ध संगीत धारा है।

मुझे इस अनूठी धारा ने बचपन से विशेष आकर्षित किया है। इस समय जब यह भी पता नहीं था कि यह गीत किसने लिखा है? अथवा किसने इसका संगीत निर्देशन किया है? तब भी मैं गीत सुनकर गुनगुनाती रहती और मन मस्तिष्क में केवल चित्रपट और गीत दो ही चीजें याद रहतीं। ऐसे समय बीतता गया मैंने कण्ठ संगीत को ऐच्छिक विषय के रूप में लिया। इसी के साथ-साथ धीरे-धीरे भोजपुरी चित्रपट संगीत विशेषताओं से अवगत हुई। इसके बाद मैंने भोजपुरी चित्रपट संगीत की गहराइयों को जानने का मानस बनाया और इस विषय में कुछ कार्य करने का निश्चय किया। चित्रपट और भोजपुरी, चित्रपट में विस्तृत जानकारी जुटाने का यह मेरा प्रथम प्रयास है।



## कथक नृत्य : एक पारम्परिक शास्त्रीय कला

प्रगति अहलावत  
गेस्ट फेकल्टी (संगीत विभाग)

### प्रस्तावना :-

भारत विविधताओं का देश है। जहाँ अनेक कलाएँ जन्मी और विकसित हुई। इन कलाओं में शास्त्रीय नृत्य का विशेष स्थान है। भारत के आठ प्रमुख शास्त्रीय नृत्यों में से एक है, कथक, जो अपनी अभिव्यक्ति, गति और लयबद्धता के लिए प्रसिद्ध है। यह नृत्य मुख्यतः उत्तर भारत में प्रचलित है और अपनी कथावाचन शैली के कारण 'कथक' कहलाता है, जिसका मूल 'कथा' शब्द से जुड़ा हुआ है।

### इतिहास और उत्पत्ति:-

कथक की उत्पत्ति प्राचीन मंदिरों में हुई, जहाँ कथावाचक नर्तक भगवान की लीलाओं का मंचन करते थे, प्रारम्भ में यह एक धार्मिक नृत्य था जो भगवान कृष्ण और राम की कथाओं को नृत्य रूप में प्रस्तुत करता था।

मुगलकाल में यह दरबारों में लोकप्रिय हुआ और इसमें नवाबी ठाठ-बाठ, भाव-भंगिमा और सौंदर्य का समावेश हुआ। इस काल में कथक एक प्रदर्शनकारी कला के रूप में विकसित हुआ।

### कथक का अर्थ:-

कथक शब्द 'कथा' से बना है, जिसका अर्थ है- कहानी।

- कथक की प्रमुख विशेषताएँ:-
- तेज चक्रकार घूम (स्पिन)
- घुंघरूओं की लयबद्ध आवाज
- ताल और लय का सटीक ज्ञान
- भाव (अभिनय) का सूक्ष्म उपयोग
- कथानक आधारित प्रस्तुति

इसमें नर्तक अपने पैरों में बंधे घुंघरूओं की सहायता से ताल और लय को दर्शाते हैं। इसकी प्रस्तुति में दो भाग होते हैं-

(1) नृत्त (Pure Dance)- जिसमें केवल ताल, लय और गति होती है।

(2) नृत्य (Expressive Dance)- जिसमें भाव अभिनय और कथा का समावेश होता है।

कथक के घराने:- कथक के प्रमुख तीन घराने हैं-

- लखनऊ घराना:- भावनात्मक और नजाकत के लिए प्रसिद्ध।
- जयपुर घराना:- जोरदार याद संचालन और तकनीकी दक्षता के लिए जाना जाता है।
- बनारस घराना:- इसमें अभिनय और भावनाओं का विशेष स्थान है।

### प्रसिद्ध कथक कलाकार:-

कथक नृत्य को विश्व मंच पर पहचान दिलाने वाले अनेक महान कलाकार हुए हैं, जिनमें प्रमुख हैं-

पण्डित बिरजू महाराज:- लखनऊ घराने के प्रसिद्ध गुरु और कलाकार।

सितारा देवी:- जिन्हें 'कथक की रानी' कहा जाता है।

कुमुदिनी लाखिया:- आधुनिक कथक को नया दृष्टिकोण देने वाली कलाकार।

शंभु महाराज:- कथक नृत्य शैलियों से जुड़े एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व थे।

### वर्तमान में कथक—

आज कथक नृत्य भारत ही नहीं, बल्कि विश्वभर में सराहा जा रहा है। विभिन्न संस्थानों, अकादमियों और विश्वविद्यालयों में यह पढ़ाया जा रहा है। युवा पीढ़ी भी इस प्राचीन कला को नए रूप में प्रस्तुत कर रही है, जिसमें पारंपरिक शैलों के साथ-साथ नवाचार और प्रयोग शामिल है।

**निष्कर्ष:—** कथक नृत्य केवल एक नृत्य नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और परम्परा का जीवन रूप है। यह हमारी पौराणिक कथाओं, धार्मिक आस्था और कला प्रेम का प्रतीक है। समय के साथ इनके अनेक रूप बदले, पर उसकी आत्मा आज भी उतनी ही जीवंत और प्रभावशाली है।

## स्वतंत्र भारत में संगीत की प्रगति

अंजली  
गेस्ट फेकल्टी (संगीत विभाग)

सन् 1947 में स्वाधीनता प्राप्त करने के पश्चात देश ने चैन की सांस ली। डेढ़ सौ साल की गुलामी सहन के व सारी बंदीशें टूटने के बाद जन साधारणों में एक नई लहर उत्पन्न हुई। स्वाधीनता के सुप्रभात में नई उमंगों व नए विचारों ने जन्म लिया। इस क्षेत्र के प्रत्येक भाग में ललित कलाओं-साहित्य और संगीत में लोगों की रूचि बढ़ी।

भारत की संगीत परम्परा अत्याधिक प्राचीन है। स्वयं ब्रह्मा जी ने इसे सामवेद में मुखरित किया है। कला प्रेमी मुगलों के शासनकाल में संगीत का परमार्जित रूप सभी को समझ आया। मध्य युग के अन्तिम चरण से व अंग्रेजों के शासन काल के अन्त तक संगीत मुख्यतः पतन की ओर झुका रहा। 19 वीं शताब्दी के अन्त में देश में राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू हो गया था और जनता अपनी संस्कृति व परम्परा को पहचान चुकी थी। स्वाधीनता से पूर्व भारत के कुछ विश्वविद्यालयों ने संगीत को अपने पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति से इस भावना को प्रेरणा व ताकत मिली तथा साहित्य, कला व संगीत आदि के विकास के लिए सरकार व जनता ने मिलकर प्रयास किया। पिछले 20 वर्षों में अनेक संगीत विद्यालय खुले हैं व उनमें संगीत सीखने वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई। संगीत को सर्वसाधारण में उच्चकोटि पर पहुँचाने तथा उसका प्रचार प्रसार करने में भी विष्णु दिगम्बर पलुस्कर और श्री विष्णु नारायण मातखण्डे ने प्रशंसनीय कार्य किया।

स्वाधीनता के बाद हमारी सरकार ने जो इस कला के विकास में सक्रिय भाग लिया उसका जीता जागता उदाहरण अखिल भारतीय आकाशवाणी ने शास्त्रीय संगीत को ऊँचाइयों पर लाने के भरकस प्रयास किए हैं।

शिक्षा का दृष्टिकोण बदलने से अब गुरु शिष्य परम्परा भी खत्म हो रही है उनका स्थान विद्यालयों व पाठ्य पुस्तकों ने लिया है।

संगीत विद्यालयों से ..... आवश्यक हुआ है। जहाँ यह उच्च कोटि कलाकार देन में असमर्थ है, वहीं इन्होंने संगीत में थोड़ी बहुत जानकारी व रूचि रखने वाला श्रोतावर्ग अवश्य पैदा किया है।

स्वतन्त्र भारत में संगीत की प्रगति कलाकार व शास्त्रकार के आपसी सहयोग पर निर्भर हैं भविष्य में कलाकारों को शास्त्र व कला दोनों क्षेत्रों में निपुण होना होगा।



## श्रुति

गरिमा

एम०ए० द्वितीय वर्ष (संगीत विभाग)

**श्रुति:—** वह छोटे से छोटा नाद जो संगीतोपयोगी हो, स्पष्ट और अलग सुना और समझा जा सके श्रुति कहलाती है।

“श्रुयतेति श्रुति” इस प्रकार है। संस्कृत में ‘श्र’ का अर्थ सुनना है अतः श्रुति का अर्थ है सुना हुआ। इसी प्रकार जो कानों से सुनी जाए वही श्रुति है।

भारतीय संगीत का मूल आधार श्रुति को माना जाता है इस श्रुति को पाश्चात्य संगीत में माइक्रोटोन कहा जाता है।

**महर्षि भरत कृत के अनुसार :-** महर्षि भरत कृत ने अपने ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में श्रुति को संगीत का मूल आधार माना जाता है। महर्षि भरत ने अपने ग्रन्थ में श्रुति की व्याख्या नहीं की है अपितु केवल इतना कहा है कि श्रुति केवल 22 हैं।

**कोहल के अनुसार :-** कोहल ने अपने ग्रन्थ में कोहलम् में 66 श्रुति की चर्चा की है। मन्द्र, मध्य, तार सप्तक तीनों की 22-22 श्रुतियाँ बताई हैं।  $22 \times 3 = 66$  हो जाती है। अतः विद्वानों ने हर श्रुति को अलग-अलग नाम दिए हैं।

### 22 श्रुतियाँ:—

- |               |              |             |             |             |
|---------------|--------------|-------------|-------------|-------------|
| 1. तिव्रा     | 2. कुमुदती   | 3. मन्दा    | 4. छन्दोवती | 5. दयावती   |
| 6. रजनी       | 7. रक्तिका   | 8. रोद्री   | 9. क्रोधा   | 10. वज्रिका |
| 11. प्रसारिणी | 12. प्रिति   | 13. मार्जनी | 14. क्षिती  | 15. रक्ता   |
| 16. संदीपनी   | 17. आलापनी   | 18. मन्दती  | 19. रोहिणी  | 20. रम्भा   |
| 21. उग्रा     | 22. क्षोभिणी |             |             |             |

### श्रुति के प्रकार:—

1. अन्तरगत श्रुति
2. स्वरगत श्रुति

### श्रुति की जाति:—

श्रुति की पाँच जातियाँ हैं—

1. दीप्ता
2. आयता
3. करुणा
4. मृदु
5. मध्या

### श्रुति की विशेषता:—

1. श्रुति वह है जो पहचानी जा सके।
2. श्रुति वह है जो प्रयुक्त की जा सके।
3. श्रुति भावभिव्यक्ति में समर्थ है।
4. श्रुति स्पष्ट रूप से सुनाई देना चाहिए।
5. श्रुति स्वर की तारता नापने का मापदण्ड है।
6. ध्वनि का सूक्ष्म भाग श्रुति है।



## सर्वांगीण विकास में एन०सी०सी० की भूमिका

मानसी  
बी०ए० प्रथम वर्ष

NCC एक ऐसी संस्था है जो अपने कैडेट्स के सम्पूर्ण विकास के लिए सदा से प्रयासरत रही है। अपने कैडेट्स के व्यक्तित्व के विकास के लिए NCC समय-समय पर अनेक प्रतियोगिताएँ, गायन प्रतियोगिता और नृत्य प्रतियोगिताएँ आदि। इस तरह की प्रतियोगिताएँ कैडेट्स के अन्दर छिपी प्रतिभाओं को बाहर निकालती है तथा उनका विकास होता है। इसके साथ ही NCC ट्रेनिंग कैडेट्स को शारीरिक रूप से मजबूत संस्कृत, नम्रभाषी, निडर तथा एक सच्चा तथा अच्छा नागरिक बनाती है। इस प्रकार अपने कार्यक्रमों द्वारा NCC कैडेटों को हर प्रकार से सर्वश्रेष्ठ बनाने के प्रयत्न करती है। NCC की ट्रेनिंग छात्रों को शारीरिक रूप से किसी भी परिस्थिति को सहन करने लायक बनाती है तथा वह ट्रेनिंग छात्रों को अनेक प्रकार के कार्य जैसे शूटिंग, पैराग्लाइडिंग, नौकापन आदि सिखाती तथा अनुभव करवाती है, जिससे कैडेट्स के ज्ञान में वृद्धि होती है इसी के साथ ही NCC के कैम्पस के दौरान जब कैडेट्स कई दिनों घर परिवार दूर दूसरे शहरों में रहते हैं, तो उनमें सामाजिक भावना विकसित होती है तथा वे स्वयं के सभी कार्य स्वयं करने के आदि भी बनते हैं। NCC ट्रेनिंग के दौरान कई धर्मों, जातियों तथा राज्यों के कैडेट्स एक जगह एकजुट होकर कार्य करते हैं इस प्रकार NCC के द्वारा कैडेट्स में एकता तथा अनुशासन की भावना भी विकसित होती है। अतः इस प्रकार NCC कैडेट्स के शारीरिक मानसिक तथा सामाजिक विकास में अहम योगदान देती है।

कैडेट्स के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास में एन०सी०सी० की भूमिका— व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में एन०सी०सी० की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में पाठ्यक्रम पर आधारित शिक्षा की अपेक्षा शिक्षणेत्तर गतिविधियाँ अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वर्तमान समय में ये गतिविधियाँ है, एन०सी०सी०, एन०एस०एस०, रेंजर्स/रोवर्स आदि।

एन०सी०सी० व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में विशेष भूमिका निभाती है। एन०सी०सी० बच्चों में नेतृत्व की भावना जाग्रत करती है वह उनमें चरित्र निर्माण मैत्री-भाव, खेल भावना अनुशासन निस्वार्थ की भावना पैदा करती है। एन०सी०सी० में समय-समय पर कैम्प जाते रहते हैं जिससे बच्चों में तरह-तरह के वातावरण या परिस्थिति में अपने आपमें सामंजस्य स्थापित कर लेता है। ये कैम्प दस से बारह दिन के होते हैं, जिनमें उनके स्थानों, प्रदेशों से कैडेट आते हैं तथा वे सभी एक ही स्थान तथा एक ही छत के नीचे रहते हैं और बिना किसी भेदभाव के एक साथ मिलकर रहते हैं। सभी कैडेटों को एक ही जैसा खाना, कपड़े, पठन-पाठन की सामग्री दी जाती है। एन०सी०सी० बच्चों में कोई भेदभाव नहीं करती। चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, वर्ग का हो।



सौरभ : 2024-2025

## एन०सी०सी०



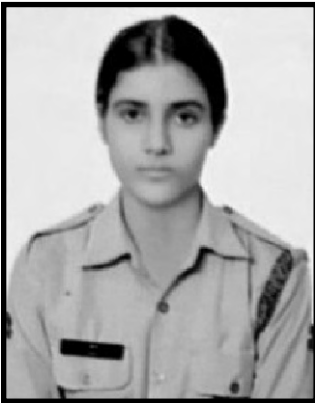
SUO. Annu



CPL. Anushka Adhana



CPL. Prachi Kalsyan



CPL. Prachi



CPL. Pragya Sharma



CPL. Priyanshi Rana



CPL. Tannu

# कला संकाय की झलकियाँ



# कला संकाय की झलकियाँ



# विज्ञान संकाय



# विज्ञान संकाय



Meerut, Uttar Pradesh, India  
XPP5+P85, Begambagh, Meerut, Uttar Pradesh 250001, India  
Lat 28.98692°

# वाणिज्य संकाय



Meerut, Uttar Pradesh, India  
XPP5+PHV, Chaubey Compound, near RG Degree College, Begambagh, Meerut, Uttar Pradesh 250001, India  
Lat 28.987133°



Meerut, Uttar Pradesh, India  
Xpp5+phv, Chaubey Compound, Near Rg Degree College, Begambagh, Meerut, Uttar Pradesh 250001, India



Meerut, Uttar Pradesh, I...  
476, Budha Vihar, Subhash Nagar, Meerut,  
Uttar Pradesh 250001, India  
Lat 28.987133° Long 77.708970°



Meerut, Uttar Pradesh, India  
Xpp5+phv, Chaubey Compound, Near Rg Degree College, Begambagh, Meerut, Uttar Pradesh 250001, India  
Lat 28.987133° Long 77.708970°

# शिक्षा संकाय

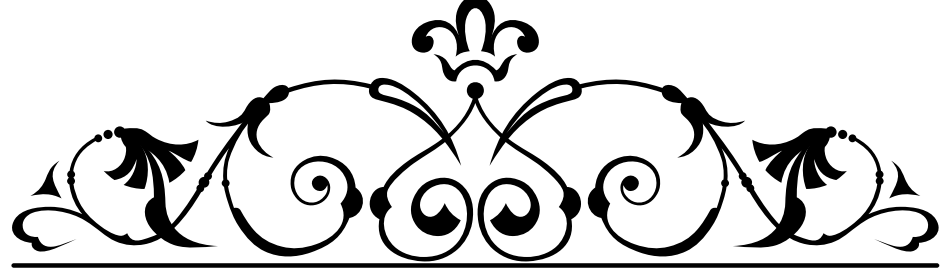




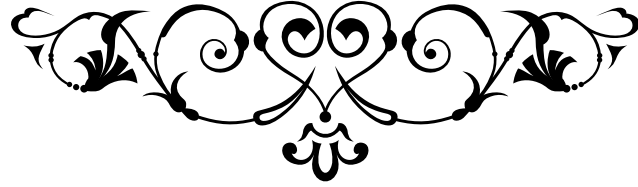
# रेंजर्स एवं एन०एस०एस०



सौरभ : 2024-2025



# संस्कृत विभाग



गायन्ति देवाः किल गीतिकानि  
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे ।  
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते  
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥

विष्णुपुराणे 2.3.24.

## सम्पादकीयः

महद्राष्ट्रे भारतेऽस्मिन् सनातनी, शाश्वती महती ज्ञानपरम्परा प्रवहति। इयं परम्परा न केवलं विविधशास्त्राणां, दर्शनस्य, व्याकरणस्य, गणितस्य, आयुर्वेदस्य च ज्ञानं वहति, अपितु जीवनस्य सार्थकतां याथार्थ्यं नैतिकमूल्यानि च जनानां हृदये पोषयति।

भारतीयज्ञानं न केवलं पुस्तकेषु सीमितम्, अपितु व्यवहारेऽपि सुगुम्फितम्। 'सा विद्या या विमुक्तये'- इयं उक्तिः सूचयति यत् विद्या न केवलं जीविकोपार्जनाय अपितु आत्मविकासाय मोक्षाय च उपयोगिनी अस्ति। वेदोपनिषत्पुराण-गीतारामायणमहाभारतादयः सर्वेऽपि न केवलं धार्मिकदृष्ट्या अपितु सामाजिकव्यावहारिकतात्त्विकदृष्ट्यापि शिक्षां ददति। भारतवर्षस्य वैदिकऋषयः, दार्शनिकाचार्याः, आदिगुरुशङ्कराचार्यः पतञ्जलिचरकार्यभट्टभास्कराचार्यादयो विज्ञानं गूढज्ञानञ्च अददुः। तेषां चिन्तनम् अनुशासनञ्च अद्येऽपि विश्वे प्रशंसामाप्नोति। अनेन ज्ञायते यद् भारतं न केवलं संस्कृतिपरम्परायाः केन्द्रम् अस्ति, अपितु विज्ञानस्य, तत्त्वज्ञानस्य, आदिज्ञानस्य च महत्केन्द्रम् अपि अस्ति।

आधुनिकयुगे पुरातत्त्वज्ञानां कृते इयं ज्ञानपरम्परा अतीव प्रासङ्गिका अस्ति। द्रुतगामिजीवनप्रणाली स्पर्धाप्रधान-मानसिकसंतापात् मनोदौर्बल्यं ददाति। ईदृशीपरिस्थित्यां भारतीयज्ञानपरम्परा जीवनप्रबन्धनस्य शिक्षां ददाति। योगध्याननैतिकमूल्यैश्च मनोबलं प्रददाति।

अस्मदीया ज्ञानपरम्परा अद्वितीया अनुपमा च। इयं परम्परा सततगमनीया अनुकरणीया च। एतत्कृते भारतीयदर्शनं योगः आयुर्वेदः सङ्गीतशिल्पनाट्यकलादयो न केवलं पाठ्यक्रमे पाठनीयाः अपितु प्रयोगमाध्यमेन, प्रायोगिकरूपेणापि शिक्षणीया। अनया शिक्षया छात्राः शारीरिकमानसिकबलं प्राप्स्यन्ति तथैव च नैतिकबलमपि। भारतीयज्ञानपरम्परायाः गौरवगानमेव पर्याप्तं न, तस्याः परम्परायाः पालनमपि आवश्यकम्। इयं परम्परा एव विश्वगुरोः भारतस्य मूले विद्यते। अनया परम्परया एव वयं स्वगौरवं पुनर्स्थापयितुं शक्नुमः। अस्माकं प्राचीनज्ञानेन वर्तमानकालिकप्रयासैश्च भारतं विश्वगुरोः गौरवपदेन सम्मानितं भवति।

एषा विद्यालयीया पत्रिका केवलं रचनासंग्राहिका नास्ति, अपितु अस्माकं सांस्कृतिकबिम्बमपि अस्ति। मन्ये सौरभस्य विशेषाङ्कः पाठकेषु भारतीयज्ञानपरम्परायाः विषये गौरवमयचिन्तनं सह जिज्ञासामपि वर्धिष्यते।



प्रो० पूनम लखनपाल  
संस्कृतविभागे

## नारदपुराणे भक्तिस्वरूपम्

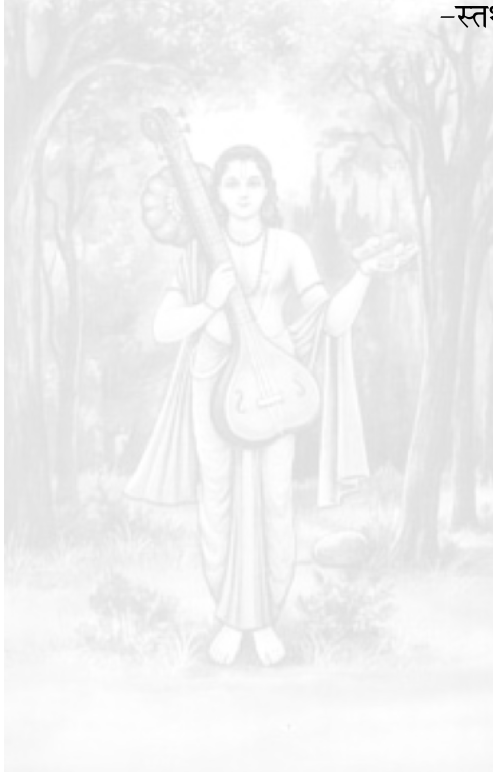
प्रो० पूनम लखनपाल  
संस्कृतविभागे

गणेशदेवं विबुधान् च सज्जनान्  
गुरुं च नत्वा सद्ने प्रमोदतः।  
मुदैव भक्त्याः सुखदं स्वरूपतः  
स्वशोधपत्रं पठतीह पूनमा ॥1॥

जलं विवस्वान् भुवि जीवजीवनं  
यथैव पृथ्वी शरणं जनाय च।  
तथैव लोके ननु साधना सदा  
विशेषसिद्धयेः हि सिध्यतीव सा ॥2॥

विनैव भक्त्या भुवि दानकर्म य-  
- द्विभाति शून्यं तपसाधनाफलम्।  
तथैव विष्णुर्गुरुडध्वजः प्रभुः  
हृदा तया हृष्यति नैव सत्प्रभुः ॥3॥

विभान्ति भक्तैः सततं नु भक्तिदा-  
-स्त्रिधैव कल्याणकरा नु विष्टपे ।  
सदा हि सा भक्तिरिहा न सङ्गति-  
-स्तथा तितिक्षा प्रभुदर्शनाय ताः ॥4॥



चकास्ति भक्तिः सगुणेह निर्गुणा  
ददाति मोक्षं तपसाऽत्र मोदतः।  
पुनः स्वरूपैर्दशधा विभाजिता  
शुभा कृतान्तेन भगीरथाय च ॥5॥

त्रिधा हि सा सत्त्वरजस्तमोमयी  
पुनस्त्रिधा चोत्तममध्यमाधमा।  
गुणानुरूपा नवधा विराजते  
पुनः परा भक्तिरथोत्तमोत्तमा ॥6॥

प्रकाशते सा फलदायिनी स्वयं  
विभासते विघ्नविनाशिनी यथा ।  
तथा हि नारायणभक्तिदा शुभा  
समोक्षभावा दशधा सरत्यहो ॥7॥



## संस्कृतगानम्

स्वीटी

एम० ए० द्वितीयवर्षस्य

भारतीयैकतासाधकं संस्कृतम्  
भारतीयत्वसम्पादकं संस्कृतम्  
ज्ञानपुञ्जप्रभादर्शकं संस्कृतम्  
सर्वदानन्दसन्दोहदं संस्कृतम् ॥ 1 ॥

सर्वमस्तिष्कसंस्कारकं संस्कृतम्  
सर्ववाणीपरिष्कारकं संस्कृतम्  
सत्पथप्रेरणादायकं संस्कृतम्  
सद्गुणग्रामसन्धायकं संस्कृतम् ॥ 2 ॥

विश्वबन्धुत्वविस्तारकं संस्कृतम्  
सर्वभूतैकताकारकं संस्कृतम्  
सर्वतः शान्तिसंस्थापकं संस्कृतम्  
पञ्चशीलप्रतिष्ठापकं संस्कृतम् ॥ 3 ॥

त्यागसन्तोषसेवाव्रतं संस्कृतम्  
विश्वकल्याणनिष्ठायुतं संस्कृतम्  
ज्ञानविज्ञानसम्मेलनं संस्कृतम्  
भुक्तिमुक्तिद्वयोद्वेलनं संस्कृतम् ॥ 4 ॥

धर्मकामार्थमोक्षप्रदं संस्कृतम्  
ऐहिकामुष्मिकोत्कर्षदं संस्कृतम्  
कर्मदं ज्ञानदं भक्तिदं संस्कृतम्  
सत्यनिष्ठं शिवं सुन्दरं संस्कृतम् ॥ 5 ॥

“सोऽहमस्मीति”निश्चायकं संस्कृतम्  
“त्वं तदेवेति” सङ्गायकं संस्कृतम्  
एकमेवाद्वयं बोधकं संस्कृतम्  
सर्वदा सत्यसंशोधकं संस्कृतम् ॥ 6 ॥

शब्दलालित्यलीलावनं संस्कृतम्  
चारुमाधुर्यधारागृहं संस्कृतम्

विश्वचेतश्चमत्कारकं संस्कृतम्  
पूर्वजानां यशःस्मारकं संस्कृतम् ॥ 7 ॥

नगरे नगरे ग्रामे ग्रामे विलसतु संस्कृतवाणी  
सदने सदने जनजनवदने जयतु चिरं कल्याणी ।  
सत्यशीलसौन्दर्यसमीरा, ज्ञानजला, गतिसारा  
छल-छल कल-कल प्रवहतु दिशि दिशि  
पावनसंस्कृतधारा ॥ 8 ॥

## मेघाः आगताः

जय श्री

बी० ए० तृतीयवर्षस्य

गौराः - गौराः, कृष्णाः - कृष्णाः,  
मेघाः आगताः चमत्कारिणः।

कुक्कुरः धेनुः

गजः तुरङ्गः

अथ कदाचित्

हंसयुगलम्

उत भूत्वा वन्यमहिषाः

धाविष्यन्ति सम्भूय उन्मत्ताः।

क्षणे आयान्ति

क्षणे गच्छन्ति

मासेषु न दृश्यन्ते।

अपि च कदाचित् तिष्ठन्ति एवम्

सप्ताह पर्यन्तं न गच्छन्ति।

कदाचित् गर्जन्ति, कदाचित् वर्षन्ति।

इन्द्रधनुषः वर्णाः प्रसरन्ति

कृत्वा कदाचिच्च करकावृष्टि

त्रोटितवन्तः काचान् चषकान्।



## गङ्गागाथा

शिखा त्यागी  
शोधच्छात्रा

अस्माकं भारतो देशः प्रसिद्धो धर्मसम्मतः ।  
मन्त्रद्रष्टृगणो नित्यं यशो गायन्ति यस्य हि ॥ 1 ॥

मम देशे नदी दिव्या गङ्गा वहति सर्वदा ।  
शीतलं नु जल यस्याः पातुमिच्छाम्यहं मुदा ॥ 2 ॥

दिव्याऽथ जलपूर्णा या सर्वपापविनाशिनी ।  
अमृतञ्च जलं यस्याः स्वभक्तान्पाति सा सदा ॥ 3 ॥

न्यवसद्देवलोके या गिरिमायाति सा ततः ।  
शङ्करस्य जटायां च वासो यस्याः सदैव हि ॥ 4 ॥

गामायाता ततो नूनं गङ्गा गङ्गेति पावनी ।  
सर्वेषां नु मनुष्याणां सर्वकष्टान्दृणाति सा ॥ 5 ॥

शङ्करस्य जटाभ्यां या पृथ्वीमायाति शोभना ।  
तदनन्तरमायाति सा प्रयागं शुभा नदी ॥ 6 ॥

प्रसरति सरिदच्छा साधु गङ्गा पवित्रा  
मनसि वसति देवी भुक्तिमुक्तिप्रदा या ।  
हरति सकलपापं स्वर्गलोकप्रदात्री  
सरति शुभगतिः सा हैमकूटात्समुद्रम् ॥ 7 ॥

सरभससरसेयं विश्रुता मृत्युलोके  
सरिदियमतिपूता श्रेष्ठतीर्थार्थदात्री ।  
सततमिह तु यस्यां सुन्वते देवताश्च  
ह्यविरललहरीभिः सा हि भक्तेभ्य एवम् ॥ 8 ॥

सलिलसुफलदा या यज्ञजन्यं च पुण्यं  
वितरति विचरन्ती स्तन्यपानं यथाऽम्बा ।  
प्रतिमुणति तु तद्वद्दर्शनात्स्पर्शनाच्च  
प्रकटयमुनया सा तीर्थराजे प्रयागे ॥ 9 ॥

सरलमुनिवरा ये श्रेष्ठतीर्थे वसन्ति ।  
स्वगुणगणयुतास्तेऽलौकिकत्वं भजन्ते ।  
ऋषिमुनिजनभूमौ ते नु कुर्वन्ति वासं  
कठिनपुरुषयोगैस्त्यक्तकामा भवन्ति ॥ 10 ॥

## आचार्यः देवो भव

वंशिका मित्तल  
बी० ए० प्रथमवर्षस्य

किम् अस्ति तत् पदम्  
यः लभते इह सम्मानम्  
किम् अस्ति तत् पदम्  
यः करोति देशानाम् निर्माणम्  
किम् अस्ति तत् पदम्  
यम् कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम्  
किम् अस्ति तत् पदम्  
यस्य छायायाः प्राप्तम् ज्ञानम्  
किम् अस्ति तत् पदम्  
यः रचयति चरित्रं जनानाम्  
'गुरु' अस्ति अस्य पदस्य नाम  
सर्वेषाम् गुरुणाम् कृते मम शत शत प्रणामः ॥



## अन्धकासुरवधकथा

भारती रानी  
शोधच्छात्रा

पौराणिक्यो विमलमधुराः साधिताश्चान्धकस्य ख्याता प्रेम्णा प्रथितमहिता श्रेष्ठदैत्यस्य गाथा ।  
अस्मिन् कक्षे सरलसदने भारतीयं स्ववाण्या मञ्चात् गीतां स्वरलयचरीं तां कथां गायतीह ॥  
काले काले जगति बहवो दानवाः भासमाना गर्वोन्मत्ता ह्यमरपिवस्ते स्वदुष्टस्वभावात् ।  
दृष्ट्या हीनोऽसुरकुलमणिर्योऽन्धको नामधेयः शम्भोः पुत्रः प्रथित इह यः स्वेदजः स प्रसूतः ॥  
भक्त्या प्रेम्णा विहितमनसा नेत्रहीनस्य दैत्यः प्राप्तुं दृष्टिं तपसि विवशः सोऽत्र लग्नस्तपस्वी ।  
त्यक्तैश्वर्यो ऋषिमुनिनिभस्तापसो भाति शीघ्रं भावैः शिव इह मुदा भाति तस्येह पाश्वे ॥  
प्रातः सूर्योऽपनयति यथा ह्यन्धकारं स्वदीप्यता तद्वच्छम्भूर्हरति च तमो नेत्रयोस्तस्य शीघ्रम् ।  
दृष्टिं प्राप्य प्रबलमतिको हर्षयुक्तः प्रसिद्धः सानन्दोर्हि त्वरितगतिकः कूर्दते नृत्यभावैः ॥  
जित्वा लोकं तत इह मुदा ह्यन्धको मूढचितस्त्रैलोक्याढ्यो लसति समुदं चेन्द्रसिंहासने हि ।  
गर्वोन्मत्तो मनसि सततं रागभावैर्विलासैर्मोहान्धोऽसौ जगति रमते स स्वनाम्नेवधन्यः ॥  
भार्या प्राप्तुं प्रबलमतिकः सुन्दरीं प्रेमपूर्णा सौन्दर्यास्यं स्वररवमुदं दिव्यमूर्तिं सुशुभ्राम् ।  
त्रैलोक्यां या कमलवदना पार्वती श्रेष्ठरम्या ज्ञात्वा ह्येवं चलति समुदं पर्वतं तं हिमाद्रिम् ॥  
रम्या श्रेष्ठा निवसति मुदा यत्र शम्भोर्हि पाश्वे दीर्घे नेत्रे चपलचकिते पूरिते प्रेमभावैः ।  
यस्या वक्त्रं कमलसदृशं शोभनं कान्तियुक्तं कैलासे सा हिमगिरिसुता राजते गौरवर्णा ॥  
दर्शं दर्शं कमलनयनामन्धकः पार्वतीं तां प्राप्तुं गौरीं प्रणतमनसा प्रेमभावं व्यनक्ति ।  
तं श्रुत्वा सा खलु भययुता याति शम्भोर्हि पाश्वे वार्तां सर्वां घटितघटनां संवदन्ती विनीता ॥  
पातुं भार्या सपदि सहसा रोषयुक्तः शिवोऽयं हन्तुं दैत्यं सरति ननु तं रौद्ररूपेण सद्यः ।  
कामान्धोऽसौ जडमतियुतश्चान्धकः कामयुक्तो दैत्यो ह्येवं सपदि नु हतः शम्भुना मोदतो हि ॥



## दधीचिकथा

अनीका गोला  
शोधच्छात्रा

भव्यौ पितरौ नु यस्य मोदैर्नित्यं स्वयं वसतो हिमाद्रिभागे ।  
सोऽयं हि गजाननोऽत्र मञ्चे भक्त्याऽनिका नमतीह तं गणेशम् ॥  
पुष्पै रुचिरा यथैव माला गोष्ठी विभाति तथैव कोविदैर्नः ।  
गोष्ठीं ननु तां तथा बुधांस्तान् प्रेम्णाऽनिका नमतीह मोदमाना ॥  
हे भीष्म मया शृणोतु गीतां गायामि तामिह वृत्रजां कथां हि ।  
प्राचीनयुगे जिता नु दैत्या युद्धेन ते ह्यतिदुर्मदाः समस्ताः ॥  
वृत्रस्य हि दारुणा गणा ये साक्षान्नु कालनिभाश्च राक्षसास्ते ।  
शस्त्रैर्महितैर्नु ते कराला रौद्राः श्रिता असुरस्य ते प्रियाश्च ॥

सर्वे ननु शत्रवः सुराणां युद्धे रताः सकलाः कलासमेताः ।  
त्रस्ताश्च सुपीडिता हि देवा वृत्रासुरस्य वधाय चेष्टमानाः ॥  
नित्यं चतुराननः प्रशस्यो यः कथ्यते जगतः पिता नु भव्यः ।  
नेतारमिमं नु वासवं यश्चित्त्वा प्रसन्नमना बभूव देवैः ।  
गत्वा खलु तत्र दुःखिता ये ध्यानैर्युता नु तथैव याचकास्ते ।  
हस्ताञ्जलिभिर्यथा हि सेना स्तुत्यां रताः सकलास्तथा हि जाताः ।  
सर्वज्ञ इहास्ति यो विधाताऽवोचन्नु देवगणं स तत्त्वदर्शी ।  
वृत्रस्य वधः कथं हि देवैः शीघ्रं भविष्यति दुष्करः प्रकामम् ।

अत्यन्तमहान् महर्षिरेको ख्यातो दधीचिरयं तपप्रपुणेः ।  
सर्वे खलु तस्य पार्श्वभूतास्तं प्रार्थयन्तु समेऽस्थिवज्रमिद्धा ॥  
सिद्धो जगतीह यो महात्मा लोके सदैव तथा स दानशीलः ।  
ज्ञात्वा भवतां हि कार्यहेतुं प्रेम्णा स दास्यति सद्द्वरं हि तेभ्यः ॥  
श्रुत्वैव हृदा सुराः प्रसन्नाः पार्श्वे गताः सपदीह ते दधीचः ।  
याच्याऽस्थिकृते कृता च तैर्या दत्तं नु तेन नुतेन सद्य एव ॥  
श्रुत्वा खलु याचनां नु तेषां यो दानशील ऋषिर्ह्यभीष्टभावः ।  
त्यक्त्वा नु वपुः स लोकहेतोस्त्यागी मुनिः प्रथितो जनैर्महर्षिः ॥  
चित्त्वा ह्यमरा नु कीकसानि त्वष्टारमेत्य समे मनः समूचुः ।  
यत्नैः खलु निर्मिणोतु वज्रं येनात्र तस्य वधो भवेत् सुरारेः ॥



## कौतूहलप्रहेलिका:

तनिया आर्या  
एम० ए० द्वितीयवर्षस्य

1. कुट्टिता भवामि पिष्टा भवामि,  
करोमि भोजनं कटुकम्।  
भोजने चेत् अधिका  
तर्हि निसृता भवेत् मुखात् सी-सी ।  
नेत्रात् घ्राणात् निस्सरेत् जलम्,  
कष्टम् अनुभूयात् खादित्वा ।  
चिन्तय चिन्तय का अस्मि अहम्,  
वदतु भो: ! का अस्मि अहम् ?
2. कुट्टयते इयं, पिष्यते इयम्,  
भोज्ये पीतवर्णम् आनये  
सार्षपे सम्मिश्र्य मां वै  
व्रणे लेपनात् शान्तिर्भवति ।  
सर्वेषां पीडां विनश्य  
सर्वेषां प्रिया अस्मि अहम् ।  
चिन्तय का अस्मि अहम्,  
वदतु भो: ! का अस्मि अहम् ?
3. कृष्णमुक्तिका इव अहम् अस्मि  
लघ्वी गोलाकारयुक्ता अस्मि  
पिष्टा वा न्यूनपिष्टा वा  
तीक्ष्णः स्वादः मम अस्ति ।  
मधुरे वा लवणस्य भोज्ये  
उभयोः अहं पतामि  
विचारयतु का अस्मि अहम्,  
वदतु भो: ! का अस्मि अहम् ?
4. कृशः अस्मि, लघु अस्मि  
पिङ्गलः च कृष्णः अस्मि  
उष्णे घृते, तैले च निपत्य  
सुगन्धिं च करोमि वै  
दध्नि तथा जलजीरके वा  
भृज्जयित्वा पतामि  
विचारयतु का अस्मि अहम्,  
वदतु भो: ! का अस्मि अहम् ?
5. हरितः अस्मि जीरकवत् च  
पाचनशक्तिं वर्धयामि  
भोजनानन्तरं खादन्ति माम्  
मुखस्य स्वादं वर्धयामि  
का अस्मि अहम्  
विचारयतु का अस्मि अहम्  
वदतु भो: ! का अस्मि अहम् ?
6. कीलकवत् दृश्ये अहम्  
किन्तु अहम् एका कलिका अस्मि  
तीव्रसुगन्धिः मम अस्ति  
दन्ते पीडा जाते सति  
मां स्थाप्यते दन्ते  
चिन्तय का अस्मि अहम्,  
वदतु भो: ! का अस्मि अहम् ?

- समाधानम्—
- |           |                    |                |
|-----------|--------------------|----------------|
| 1. मरिचम् | 2. हरिद्रा         | 3. कृष्णमरिचम् |
| 4. जीरकम् | 5. शतपुष्पा (सौंफ) | 6. लवङ्गः      |



## जयगाथा

दिव्या

एम० ए० द्वितीयवर्षस्य

गृहे प्रविश्य हतवान् स्म विजयगाथा नुनादीताम् ।  
 शत्रूणां कम्पिता नीवं नृत्यन्ति रणबांकुराः ॥  
 यो याचते प्रमाणानि तं पृच्छत मिषैलकान् ।  
 शौर्यनिनादे सत्यदीपो विलीनः तमसाविव ॥  
 भारतजननीवीरैः नवइतिहासः रचितः ।  
 शत्रून् हत्वा लघुकाले प्रकाशः संजातः ॥  
 गद्दाराणां खनिता कब्रं, नास्त्यधुना तेषां स्थलम् ।  
 यो भारते गद्याम् अधिरूढा, तज्ज्येष्ठं मोदीनामकम् ॥  
 सीमा ज्वलति दग्धा, वीरसैनिकेषु हर्षः वृद्धः ।  
 प्रत्युत्तरं यः समरे ददाति न खलु देशो दोषभाक् ॥  
 हिन्दसैनिकाः वदन्ति जयजय नास्ति भीति अधुना ।  
 गर्जन्ति रणभूमौ ते न किञ्चित् कार्यमवशिष्टम् ॥  
 पाकस्थानस्य नष्टानि आतंकशिविराणि सर्वाणि ।  
 सजगो भूत्वा जागरूको युद्धध्वनिर्मधुरः श्रूयताम् ॥  
 आपद्कालो यदि आगच्छेत्, एकतां समाश्रयत ।  
 भारत जननी आह्वयति वीराः यथायोग्यं कुरुत ॥  
 ध्वजस्तिरङ्गोन्नतस्थः घोषयति भारतजयम् ।  
 या माता जन्मदात्री च तस्यै शिरः समर्प्यताम् ॥  
 ! जयहिन्दः !

## जय महामङ्गले....

डॉली

बी० ए० तृतीयवर्षस्य

जय महामङ्गले जय सदा वत्सले ।  
 देवि परमोज्ज्वले भारतभूरूपिणी ॥  
 हिमगिरीकिरीटिनी सुरतटिनीमालिनि  
 जलधि वलयाङ्किते जय जगन्मोहिनि ।  
 जय महामङ्गले जय सदा वत्सले ।  
 देवि परमोज्ज्वले भारतभूरूपिणि ॥ 1 ॥  
 भ्रमपटलहारिणि दुर्मोहविध्वसिनि ।  
 जय सदा शारदे बुद्धिबलदायिनि ।  
 जय महामङ्गले जय सदा वत्सले ।  
 देवि परमोज्ज्वले भारतभूरूपिणि ॥ 2 ॥  
 अखिलखलमर्दिनि सुजनबलवर्धिनि ।  
 जय समरचण्डिके रौद्रतनुधारिणी ।  
 जय महामङ्गले जय सदा वत्सले ।  
 देवि परमोज्ज्वले भारतभूरूपिणि ॥ 3 ॥  
 सत्यसावित्रि जय पुण्यगायित्रि जय ।  
 विमलसुखधात्रि जय दिव्यतेजस्विनि ।  
 जय महामङ्गले जय सदा वत्सले ।  
 देवि परमोज्ज्वले भारतभूरूपिणि ॥ 4 ॥  
 वीरवरसेविते योगिजनचिन्तिते ।  
 देवगणवन्दिते विश्वहितकारिणि ।  
 जय महामङ्गले जय सदा वत्सले ।  
 देवि परमोज्ज्वले भारतभूरूपिणि ॥ 5 ॥



## उद्यममहर्षिः टाटामहोदयः

रूबी  
बी० ए० प्रथमवर्षस्य

उद्यमो नाम राष्ट्रस्य चैतन्यम्। उद्योगस्य उत्कर्षो नाम राष्ट्रस्याप्युत्कर्षः। अखिलविश्वस्य उद्योगपतीनां गणनाप्रसङ्गे टाटामहोदयस्य नाम अग्रे गणनीयं खलु। “जहांगीर रतनजी दादाभाई” इत्याख्यः जे० आर० डी० इति प्रतिथ सत्यमेव भारतस्य भूषणम्।

चतुरधिकनवशताधिकसहस्रतमे (1904) ख्रीस्ताब्दे फ्रान्सदेशे पैरिसनगर्यां जातस्यास्य माता सुझाननामा फ्रान्सदेशीया आसीत् । पिता रतनजीनामा तु भारतीयः । वयसः विंशतिवर्षाणि टाटामहोदयः फ्रान्सदेशे एव न्यवसत्। तत्र सः एकं संवत्सरं सेनायां समवेत आसीत्। तदनन्तरं पितुराज्ञया सः भारतदेशम् आगच्छत्। अकस्मात्समापतितेन पितृनिधनवज्राघातेन संप्रान्तस्य तस्य स्कन्धे तरुणवयसि एवं टाटा उद्यमसमूहस्य संचालकपदस्य धुरा पतिता। अद्वितीयेन प्रज्ञाबलेन असाधारणेन धृतिबलेन अविरतेन प्रयत्नेन च तेन आजीवनं उद्यमक्षेत्रस्य उत्कर्ष एव चिन्तितः, सफलता च नीता। जन्मना पाश्चात्यस्य अस्य कर्मभूमिः तु भारतवर्षम् एव आसीत्। उद्योगात् नवराष्ट्रनिर्माणम् इति मनीषितं प्रत्यक्षीकर्तुं स भृशं प्रायतत्। आधुनिकतन्त्रज्ञानस्य विज्ञानस्य च साहाय्येन तेन टाटा उद्यमसमूहस्य देशस्य च विकासः कृतः। विज्ञानवृद्धये तेन मुम्बपुर्यां टाटासंशोधनसंस्था अपि स्थापिता। एषा संस्था अधुना सर्वस्मिन् जगति सुविख्याता अस्ति ।

बाल्यादेव विमानउड्डयनस्य आकर्षणं जहांगीरस्य मनसि आसीत्। द्वित्रिनवैक मिते (१९३२) ख्रीस्तगणनवर्षे तेन करांचीनगरतः मुम्बपुरिं विमानं प्रथमम् एव आनीतम्। एवं भारतीयविमानसेवायाः प्रारम्भः टाटामहोदयेन स्वयमेव कृतः। एअर इण्डिया नाम तस्य प्रयत्नानामेव फलितम्।

पण्डित नेहरुमहाभागस्य प्रेरणया सः कञ्चित्कालं भारतीयस्वातन्त्र्यसंग्रामे अपि सहभागी अभवत् । किन्तु राजकीयक्षेत्रे तस्य मनो नैव अरमत्। उद्यमक्षेत्रे एव तेन हिमालयवत् उन्नतं कार्यं कृतम्। ‘यः क्रियावान् स पण्डितः’ इति वचनस्य मूर्तिमन्निदर्शनम् एव टाटामहोदयः। न केवलं स्वातन्त्र्यं, न वा उद्यमशीलता, किन्तु अन्यानि अपि बहूनि कारणानि देशस्य उत्कर्षाय कल्पन्ते इति बहोः कालात् पूर्वमेव तेन दृष्टमासीत्। अयं राष्ट्रहितैषी उद्यममहर्षिः शासनेन ‘भारतरत्नम्’ इति सर्वश्रेष्ठ उपाधिसमर्पणेन सम्मानितः।

भारतीय उद्योगक्षेत्रस्यायं भीष्माचार्यः, उद्योजकानां शिरोमणिः भारतीयविमानसेवायाः च प्रवर्तकः त्रिनवनवैकमिते (१९९३) वर्षे कालेन कवलीकृतः । तेन समारम्भम् अपूर्वम् असाधारणं च कार्यं पूर्णतां नेतुं सर्वैः अनुष्ठेयः । अनुष्ठितः चेतसः एव तस्मै समुचितः श्रद्धाञ्जलिः स्यात् ।



## सर्वश्रेष्ठगुरुदक्षिणा

तनिषा रोहिला  
बी० ए० तृतीयवर्षस्य

किञ्चन गुरुकुलम्। तत्र बहवः विद्यार्थिनः पठन्ति। विद्याभ्यासं समाप्य निर्गमनसमये ते गुरुं पृच्छन्ति स्म – “आचार्य, गुरुदक्षिणारूपेण किं देयम् ?” इति ।

गुरुः वदति स्म – “यत् अधीतं तस्य सम्यक् अनुष्ठानं क्रियताम् । स्वावलम्बितया जीवनं कृत्वा वर्षाभ्यन्तरे यत् सम्पाद्येत ततः कश्चन भागः दीयताम्” इति ।

विद्यार्थिनः गृहं प्रतिगत्य वर्षाभ्यन्तरे यथाशक्ति धनं सम्पाद्य ततः कञ्चित् भागं गुरवे श्रद्धया समर्पयन्ति स्म । कदाचित् कश्चन तेजस्वी बालः गुरुकुलम् आगतवान् । तीक्ष्णमतिः सः अल्पे एव काले गुरोः प्रियः अभवत् । गुरुः अपि तं वात्सल्येन अपाठयत्। विद्याभ्यासं परिसमाप्य प्रतिगमनसमये अन्ये शिष्याः इव सः अपि गुरुम् अपृच्छत् – “आचार्यवर्य ! गुरुदक्षिणात्वेन मया किं देयम् ?”

गुरुः यथापूर्वम् उत्तरम् अयच्छत् । शिष्यः ततः निर्गतः । ततः वर्षाभ्यन्तरे दशभिः सह प्रत्यागत्य सः गुरुम् अवदत् – “आचार्यवर्य! मया गुरुदक्षिणां दातुम् आगतम्” इति ।

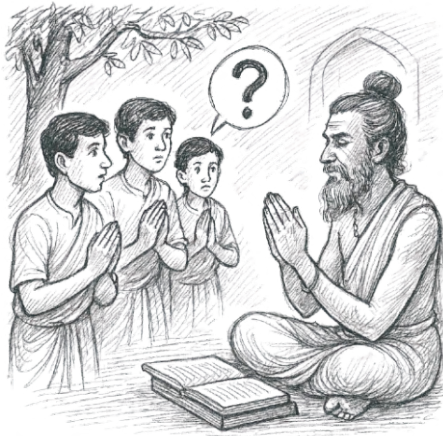
तदा गुरुः अवदत् – “महतः सन्तोषस्य विषयः” इति।

ततः शिष्यः अवदत् – “एते एव गुरुदक्षिणात्वेन अर्प्यन्ते मया” इति।

ततः गुरुः आश्चर्येण अपृच्छत् – “किमर्थं तथा ?” इति ।

शिष्यः विनयेन नमस्कृत्य अवदत् – “गुरुवर्य! भवता यत् अध्यापितं तत् यथाशक्ति अध्यापितं मया। तस्मात् एते भवच्छिष्यार्हतां गताः सन्ति। इतः परं भवान् एतान् अध्याप्य सन्मार्गगामिनः कुर्यात् इति प्रार्थये” इति।

तं साभिमानं पश्यन् गुरुः अवदत् – “साधु शिष्योत्तम साधु! भवता सर्वश्रेष्ठा एव गुरुदक्षिणा अर्पिता। यत् मया अध्यापितं तत् सम्यक् अवगत्य योग्येन एव क्रमेण तस्य आचरणमपि त्वया कृतम्। तव आचरणम् अपि सर्वश्रेष्ठम्। अत एव त्वमपि मम शिष्येषु सर्वश्रेष्ठः” इति।



## देवा धर्मरता नित्यं, दम्भशीला महासुराः । देवास्तपसि रक्ता हि, सुखे रक्ता महासुराः ॥

वंशिका  
बी० ए० प्रथमवर्षस्य

व्याससमारोहस्य संस्कृतवादविवादप्रतियोगितायां पक्षे प्रस्तुतम्

महाभारतस्य खिलभागरूपहरिवंश पुराणस्य विष्णुपर्वे चतुर्नवतितमेऽध्याये चत्वारिंशत्तमः श्लोकोऽयम् । अस्मिन् श्लोके प्रद्युम्नं प्रति अनुरक्ता असुरराजवज्रनाभस्य पुत्री प्रभावती स्वभगिन्यौ देवदानवयोः मध्ये भेदं प्रस्तौति । कथयति -

देवा धर्मरता नित्यं, दम्भशीला महासुराः ।

देवास्तपसि रक्ता हि, सुखे रक्त महासुराः ॥

अस्य श्लोकस्य पूर्णभावः अग्रे श्लोकेऽस्मिन् स्फुटं भवति-

देवाः सत्ये रता नित्यमनृते तु महासुराः ।

धर्मस्तपश्च सत्यं च, यत्र तत्र जयो ध्रुवम्”

अर्थात् देवा धर्मे, तपसि सत्ये च रताः सन्ति, किन्तु दम्भशीला असुरा अधर्मे अनृते सुखे च अनुरक्ताः सन्ति ।

महोदयाः वर्तमान आधुनिकयुगे का आवश्यकता वादविवादस्य अस्य विषयस्य? इति विचारणीयम् । इदमपि विचारणीयम् - देवाः के असुराश्च के ? सामान्यरूपेण तु अदितेः पुत्राः देवाः, दितेः पुत्राः दैत्याः, असुराः वा । किन्तु अत्र मम मते तु ये जनाः धर्मरताः सन्ति, सत्यनिष्ठाः सन्ति, ते देवाः सन्ति । ये जनाः अधर्मिणः दम्भशीलाः अनृतवादिनः सन्ति ते महासुराः सन्ति ।

अध्यक्षमहोदयाः । देवानां सज्जनानां वा धर्मपालनमेव जीवनम् । भवतु सः धर्मः राष्ट्रधर्मः, समाजधर्मः, परिवारधर्मो, गृहस्थधर्मः, पुत्रादिधर्मः, कर्तव्यपालनरूपधर्मो वा, अथवा मनुनिर्दिष्टाः धर्माः । यथोक्तम्

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचम् इन्द्रियनिग्रहः ।

घीर्विद्या सत्यमक्रोधः दशकं धर्मलक्षणम् ॥

देवाः सज्जनाश्च स्वधर्मपालने रताः सन्ति, तेषां धर्मपालनमेव तपः । तेन तपोनुष्ठानेन ते जीवनं साधयन्ति । तद्विपरीतं विषयभोगानुरागिणः महासुराः सुखे एव आसक्ताः सन्ति । सुखभोगार्थं ते अधर्ममपि कुर्वन्ति, असत्यमपि वदन्ति तथैव च दम्भशीलाः भवन्ति- वयमेव श्रेष्ठाः, वयमेव ज्ञानवन्तो, वयमेव गुणवन्तो, वयमेव विद्वान्स इति दम्भयन्ति, दम्नुवन्ति च । ते आत्मश्लाघिनः सन्ति । आत्मनः समक्षं अन्यान् कथमपि किञ्चिदपि न गणयन्ति । छलप्रपञ्चं कुर्वन्ति । स्वार्थसाधनाय कुमार्गमपि चिन्वन्ति ।

देवास्तपसि संलग्नाः सन्ति किन्तु असुराः भोगविलासेषु । तपसः अर्थः ध्यानं, मन्त्रजापं, शारीरिककष्टसहिष्णुता मात्र एव न भवति, अपितु मनसा वाचा कर्मणा शौचस्य पालनमपि तपः । स्वधर्मपालनमपि तपः, परेषां सुखाय स्वसुखत्यागोऽपि तपः ।

निर्णायकमहोदयाः ! वर्तमानयुगे हिमालयस्य कन्दरासु ध्यानं धृत्वा एव तपो न भवति, अपितु विपरीतपरिस्थितिषु अपि धर्मस्य पालनमपि तपः । सत्पथेषु अनेकाः बाधाः व्यवधाना आगच्छन्ति किन्तु गृहीतं प्रारब्धं कार्यं पूर्णतां नयनमेव तपः, प्रतिज्ञापालनमेव तपः । देवाः देवकोटिकाः जनो वा ईदृशमेव तप आचरन्ति ।

एतद्विपरीतं महासुराः स्वसुखमेव पश्यन्ति वाञ्छन्ति च । तेषां सुखे यः कश्चिद् अवरोधो जायते ते तस्य विनाशं कुर्वन्ति । स्वसुखे यदि अन्येषां दुःखमपि भवति ते न चिन्तयन्ति । न विचारं कुर्वन्ति ।

तपसः सुखम् प्राप्यते, सन्तोषः प्राप्यते, किन्तु सुखभोगेन तु असन्तोष एव प्राप्यते यतो हि –

**न जातुकामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।**

**हविषा कृष्णवर्त्मन भूय एवाभिवर्धते ॥**

अस्माकम् इतिहासे अनेकानि उदाहरणानि सन्ति । रावणविभीषणौ द्वावपि ब्राह्मणपितुः राक्षसीमातुः सन्तानौ आस्ताम् किन्तु विभीषणः देवकोटिकः रावणश्च असुरकोटिकः । कुरुवंशी पाण्डवाः देवकोटिकाः, धार्तराष्ट्रा असुरकोटिकाः । अतएव धर्मरतास्तपोनिष्ठाः सत्प्रवृत्तिकाः जनाः देवतुल्याः सन्ति । छलप्रपञ्ची, अहंकारी, आत्माभिमानी सुखरताः जनाः असुरतुल्याः सन्ति । श्रोतारः! को लाभः धर्मपालनात्, तपः साधनात्? तत्रैव श्लोकद्वये प्राप्यते अस्य प्रश्नस्य समाधानम् – ‘तत्र जयो ध्रुवमिति’ अर्थात् जयः धर्मे, तपसि, सत्ये च विद्यते । यत्र धर्मस्तत्र जयः, यत्र तपस्तत्र जयः, यत्र सत्यं तत्र जयः ।

अतएव ‘धर्मः पालनीयः, तपः साधनीयम्, सत्यम् आचरणीयम्’

इति शम्

## देवा धर्मरता नित्यं, दम्भशीला महासुराः । देवास्तपसि रक्ता हि, सुखे रक्ता महासुराः ॥

काजल  
बी० ए० तृतीयवर्षस्य

व्याससमारोहस्य संस्कृतवादविवादप्रतियोगितायां विपक्षे प्रस्तुतम् ।

महोदयाः! हरिवंशपुराणं महाभारतस्य खिलभागोऽस्ति, यस्य विष्णुपर्वे चतुर्नवतितमेऽध्याये चत्वारिंशत्तमः श्लोकोऽयं विद्यते । असुरराज वज्रनाभस्य पुत्री पद्मावत्याः कथनमिदं यत् देवदानवयोः सुरासुरयोः देवासुरयोः भेदं प्रकटयति ।

अस्मिन् श्लोके चतुर्षु चरणेषु प्रथमं चरणमस्ति – ‘देवा धर्मरता नित्यम्’ इति सर्वथा सत्यं नास्ति । अन्येषां देवानां का वार्ता? देवराज इन्द्रः स्वयं अधर्ममाचरति अनेकानि उदाहरणानि सन्ति । इन्द्रेण अदितेः गर्भं नवचत्वारिंशत् वारं विभक्तम् । इन्द्रस्य कारणात् अहिल्या अभिशप्ता अभवत्, पाषाणस्वरूपा अभवत् । अहिल्यायाः शापे इन्द्र एव कारणमासीत् । इन्द्रस्तु कयाधोः गर्भस्थशिशुं हन्तुम् उद्यत आसीत्, किन्तु नारदेन सः बाधितः गर्भस्थशिशुश्च रक्षितः । सः किम् धर्मरतः कथयितुं शक्यते ?

किन्तु एतद्विपरीतम् असुराः धर्मरताः दृश्यन्ते । ‘पुराणे प्रह्लाद अस्य उदाहरणमस्ति’ । पित्रा हिरण्यकशिपुना वारं वारं प्रताडितोऽपि सः धर्मं न त्यजति । पुराणे बलि अस्य उदाहरणमस्ति । वामनस्य वास्तविकरूपं ज्ञात्वापि, शुक्राचार्येण बाधितोऽपि स दानधर्मस्य, स्वधर्मस्य पालनं करोति । ‘सर्वस्वं ददाति । इयमेव धर्मरतिः ।

महोदयाः! द्वितीयं चरणमस्ति – दम्भशीला महासुराः । किं नाम दम्भः ? छलप्रपञ्च इति ? तर्हि देवा अपि दम्भिनः सन्ति । तेऽपि असुरैः सह छलं कुर्वन्ति । दम्भपदस्य अनेकार्थेषु एकस्तु ‘इन्द्रस्यवज्र’ इति । अतएव इन्द्र अपि दम्भी । यदि अस्य पदस्य

अर्थ अहङ्कार इति गृह्यते तर्हि यो बली सः स्वबलस्य अहंकारं करोति, यः रूपवान् सः रूपस्य अहंकारं करोति, यः धनवान् सः धनस्य अहंकारं करोति, अत्र किम् आश्चर्यम् ? यस्य पार्श्वे यदस्ति सः तस्य अभिमानं करोति एव, आत्मश्लाघा करोति च' सर्वे जनाः रतन जी टाटा सदृशाः निरभिमानिनो न सन्ति। किं देवाः स्वसत्त्वस्य अहंकारं न कुर्वन्ति ? स्वर्गस्य दम्भं न कुर्वन्ति अप्सराणां, शस्त्राणां, कल्पवृक्षादीनाम् अभिमानं न कुर्वन्ति ?

तृतीयचरणमस्ति - 'देवास्तपसि रक्ता हि' इति। महोदयाः! देवाः प्रायः तपसि रक्ता न चित्रिताः । पुराणानि पठनीयानि। इन्द्रेण किं तपः कृतम्। सः तु केवलं तपसि बाधाम् उत्पन्नं करोति। यदा कोऽपि कठोरतपांसि करोति तदा शतक्रतु इन्द्रस्य आसनं डोलयते ।

एतद्विपरीतं असुराः तपसि रक्ताः वर्णिताः। हिरण्याक्षः तपोभिर्ब्रह्मणा वरदानमाप्नोति। असुरवंशे प्रह्लादस्तपसि रक्तः आसीत्। तपोबलेन स नारायणकृपामाप्नोति। तपः कृत्वा एव ब्रह्मणपितुः राक्षसीमातुः पुत्रेण रावणेन स्वदशाननानि शिवाय समर्पितानि। तपो बलेन तेन अमृतं प्राप्तम्, तपोबलेन सः शिवसहितं कैलासं लङ्काम् आनेतुं प्रयासं करोति।

नीरक्षीरविवेकिनो निर्णायकाः! असुरास्तपः कुर्वन्ति। तपोबलेन ब्रह्मणः शिवाच्च वरदानमाप्नुवन्ति। सः भस्मासुरो भवतु वा त्रिपुरासुरो वा बाणासुरो वा। पराजिताः देवास्तु सदैव भयभीताः सन् पलायन्ते, विष्णोः शरणं गच्छन्ति, शिवस्य शरणं गच्छन्ति, ब्रह्मणः शरणं गच्छन्ति। देवाः कृपया प्राप्नुवन्ति, किन्तु असुराः अर्जन्ति स्वबलेन बाहुबलेन वा तपोबलेन वा।

श्रोतारः! श्लोकस्य चतुर्थे चरणे उक्तम् - 'सुखे रक्ता महासुरा इति'। सुखं प्राप्य सर्वे सुखरताः सन्ति ते देवाः भवन्तु वा असुराः भवन्तु। किं देवाः सुखे न रक्ताः सन्ति ? किं ते अप्सराणां नृत्यं न पश्यन्ति ? किं ते गीतवाद्यादीनां रसपानं न कुर्वन्ति ? किं ते नाटकादीनां रसास्वादनं न कुर्वन्ति? कथासु उल्लिखिताः। यदि असुरा मद्यपानं कुर्वन्ति, देवा अपि सोमपानं कुर्वन्ति। तर्हि कथं कथयितुं शक्यते यत् महासुरा एव सुखे रक्ताः सन्ति, देवा न। अयं तु पक्षपातः महोदयाः। अतएव अहं पक्षपातिनां कथनस्य खण्डनं करोमि कथयामि च-

**न केवलं देवाः धर्मरता नित्यं, महासुरा अपि धर्मरताः**

**यदि दम्भशीला महासुरा तर्हि देवा अपि दम्भशीलाः**

**न केवलं देवास्तपसि रक्ता, अपित असुरा अपि तपसि रक्ता**

**यदि असुराः सुखे रक्ता देवा अपि सुखे रक्ता :।**

अत एव यस्य कस्य एकस्य महिमागानं द्वितीयस्य च निन्दा इति न शोभनीया।

इति शम्।



## रामायणः

दीपा पुण्डीर  
बी० ए० द्वितीयवर्षस्य

रामायणं संस्कृतभाषायां एतादृशो महान् ग्रन्थोऽस्ति यस्मिन् भारतस्य विशालसाहित्यसम्पदा आश्रिता अस्ति। अयं ग्रन्थः वैदिकलौकिकसाहित्ययोः संक्रमणकाले लिखितः। अनेन न केवलं संस्कृतसाहित्ये अपितु भारतीयसमाजे अपि प्रभावः अभवत्। रामायणस्य सामान्यभारतीयजीवने अपि व्यापकः प्रभावः अभवत्।

रामायणं आदिकाव्यमिति कथ्यते यतो हि वैदिकसंस्कृतातिरिक्तलौकिकसंस्कृते काव्यप्रवृत्तिः प्रवर्तयति स्म। अस्य रचयिता वाल्मीकिः आदिकवि इति। वाल्मीकि ना प्रथमं अलङ्कृतकाव्यं लिखित्वा तदन्तरं सर्वेषां भारतीयकवीनां कृते उदाहरणं स्थापितम् आसीत्। कथ्यते यत् निषादेन क्रीडन्तः क्रौञ्चपक्षिणः वधं दृष्ट्वा वाल्मीकेः हृदयं करुणाभावेन प्रेरितम्, तस्य मुखात् एषः श्लोकः निर्गतः—

**मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः ।  
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥**

रामायणे रामकथा सुविस्तरेण वर्णिता अस्ति। यत्र यत्र आवश्यकं तत्र तत्र कविः वाल्मीकिः वैकल्पिककथां दत्त्वा प्रकृते विस्तृतं वर्णनमपि कृतवान्।

रामायणं सप्तकाण्डेषु विभक्तम् अस्ति -

बालकाण्डः, अयोध्याकाण्डः, अरण्यकाण्डः, किष्किन्धाकाण्डः, सुन्दरकाण्डः, युद्धकाण्डः, उत्तरकाण्डश्च।

प्रत्येकं काण्डम् अध्यायेषु विभक्तम् अस्ति। रामायणे 24000 श्लोकाः सन्ति। सम्प्रति रामायणस्य त्रयः संस्करणाः उपलभ्यन्ते।

रामायणं महाभारतात् पूर्वं रचितम् यतो हि महाभारते रामायणस्य सम्पूर्णकथा वर्णिता अस्ति तथा च रामजीवनसम्बद्धानि कानिचित् स्थानानि तत्र तीर्थरूपेण दृष्टानि सन्ति। रामायणस्य रचना ई०पू० पञ्चमे सहस्रे इति मन्यते।

रामायणस्य महत् सांस्कृतिकमहत्त्वम् अस्ति। अस्मिन् राजा - प्रजा - पुत्र - मातृ - पत्नी - पति - भृत्यादि सम्बन्धानां आदर्शरूपं प्रस्तुतम् अस्ति। रामः आदर्शमहापुरुषः, सत्यवादी, दृढनिश्चयी, दानशीलः चरित्रवान्, विद्वान्, शक्तिशाली, सुन्दरः, जनरक्षकः धैर्यवान् च पुरुषः आसीत्। वाल्मीकिः तस्य गुणान् बहुविस्तरेण प्रकाशितवान्। वाल्मीकिना सीतायाः आदर्श गौरवपूर्णं च प्रस्तुतम्, तस्याः पत्नीप्रतिमा च स्थापिता अस्ति। रामस्य भ्रातृप्रेम रामायणे अतीव सरलेन भावपूर्णैः शब्दैः व्यक्तः अस्ति।

**देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च बान्धवाः ।  
तं तु देशे न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः ॥**

कस्मिन् अपि देशे भार्या लभ्यते भ्रातृत्वं कुत्रापि स्थातुं शक्यते भ्राता तु कुत्रापि न लभ्यते।

रामस्य चरित्रम् एतावत् उदारम् उच्चैश्च अस्ति यत् रावणस्य मृत्योः अनन्तरं सः विभीषणं तस्य शरीरस्य परिचर्यां कर्तुं उपदेशं ददाति। वदति विभीषण! वैरस्य समाप्तिः शत्रोः मृत्योः सह भवति।

अस्माकं वैरं अपि समाप्तम् । इदानीं रावणस्य शरीरं मम यथा भवतः -

**मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं नः प्रयोजनम् ।  
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव ॥**

भरतस्य राज्ये असङ्गः लक्ष्मणस्य भ्रातृसेवा, हनुमानस्य स्वामिनिष्ठा च एतानि त्रीणि जीवनस्य परमानि आदर्शानि रामायणे उपलभ्यन्ते । काव्यस्य प्रयोजनं 'मधुरप्रवचनम्' - तस्मिन् वाल्मीकिः सम्पूर्णतया सफलः अभवत्।



## महाकवि कालिदास की कृतियों में ईश्वर-चित्रण

डॉ० अन्जू रस्तौगी  
एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत विभागस्य

संस्कृतसाहित्याकाश के दैदीप्यमान नक्षत्र कवि कुलगुरु महाकवि कालिदास की कृतियों में वर्णित ईश्वर का स्वरूप कवित्व और अन्तर्दृष्टि के अपूर्व सामन्जस्य को प्रदर्शित करता है। कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में परमात्मा के अर्धनारीश्वर रूप की स्तुति की है। उनका कथन है – वाणी और अर्थ के समान परस्पर मिले हुए, जगत् के माता-पिता पार्वती और परमेश्वर को नमस्कार है।<sup>1</sup> वाणी और अर्थ की उपमा कवि की अन्तर्दृष्टि को प्रदर्शित करती है। अर्थ रहित वाणी व्यर्थ है और वाणी रहित अर्थ। इसी प्रकार पुरुष रहित स्त्री अपूर्ण है तथा स्त्री रहित पुरुष, क्योंकि स्त्री के सौन्दर्य को महत्त्व पुरुष से प्राप्त होता है एवं पुरुष को प्रेरणा- शक्ति स्त्री से। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। पारस्परिक सहयोग से ही पार्वती और शिव विश्व के माता-पिता बन सके।

त्रिमूर्ति के रूप में ईश्वर की आराधना करते हुए कवि का कथन है- हे विश्व का सृजन करने वाले, तदुपरान्त धारण करने वाले तत्पश्चात् संहार करने वाले तुम्हें नमस्कार है।<sup>2</sup> मानव स्वयं निर्मित कृति को विनष्ट नहीं करना चाहता, किन्तु कालिदास क्रान्तदर्शी थे। उनकी दृष्टि में कोई कृति शाश्वत नहीं हो सकती। कवि की दृष्टि में परमात्मा से भिन्न कोई तत्त्व नहीं है- तुम स्वयं द्वारा स्वयं के ज्ञाता हो और स्वयं अपनी सृष्टि करते हो अर्थात् तुम्हीं ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान के साधन हो। तुम्हीं स्रष्टा, सृष्टि और उपकरण हो। कार्य की परिसमाप्ति पर स्वयं लीन हो जाते हो।<sup>3</sup> कवि ने मनोरम भाषा में जगत् का निमित्त एवं उपादान कारण एक बताया है। सृष्टि एवं प्रलय को बताते हुए कवि ने कहा है – तुम अपनी काल-मर्यादानुसार दिन-रात का विभाजन करते हो। तुम्हारा जागरण जगत् का सृष्टि काल है और निद्रा प्रलयकाल है।<sup>4</sup>

महाकवि कालिदास के अनुसार ईश्वर जगत् नियन्ता है। वह ऐश्वर्याभिव्यक्ति के लिए स्वाधीन है – तुम जल के समान द्रव, पत्थर के समान कठोर, स्थूल, सूक्ष्म, लघु एवं गुरु, व्यक्त एवं अव्यक्त हो। तुम्हारी विभूतियाँ स्वतन्त्र हैं।<sup>5</sup>

ईश्वर के अगम्य रूप को चित्रित करते हुए कवि का कथन है – तुम पितरों के भी पिता, देवों के भी देवता, पर से भी परे एवं विधाता के भी विधाता हो।<sup>6</sup> ईश्वर के विराट रूप का चित्रण करते हुए कवि का कथन है- तुम ही हवन सामग्री, हवन करने वाले, तुम ही भोक्ता एवं भोज्य, तुम ही ज्ञाता एवं ज्ञेय तथा ध्याता एवं ध्येय हो।<sup>7</sup> यहाँ कवि ने साधना के चार रूप हव्य और होता के रूप में कर्मसाधना, भोज्य और भोक्ता के रूप में प्रेम साधना, ज्ञाता एवं ज्ञेय के रूप में ज्ञान साधना तथा ध्याता एवं ध्येय के रूप में योगसाधना को प्रदर्शित किया है। कवि के अनुसार ईश्वर ही साधक एवं साध्य है।

तुम जगत् के मूल कारण हो किन्तु तुम्हारा कोई कारण नहीं है। तुम जगत् के अन्त हो किन्तु तुम्हारा कहीं अन्त नहीं होता है। तुम जगत् के आदि किन्तु स्वयं अनादि हो। तुम जगत् के ईश्वर किन्तु स्वयं अनीश्वर हो।<sup>8</sup> तुम परिमाण रहित हो किन्तु समस्त जगत् को नापा हुआ है। किसी से प्रार्थना न करते हुए सबकी प्रार्थनाओं को पूर्ण करने वाले हो। तुम अजेय होकर सर्वविजयी हो। स्वयं अव्यक्त होकर भी व्यक्त जगत् के कारण हो।<sup>9</sup> इन विरोधाभासों में कवि ने ईश्वर की उत्कृष्टता का परिचय दिया है।

तुम सर्वज्ञ हो किन्तु स्वयं अज्ञात हो। तुम सबको उत्पन्न करने वाले किन्तु स्वयं उत्पन्न न होने वाले हो। सबका स्वामी होने पर भी तुम्हारा कोई स्वामी नहीं है। तुम एक होकर भी अनेक रूप धारण करते हो।<sup>10</sup>

मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् एवं अभिज्ञानशाकन्तलम् नाटकों के प्रारम्भ में ईश्वर के भिन्न-भिन्न रूपों का चित्रण

कालिदास ने किया है। मालविकाग्निमित्रम् में उसके अज्ञेय रूप का वर्णन है। नान्दी के रूप में दर्शकों को आशीर्वाद देते हुए सूत्रधार कहता है - भक्तों को अत्यधिक फल देने वाले अपार ऐश्वर्य-सम्पन्न होते हुए भी स्वयं गजचर्म ही धारण करते हैं, पार्वती से सम्मिलित शरीर वाले होते हुए भी विषय-विरत योगियों में श्रेष्ठ हैं। अपनी आठ मूर्तियों से जगत् को धारण करते हुए जिसको अभिमान नहीं है, वह ईश्वर सन्मार्ग के अवलोकनार्थ आपकी तामसी वृत्ति को दूर करें।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कवि जगत् के सम्पूर्ण क्रिया कलाओं में परमात्मा को देखता है। आठ मूर्तियों का वर्णन करते हुए कहता है- भगवान् शिव की प्रथम सृष्टिभूत जलमयी मूर्ति, विधिपूर्वक हुत हवनीय पदार्थों को देवताओं के समीप ले जाने वाली अग्निरूपा मूर्ति, यजमानरूपा मूर्ति, काल का विधान करने वाली सूर्यचन्द्र रूपी दो मूर्तियाँ, आकाशमयी मूर्ति, क्षितिरूपा मूर्ति एवं वायुरूपा मूर्ति इन प्रत्यक्ष दृष्ट अदृष्ट मूर्तियों से विशिष्ट अष्टमूर्ति भगवान् शिव आप सभी की रक्षा करें।<sup>12</sup>

विक्रमोर्वशीयम् में ईश्वर का वर्णन ध्येय रूप में है - वेदान्त (ब्रह्म) विद्या के प्रतिपादक उपनिषद् जिसको पृथिवी और अन्तरिक्ष को व्याप्त करके स्थित सर्वश्रेष्ठ अनादि पुरुष कहते हैं जिसके लिए प्रयुक्त होने वाला ईश्वर शब्द किसी अन्य पुरुष का वाचक नहीं हो सकता है। मोक्ष-प्राप्ति की इच्छा करने वाले प्राणायाम, समाधि आदि में लीन हुए अपने अन्तःकरण में ध्यान रखते हुए स्थिर एवं दृढ भक्ति एवं योग द्वारा प्राप्त होने योग्य वह स्थान (शङ्कर) आप सभी का परम कल्याण करें।<sup>13</sup>

उपर्युक्त चित्रणों में कवि द्वारा स्तुत्य एवं वर्णनीय रूपों को चित्रित किया गया है।

सन्दर्भ

- |                     |                            |
|---------------------|----------------------------|
| 1. रघुवंशम् 1.1     | 8. कुमार० 2.9              |
| 2. कुमारसम्भवम् 2.4 | 9. रघु० 10.18              |
| 3. कुमार० 2.10      | 10. रघु० 10.20             |
| 4. कुमार० 2.8       | 11. मालविकाग्निमित्रम् 1.1 |
| 5. कुमार० 2.11      | 12. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1.1 |
| 6. कुमार० 2.14      | 13. विक्रमोर्वशीयम् 1.1    |
| 7. कुमार० 2.15      |                            |



## भक्ति का लक्ष्य

डॉ० नीरू  
पूर्वच्छात्रा संस्कृतविभागस्य

भक्ति का विकास प्रारम्भ से ही सार्वजनीनता (सर्वजन समुदायोपयोगिता) की भावना को लेकर हुआ जो भागवतादि ग्रन्थों से प्रकट है। सूक्ष्म पर्यवेक्षण करने से यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि इस जगत् में मानवयोनि ईश्वर का सर्वोत्तम वरदान है। इस शरीर रूप साधन से भगवान् के स्वरूप का साक्षात्कार किया जा सकता है। भगवान् की सर्वोत्तम कृति मानव विविध गुणों का समुच्चय है। हृदय के सात्त्विक भावों के फलस्वरूप सौन्दर्य के रसोद्रेक का अनुभव तथा ब्रह्मानुभूति कर सकने की क्षमता मानव के अतिरिक्त किसी और में सम्भव नहीं है।

भक्ति क्रमशः सत्, चित्, आनन्दरूप परब्रह्म का ज्ञान कराकर, उसके स्वरूप की पहचान कराकर, भगवान् से ममता, नैकट्य का अनुभव कराने के बाद भगवान् की कृपा एवं अनुग्रह प्राप्त कराकर आत्मकल्याण और लोक कल्याण के आनुषङ्गिक फल को प्रदान करती हुई अति उपयोगिनी है। वह भक्ति मोक्ष की साधिका भी है।

दार्शनिकों की दृष्टि में मोक्ष भारतीय दर्शन का केन्द्र बिन्दु है अर्थात् वही जीवन का एक मात्र सार और एकमात्र लक्ष्य है भारतीय मनीषियों ने चार पुरुषार्थ बताये हैं—धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष, इनमें से कल्याण का मार्ग मोक्ष (आध्यात्मिक मूल्य) है उपनिषदों के ऋषियों को धर्म, अर्थ और काम सन्तुष्ट नहीं कर पाये। वहाँ नचिकेता इहलौकिक तथा पारलौकिक सुखों के प्रलोभन में नहीं पड़ता, वह केवल सत्य को जानने की हठ करता है—

**येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके ।**

**एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणामेष वरस्तृतीयः 1/20 कठोपनिषद्**

उसी प्रकार मैत्रेयी का प्रश्न है कि “मैं ऐसी सम्पत्ति को लेकर क्या करूँगी जिससे मुझे अमरत्व की प्राप्ति नहीं होती—

**सा होवाच मैत्रेयी येनाहं नामृता स्यां किमहं**

**तेन कुर्या यदेव भगवान्वेद तदेव में ब्रूहीति ॥ 2/4/3, बृहदारण्यकोपनिषद्**

इसी प्रकार का उल्लेख छान्दोग्योपनिषद् में भी प्राप्त होता है कि इस लोक में आचार्यवान् पुरुष ही सत् जानता है, उसके लिए मुक्त होने में उतने समय का ही विलम्ब है जितने तक कि वह बन्धन से मुक्त नहीं हो जाता— तस्य यथाभिहनं प्रमुच्य प्रबू यादेतां दिशं गन्धारा एतां दिशं व्रजेति । स ग्रामाद् ग्रामं पृच्छन् पण्डितो मेधावी गंधारा नेवोपसंपद्यतैवमेवेहाचार्यवान् पुरुषो वेद । तस्य तावदेव चिरंयावन्न विमोच्येऽथ संपत्स्य इति ॥ छान्दोग्योपनिषद् 6/14/2

उपनिषदों में ऐसे अनेक वचन उपलब्ध हैं जो यह स्पष्ट रूप से घोषित करते हैं कि मोक्ष यहाँ और इसी जीवन में प्राप्त किया जा सकता है और शरीर की उपस्थिति के साथ उसकी कोई असंगति नहीं है। बृहदारण्यक उपनिषद् में कहा गया है कि ब्रह्म ज्ञान यहीं सम्भव है। “हम इस शरीर में रहते हुए भी यदि उसे जान लेते हैं तो कृतार्थ हो गये और यदि उसे यहाँ जाना तो भी हानि है, जो उसे जान लेते हैं वे अमृत हो जाते हैं, किन्तु दूसरे लोग तो दुःख को ही प्राप्त होते हैं—

**इहैव सन्तोऽथविद मस्तद्वयं न चेदवेहीमंहीतिविनष्टिः ।**

**ये तद्विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरे दुःखमेवापियन्ति ॥ 4/14 बृहदारण्यकोपनिषद्**

मोक्ष का स्वरूप, मुक्त पुरुष का सामाजिक जीवन तथा उसके लोक कल्याण के कार्यों का वर्णन भगवद्गीता में विभिन्न स्थानों पर हुआ है जीव का ब्रह्म में लय हो जाना, निर्गुण हो जाना या आत्मा का परमात्मा में विलय ही मुक्ति कही जाती है पर

इसके मूल में यदि देखा जाए तो तन्मयता, एकरूपता तथा लयात्मकता ही है जो मुक्ति कहलाती है जिसे गीता में ब्राह्मी स्थिति (श्रीमद्भगवद्गीता-2/55, 56, 57, 58, 59, 60, 68, 69, 70, 71) और ब्राह्मी स्थिति प्राप्त करने वाले को स्थितप्रज्ञ कहा गया है। (श्रीमद्भगवद्गीता 2/62) सामान्यतया पवित्रता, स्वतन्त्रता, विश्वबन्धुत्व की भावना और प्रभु प्राप्ति भक्ति के लक्ष्य बताये गये हैं। सांख्यानुसार दुःखत्रय से आत्यन्तिक निवृत्ति प्राप्त कर कैवल्य की प्राप्ति कर लेना ही लक्ष्य है-

### दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ

#### दृष्टे साऽपार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात् ॥ 1 सांख्यकारिका

जीव प्रकृति के प्रपंच में फंसा रहता है, वह सदा ही स्वाधीनता की भावना से प्रेरित रहता है उसको इस संघर्षमय संसार से स्वाधीनता छीन लेनी पड़ती है। जब इन्द्रियविषयक संसार तथा उसके विषय मानव को बन्धनयुक्त बना देने वाले होते हैं तब किन्हीं क्षणों में मनुष्य को आध्यात्मिक जीवन की शाश्वतरूपता एवं पूर्णता का अनुभव भी होने लगता है।

शंकराचार्य मोक्ष के स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि “यह परमार्थ है, कूटस्थ नित्य है, आकाश के समान सर्वव्यापी है, सभी विकारों से शून्य है, नित्य तृप्त है, अवयवों से रहित है, स्वभाव से स्वयं प्रकाश है, वह स्थिति है जहाँ तक पाप और पुण्य अपने फल सहित त्रिकाल में भी नहीं पहुंच सकते-

**इदं तु पारमार्थिक कूटस्थनित्यं व्योमवत्सर्वव्यापि सर्वविक्रियारहितं नित्य तृप्तं निरवयवं स्वयं ज्योतिः स्वभावम्, यत्र धर्मा धर्मै सह कार्येण कालत्रयं च नोपावर्तेते ॥ 1/1/4 ब्रह्म सूत्र शा० भा०**

मोक्ष सभी विकारों से रहित है। मोक्ष की प्राप्ति में परिवर्तन रज्जु-सर्प-भ्रम के दूर होने के समान केवल ज्ञानगत है, सत्तागत नहीं। रज्जु में सर्प के भ्रम को दूर करने में हमें रज्जु में किसी प्रकार के परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, केवल हमारे दृष्टिकोण में ही परिवर्तन आवश्यक है। ठीक इसी प्रकार, ब्रह्म-जगत् के मध्य के भ्रम को दूर करने में, अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति करने में, हमें अधिष्ठान ब्रह्म में किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। परिवर्तन केवल हमारे दृष्टिकोण में अर्थात् ज्ञान के जगत् में होता है।

भक्ति जीवन में आदर्श और यथार्थ का सन्तुलन और समन्वय कर भक्त के व्यवहार सम्बन्धी दृष्टिकोण को बदल देती है व्यक्ति के मानसिक स्तर में स्वार्थ को हटाकर परार्थपूर्ण भावना को जन्म देकर परिवर्तन लाने के लिए भी भक्ति परमावश्यक है। भावनात्मक एकता का सर्वांगपूर्ण साधन मानव जीवन में भक्ति के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता।

वैष्णव दर्शन के अनुसार भक्ति ही परम पद अथवा मोक्ष-प्राप्ति का परम साधन है। जो मानव अनुरागात्मिका भक्ति का आचरण करता है, वह अवश्य ही मोक्ष को प्राप्त कर लेता है भक्ति और मुक्ति ये दोनों भिन्न-भिन्न वस्तुएँ नहीं हैं वरन् एक ही तत्त्व के वाचक अलग-अलग शब्द हैं। इसीलिए श्रुति, उपनिषद् स्मृति, इतिहास, पुराण आदि सभी भक्ति के द्वारा ही भगवान् के लोक को प्राप्त करने की बात कहते हैं। यही सर्वाधिक सरल व सरस मार्ग है। जो एक बार इसका रसास्वादन कर लेता है, वह सदा सर्वथा के लिए आनन्द का अनुभव करता रहता है, भक्त इसका पान करते-करते थकता नहीं, वरन् वह तो बार-बार इसी का अनुभव करना चाहता है, सांसारिक विषय रस की तो बात ही क्या है ? सायुज्य मुक्ति का आनन्द भी इस रस के सामने फीका है, असार है।

जगत् का सम्बन्ध मानव को मलिन कर देने वाला है। सतोगुण से गिरकर जीव रजोगुण एवं तमोगुण के कष्टमय एव वीभत्स अनुभवों को भोगता है। इस स्थिति में मानव सत्य और असत्य का भेद करके सत्य को ग्रहण करता है। भगवान् भी साक्षात् सत्य रूप है उनके गुणों के स्मरण, कीर्तन एवं भजन द्वारा भक्ति अपवित्रता दूर कर देती है। भक्त के जीवन की

पवित्रता के चिह्न प्रत्यक्ष होने लगते हैं। प्रियतम भगवान् को छोड़कर भक्त किसी अन्य से सम्बन्ध नहीं रखना चाहता तथा व्यक्तिगत बोध को मिटाकर वह अचंचल भक्ति में भगवान् से तादात्म्य प्राप्त करता है। सत्य का सम्पर्क उसकी चेतनता को स्फुरित कर देता है। इस चेतना के आधार पर उसे सत्यस्वरूप भगवान् का बोध होने लगता है। प्रभु की भक्ति, उसके गुणों का स्मरण, चिन्तन और कीर्तन जीव के अन्दर पवित्र-परमात्मा की समकक्षता में उसके अपने अपवित्र रूप का उद्घाटन करा देते हैं। वह व्यथित हो उठता है, पवित्र प्रभु के आगे कातर क्रन्दन करने लगता है, तथा अपनी अपवित्रता को दूर करने का संकल्प करता है, वह आत्मनिवेदन के सहारे अपनी समस्त मलिनता, कलषुता को दूर कर देता है। तात्पर्य यह हुआ कि भक्ति उसे पवित्रता प्रदान करती है, प्रभु का आश्रय पाकर जीव पवित्र हो जाता है।

पवित्रता की प्रदीप्ति जीव में सत्त्वगुण की स्थिति की सूचिका है। सतोगुण की अवस्था में रागद्वेष का भाव नहीं रहता। रागद्वेष का अभाव मानव को स्वार्थपरता तथा संकीर्णता की भावना से ऊपर उठा देता है। समस्त प्राणियों में एकरस रूप से विराजमान् परम आत्म तत्त्व को जानकर भक्त द्वैत से परे हो जाता है तथा अचेतन जगत् की विविधरूपा दृश्यावलि में भी उसे सर्वत्र एकमात्र ईश्वर के ही दर्शन होने लगते हैं। उसे यह अनुभव होने लगता है कि संसार में जो भी कुछ दिखाई देता है वह उसी की सत्ता से सत्तावान् है। सूत्र में मणियों की भांति समस्त जगत् उसी में ओत-प्रोत है। उसका प्रेम भगवान् के प्रति होकर सब चराचर के प्रति क्रियाशील हो उठता है। उसे सब अपने लगने लगते हैं, आत्मा के ही प्रतिरूप प्रतीत होने लगते हैं। सम्पूर्ण विश्व को वह बन्धुता के कोमल बन्धन में बाँधकर अपने अन्दर समेट लेता है और स्वयं को विशाल बनाकर सब तक पहुँचा देता है। यही विश्व बन्धुत्व की भावना है जैसा कि भर्तृहरि ने भी कहा है-

**अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।**

**उदारचरितानान्तु वसुधैवकुटुम्बकम् ॥**

भगवद्भक्ति की प्रभावशीलता, अलौकिकता व अद्वितीयता दर्शनीय है। भगवद् भक्ति में निरत प्राणी किसी का नहीं और इसी हेतु सबका है। वह ब्रह्म के सम्पर्क में आकर अल्प नहीं रहता, भूमा बन जाता है। भक्त तो चौराहे के उस दीपक के समान है जो सबके लिए जलता है और उसके प्रकाश से लाभ उठाने का अधिकार भी सभी को है। भक्तों के इष्ट देवता अन्ततः समस्त संसार के प्रतिनिधि बन जाते हैं अर्थात् भगवद् भक्ति साधक को दिव्यता के स्रोत से संयुक्त कर देती है। नारद ने कहा है कि जाति, सभ्यता, कुल, धन, सुन्दरता या सम्पत्ति के आधार पर कोई भेद-भावना भक्तों के संसार में नहीं चलती-

न तदसिद्धौ लोकव्यवहारो हेयः किन्तु फलं त्यागस्तत् साधनं च कार्यमेव ॥ 62 ॥ नारद भक्ति सूत्र

अन्य लोगों के मतानुसार भगवान् की प्राप्ति भक्ति के फलों में सर्वप्रमुख है। यद्यपि भगवान् भक्त के हृदय में ही स्थित है तो भी वे भक्ति साधना रूपी मंथन के बिना प्रकट नहीं होते हैं। भगवान् की निकटता का बोध जाग्रत करने में भक्ति सफल उपाय है। मनुष्य के भौतिक और जड़-अंशों को भक्ति दिव्यता से ओतप्रोत कर देती है ।

भक्ति रसामृतसिन्धु के अनुसार भक्ति, ज्ञान-कर्म-वैराग्य आदि से प्रभावित हुए बिना, स्वार्थ से प्रभावित हुए बिना स्वयं को कृष्ण की सेवा मात्र के लिए उसके प्रति अनुरक्त करने में निहित होती है- (भक्तिरसामृतसिन्धु 1/1/1)

अपनी आन्तरिक श्रद्धा, प्रेम तथा हृदय के अनुराग से मन, वाणी और शरीर द्वारा ईश्वर में परानुरक्ति ही भक्ति है- (सा परानुरक्तिरीश्वरे । 1/2 शाण्डिल्य भक्ति सूत्र)

भक्ति के बिना शाश्वत्-सुखों की उपलब्धि नहीं होती, ज्ञान के भार से पीड़ित व्यक्ति का भार उतारने के समान, सांसारिक क्लेशों की निवृत्ति तो शास्त्रों एवं आचार्यों ने बताया है परन्तु उससे किसी अन्य सुख की उपलब्धि भी होती है, ऐसा उल्लेख कहीं नहीं मिलता अर्थात् सुख तो भक्ति से ही प्राप्त होता है।

मनुष्य स्वभाव से ही सुखान्वेषी है किन्तु संसार में उसे पग-पग पर बाधाएँ एवं कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ती हैं जिनके परिणामस्वरूप चिन्ता, क्लेश या संताप आदि उत्पन्न होते हैं। अतः मनुष्य जगत् नियन्ता करुणानिधान प्रभु की शरण लेकर उसका सान्निध्य प्राप्त कर निश्चिन्त होना चाहता है इसीलिए इस विराट विश्व के सृष्टा ईश्वर को प्राप्त कर लेना ही उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन जाता है।

जीव का प्रभु-प्राप्ति में स्वतन्त्र पुरुषार्थ है। स्वाधीन भाव से ही वह उसे प्राप्त करता है। यद्यपि पुरुषोत्तम में प्रवेश जीव को भगवान् के आनन्द का अनुभव करा देता है तथापि वह भगवान् के अधीन नहीं होता। लीला में प्रभु के निकट जीव की स्थिति सखा भाव की होती है-

**द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।**

**तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति । 3/1/1 मुण्डकोपनिषद्**

समस्त साधनों का एक ही फल है-प्रभु की प्राप्ति। अविरल प्रेमभक्ति पा लेने की बात ही कुछ और है।

भक्त के लिए भगवान् के दर्शन पा लेना, उनकी सेवा का अवसर पा लेना ही जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है उपनिषदों में भी कहा गया है कि इसके बाद कुछ पाना शेष नहीं रह जाता-

**सा होवाच मैत्रेयी येनाहं नामृता स्यां किमहं**

**तेन कुर्या यदेव भगवान्वेद तदेव मे ब्रूहीति ॥ 2/4/3 वृहदारण्यकोपनिषद्**

मोक्ष ऐसा लक्ष्य है जिसकी चर्चा भक्ति-साहित्य में पर्याप्त मात्र में है, संसार के बन्धन से छूटना या जन्मान्तर दुःख से मुक्ति, यह भी भक्ति का ही लक्ष्य है।

इसी के साथ साथ अमरत्व की प्राप्ति का लक्ष्य भी सामने आ जाता है। उपनिषद् काल से चला आता रहा यह लक्ष्य भी भक्ति-साहित्य में पर्याप्त मात्र में दिखाई पड़ता है।

## महाकवि: कालिदासः

ज्योति: सैनी

बी० ए० तृतीयवर्षस्य

महाकवि: कालिदासः मम प्रियः कविः अस्ति। कविकुलशिरोमणिः महाकविः कालिदासः संस्कृतभाषायाः श्रेष्ठतमः कविः अस्ति। सः नाटककारः महाकाव्यप्रणेता, गीतिकाव्यकर्ता खण्डकाव्यकर्ता च आसीत्। तस्य प्रमुखाः ग्रन्थाः सन्ति (अ)- त्रीणिनाटकानि मालविकाग्निमित्रम् विक्रमोर्वशीयम् अभिज्ञानशाकुन्तलम् च। (ब)- महाकाव्यद्वयम् - रघुवंशम् कुमारसम्भवं च। (स)- गीतिकाव्यद्वयम् - मेघदूतम् ऋतुसंहारम् च। कालिदासस्य लोकप्रियतायाः कारणं तस्य प्रसादगुणयुक्ता ललिता शैली अस्ति। कालिदासस्य प्रकृतिचित्रणम् अतीव रम्यम् अस्ति। चरित्रचित्रणे कालिदासः अतीव पटुः अस्ति। कालिदासः महाराजविक्रमादित्यस्य सभाकविः आसीत्। अनुमीयते यत्तस्य जन्मभूमिः उज्जयिनी आसीत्। मेघदूते उज्जयिन्याः भव्यं वर्णनं विद्यते। कालिदासस्य कृतिषु कृत्रिमतायाः अभावः अस्ति। कालिदासस्य साहित्ये काव्यसौन्दर्यं रसनिरूपणं च सर्वत्र दृश्यते। तस्य सूक्तयः सुधासिक्ताः चेतोहराः सन्ति। कालिदासस्य उपमाप्रयोगः अपूर्वः अतः साधूच्यते "उपमा कालिदासस्य।"



## ‘गीता’ का उपदेश अर्जुन को ही क्यों ?

डॉ० अनुजा अग्रवाल  
वरिष्ठप्रवक्त्री (बी०एड० विभागस्य)

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि तू लड़ ! इसलिए नहीं कि भगवान कृष्ण की लड़ने में कोई उत्सुकता थी। कृष्ण, जिनका हृदय स्त्री से भी ज्यादा कोमल है, वह अर्जुन को जो कि बहुत बहादुर पुरुष थे, युद्ध से भाग रहे थे, उनको लड़वाने के लिए प्रेरणा देने वाले बने। आखिर कृष्ण को इतनी आग्रह करने की क्या जरूरत थी कि अर्जुन लड़े?

कृष्ण को एक बात साफ थी, अर्जुन नहीं लड़ते हैं तो भी युद्ध होकर रहेगा, लेकिन बहुत बुरे हाथों से होकर रहेगा। अर्जुन उन सबसे बेहतर हैं। और अर्जुन युद्ध से भागना चाहते हैं, इसी वजह से कृष्ण को और भी स्पष्ट हो गया कि अर्जुन से बेहतर कोई नहीं। युद्ध तो होकर रहेगा। युद्धखोर करेंगे। सोचो! अगर अर्जुन की जगह भीम के रथ पर कृष्ण बैठे होते, तो शायद “गीता” उत्पन्न ही ना होती, क्योंकि भीम इतने आतुर होते कि जल्दी रथ आगे बढ़ाओ, आगे ले चलो, हो सकता है, कृष्ण खुद ही कहते कि क्षमा कर, यह युद्ध ठीक नहीं है। युधिष्ठिर के भी सारथी बन सकते थे लेकिन उनके सिद्धांत इतने कठोर थे कि जो सही लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए रुकावट पैदा करते। लेकिन अर्जुन युद्ध से भागने के लिए कहने लगे, इसलिए अर्जुन ने सिद्ध कर दिया कि वह आदमी भला है, एकदम भला। कृष्ण को पक्का हो गया कि इस भले आदमी के हाथ में तलवार दी जा सकती है। अर्जुन के द्वारा ही कर्म योग का सिद्धांत दिया जा सकता है।

कर्म योग एक बहुत विशेष तरह का कर्म है। हर कर्म, कर्मयोग की परिभाषा में नहीं आता। अर्जुन भी युद्ध कर रहे हैं, दुर्योधन भी युद्ध कर रहे हैं, दूर से देखने पर लगेगा कि दोनों एक ही काम कर रहे हैं, फिर भी दोनों नहीं हुए कर्मयोगी।

छोड़ दो अर्जुन और दुर्योधन की तुलना। अर्जुन और भीम तो एक ही पक्ष से लड़ रहे हैं ना? पर दोनों कर्मयोगी नहीं हुए। क्यों? अर्जुन लड़ रहे हैं कृष्ण के लिए, भीम लड़ रहे हैं कि चोट है, द्वेष है, राज्य पाना है, दुर्योधन को मिटाना है, द्रोपदी का सम्मान जीतना है। दोनों एक ही पक्ष पर खड़े हैं, पर दोनों कर्मयोगी नहीं हुए।

जो कृष्ण के लिए युद्ध कर रहा है, वह कर्म योगी है जो किसी और के लिए व अपने लिए युद्ध कर रहा है वह कर्म योगी नहीं हो गया।

“यह मत देखो क्या कर रहे हो यह देखो किसके लिए कर रहे हो” जिसके लिए कर रहे हो अगर उसका नाम कृष्ण है तो वह है कर्म योग।

और कृष्ण माने क्या? कृष्ण माने निराकार ब्रह्म, कृष्ण माने स्वयं मुक्ति। कृष्ण का संबंध किसी धर्म प्रतिमा से नहीं है।

श्री कृष्ण ने अर्जुन को नहीं चुना बल्कि अर्जुन ने श्री कृष्ण को अपना सारथी चुना। अर्जुन ही ऐसे पात्र हैं जो पूरी तरह सक्षम होने के बावजूद मुक्ति पाना चाहते थे।

वर्तमान संदर्भ में भी जो भी पूर्ण सक्षम होने पर अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर, सही जीवन लक्ष्य निर्धारित करके, कृष्ण के लिए कार्य करेगा, कृष्ण उसके जीवन युद्ध में, उसके सारथी बनकर उसके लिए नई “गीता” रच देंगे।



## मैं

डॉ० उपासना सिंह  
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभागस्य

मैं कौन हूँ ?  
मैं मौन हूँ,  
मैं कहाँ हूँ ?  
मैं ही तो सारा जहाँ हूँ,  
मैं किसकी हूँ ?  
जिसने अपनाया उनकी हूँ,  
मैं क्यों हूँ ?  
करने को जन्म और मृत्यु हूँ  
मैं क्या हूँ ?  
मैं जीव और ब्रह्म हूँ,  
मैं आदि और अनन्त हूँ  
मैं शक्ति और शिवांश हूँ ।  
मैं चूल्हे की आग हूँ, मैं श्मशान की राख हूँ  
मैं शुद्र हूँ, मैं ही तो रुद्र हूँ  
मैं जन्म का आधार हूँ, मैं मृत्यु का संसार हूँ ।  
मैं शिव की जटा की धार हूँ, मैं चतुर्मुख ब्रह्म का  
आधार हूँ  
मैं वासुदेव की शैय्या हूँ, मैं उनकी नाग छवैया हूँ  
मैं काली की हुंकार हूँ, मैं गौरी की झंकार हूँ  
मैं महाकाल की रानी हूँ, मैं बृहस्पति की ज्ञानी हूँ  
मैं इन्द्र का अभिमान हूँ, मैं तीनों लोक की शान हूँ  
मैं पृथ्वी का विस्तार हूँ, मैं अर्णव की ललकार हूँ  
मैं अरण्य की सी छाया हूँ, मैं मिथ्या जगत की माया हूँ  
मैं योग का अष्टाङ्ग हूँ, मैं जैमिनी का कर्मकाण्ड हूँ  
मैं प्रत्यभिज्ञा की शिव-शक्ति, मैं सांख्य की पुरुष प्रकृति,  
मैं पंचभूतों की भौतिक हूँ, मैं लौकिक और अलौकिक हूँ

मैं न्याय के तीनों कारण हूँ, मैं ब्रह्मसूत्र का आवरण हूँ  
मैं अणु और परमाणु हूँ, मैं सृष्ट्युत्पत्ति की जीवाणु हूँ  
मैं वेदत्रयी की आख्या हूँ, मैं ब्राह्मण ग्रन्थ की व्याख्या हूँ  
मैं अथर्ववेद का प्रपंच हूँ, मैं विद्या और मैं मंत्र हूँ  
मैं उपनिषद् का रहस्य हूँ, मैं वेदव्यास का भाष्य हूँ  
मैं व्याकरण में सर्वज्ञ हूँ, मैं गीता का स्थिरप्रज्ञ हूँ  
मैं महाभारत का पर्व हूँ, रामायण का मैं सर्व हूँ  
मैं सीता हूँ, मैं कौशल्या मैं कुन्ती और कैकेयी हूँ  
मैं मन्दोदरी मैं गान्धारी, मैं द्रुपदपुत्री सी ज्वाला हूँ  
अभिमन्यू की मैं जननी हूँ, मन्थरा की मैं करनी हूँ  
मैं लोपा, मुद्रा, गार्गी हूँ, मैं उर्वशी, रम्भा सी स्वर्गीय हूँ  
मैं अरि के लिए आरि हूँ, मैं सब पर एक ही भारी हूँ  
मैं जीवन का आधार हूँ, मैं सर्वगुणों का सार हूँ  
ममता की मैं छाया हूँ, माँ पितृचरण की काया हूँ  
गृहस्थ की मैं माया हूँ, सन्तति की मैं साया हूँ  
मैं पुरखों का वरदान हूँ, मैं नई पीढ़ी का मान हूँ  
जीवन का मैं तान हूँ, अपनों की मैं आन हूँ  
सुहाग की मैं लाली हूँ, मैं अन्नपूर्णा की थाली हूँ  
मैं आँगन द्वय की लक्ष्मी हूँ, मैं सर्वज्ञान में सक्षमी हूँ  
मैं स्वयंभू की स्वामिनी हूँ, मैं दासी नहीं दामिनी हूँ  
मैं वासना नहीं उपासना हूँ, मैं विश्वम्भर की साधना हूँ  
मैं स्त्री हूँ, मैं जगत में इत्र सी हूँ  
मैं आधारी हूँ, संसारी हूँ, मैं जगतारी और त्रिपुरारी हूँ  
मैं नारी हूँ, मैं नारी, मैं नारी हूँ,  
मैं कौन हूँ? मैं मौन हूँ ।



## श्रीमद्देवीभागवतपुराणे रुद्राक्षमहत्त्वम्

डॉ० निशि

अतिथिप्रवक्ता संस्कृतविभागे

श्रीमद्देवीभागवतपुराणे एकादशस्कन्धस्य तृतीयोऽध्यायतः सप्तममध्यायं यावत् रुद्राक्षधारणस्य माहात्म्यं, रुद्राक्षोत्पत्तिः स्वरूपश्च रुद्राक्षधारणस्य विधानञ्च वर्णितम्। अथ च रुद्राक्षाधिदेवतानाम् वर्णनमपि प्राप्यते। रुद्रस्य अक्ष्णः उत्पत्तेः कारणात् अस्य रुद्राक्षमिति संज्ञा अभवत्। वनस्पतिशास्त्रदृष्ट्या अस्य नाम एलियोकर्पसगनीट्रस अस्ति। इदं मुख्यरूपेण उष्णकटिबन्धप्रदेशेषु जायते वर्धते च। मुख्यरूपेण च हिमालयस्य उपत्यकासु, गङ्गायाः क्षेत्रे, इण्डोनेशियायाः, दक्षिणपूर्वी एशियायाः प्रदेशेषु प्राप्यते।

देवीभागवतपुराणस्य चतुर्थेऽध्याये रुद्राक्षस्य उत्पत्तिः स्वरूपश्च वर्णितोऽस्ति। त्रिपुरनाम्नः असुरस्य संहारहेतौ देवतानाम् उद्धारार्थम् च भगवान् शिवः विघ्ननाशार्थं अघोरास्त्रस्य चिन्तनम् अकरोत्। एकसहस्राणि वर्षाणि यावत् स्वनेत्राणि न अमीलत् यस्मात् कारणात् तस्य अक्षिभ्यः अम्बुबिन्दव अपतन्। तेभ्यः बिन्दुभ्यः रुद्राक्षस्य विशालो वृक्ष उत्पन्नोभवत्। अस्मात् रुद्राक्षवृक्षात् फलरूपे अष्टात्रिंशत् रुद्राक्षाणि उत्पन्नानि अभवन्। रुद्रस्य दक्षिणनेत्रात् सूर्यनेत्रात् वा कपिलवर्णस्य द्वादशरुद्राक्षाणि, वामनेत्रात् चन्द्रनेत्रात् वा श्वेतवर्णस्य षोडशरुद्राक्षाणि, मध्यनेत्रात् तृतीयनेत्रात् अग्निनेत्रात् वा कृष्णवर्णस्य दशरुद्राक्षाणि उत्पन्नानि अभवन्। एते रुद्राक्षाणि वर्णव्यवस्थानुसारेण श्वेतवर्णस्य रुद्राक्षं बाह्यणः, रक्तवर्णस्य रुद्राक्षं क्षत्रियः, मिश्रवर्णस्य रुद्राक्षं वैश्यः, कृष्णवर्णस्य रुद्राक्षञ्च शूद्रः कथ्यते।

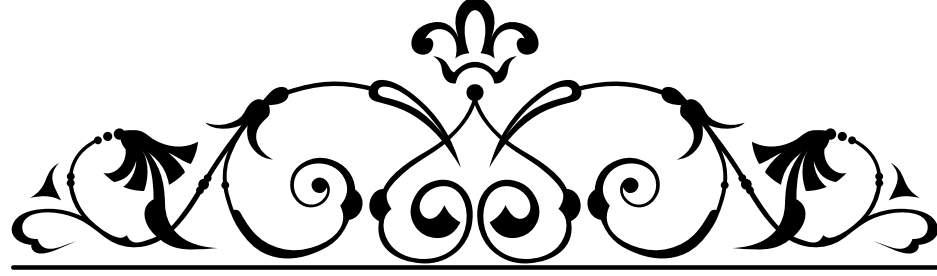
तृतीयेऽध्याये वर्णितम् यत् देवर्षिपितृतोषकं स्नानतर्पणोपरान्तं, सूत्रे निबद्धा शुद्धा कृत्वा च रुद्राक्षमाला धारणीया। यो नरः कण्ठे द्वात्रिंशत्, मस्तके चत्वारिंशत्, कर्णयोः षट्-षट्, हस्तयोः द्वादश-द्वादश, भुजयोः षोडश-षोडश, नेत्रयोः एकं-एकं, शिखायां एकं, वक्षस्थले अष्टाधिकशतम् रुद्राक्षम् धरति सः साक्षात् नीलकण्ठशिवो भवति। जनः शरीरस्य यस्मिन् भागे रुद्राक्षं धरति तत्र तत्र नानादेवता प्रतिष्ठिताः भवन्ति। यो नरः रुद्राक्षं धरति सः सर्वपापेभ्यो मुक्तो भवति। यश्च रुद्राक्षधारणे लज्जामनुभवति सः जन्मजन्मान्तरेऽपि मोक्षं न प्राप्नोति।

शिवरूप-एकवक्त्ररुद्राक्षं ब्रह्महत्यायाः पापमपि नाशयितुं समर्थं भवति। देवीदेवरूपद्विवक्त्ररुद्राक्षं द्विप्रकारकं पापं नाशयति। अग्निरूपत्रिवक्त्ररुद्राक्षं स्त्रीवधपापं, ब्रह्मारूप चतुर्वक्त्ररुद्राक्षं नरवधपापं, कालाग्निरूपपञ्चवक्त्ररुद्राक्षं भक्ष्याभक्ष्यपापं अगम्यस्त्रीभोगपापञ्च, कार्तिकेयरूपषड्वक्त्ररुद्राक्षं ब्रह्महत्यापापं, कामदेवरूपसप्तवक्त्ररुद्राक्षं स्वर्णचौरकर्मपापं नाशयति। विनायकदेवरूपाष्टवक्त्ररुद्राक्षं दूषितकुलस्य स्त्रीणां संसर्गात् गुरोर्भार्यायाश्च संसर्गात् जनितपापं नाशयति। अन्नवस्त्रस्वर्णादीन् प्रददाति च। भैरवरूपनववक्त्ररुद्राक्षं सहस्रभ्रूणहत्यायाः शताधिकब्रह्महत्यायाश्च पापं नाशयति। नववक्त्ररुद्राक्षं भोगं मोक्षञ्च दातुम् शक्नोति। जनार्दनरूपदशवक्त्ररुद्राक्षेण ग्रहपिशाचवेतालब्रह्मराक्षसपन्नगेभ्यो जनितानि विघ्नानि शान्तानि भवन्ति। एकादशरुद्ररूप-एकादशवक्त्ररुद्राक्षधारणात् सहस्रमेव अश्वमेधवाजपेययज्ञसमं लक्षगोदानसमञ्च फलं प्राप्नोति। आदित्यरूपद्वादशवक्त्ररुद्राक्षधारणात् अश्वमेधयज्ञफलसमं फलं प्राप्नोति। इदं पशुहत्याजनितपापं नाशयति च। कार्तिकेयरूपत्रयोदशवक्त्ररुद्राक्षः सर्वकामनानां सिद्धयति। स्वमातृपितृभातृहत्यापापं नाशयति। चतुर्दशवक्त्ररुद्राक्षं धृत्वा नरः स्वयं साक्षात् शिवतुल्यो भवति। अतः रुद्राक्षमिदं सर्वेषां पापानां फलं नाशयितुं समर्थं भवति। रुद्राक्षेण न केवलं पापकर्मभ्यो मुक्तिः प्राप्यते अपितु शारीरिकरोगेभ्योऽपि मोचनं प्राप्यते। उच्चरक्तचापेऽपि अस्य धारणं लाभकारी भवति। अत एव रुद्राक्षफलमिदं शारीरिकमानसिकाध्यात्मिकदृष्ट्या बहूपकारी हितकारी च सिद्धयति।

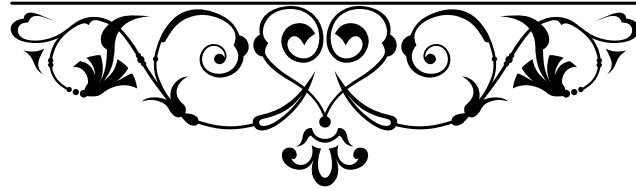
॥ इति शम् ॥



सौरभ : 2024-2025



# ENGLISH SECTION



## Editorial

Sourabh is more than a college magazine –it is the reflective surface of our institution’s soul, capturing its intellectual vitality, creative impulses, and emotional depth. It serves as a vibrant platform through which the faculty and students of our college articulate their thoughts, experiences, and imaginative visions. Our constant endeavour has been to ensure that this magazine becomes a space where voices are not merely heard but thoughtfully preserved.

Giving words to one’s emotions is among the most challenging of human acts. As Khalil Gibran beautifully observes, “The depth of your sorrow is revealed by the measure of your joy.” To write is to expose that depth with honesty and courage. I take immense pride in acknowledging that our students have embraced this challenge with sensitivity and remarkable literary finesse. Their contributions reflect not only creative skill but also introspection, sincerity, and intellectual maturity.

This edition of Sourabh is a heartfelt attempt to celebrate and showcase the immense talent nurtured within our college. Each piece—be it reflective, analytical, or creative—adds a distinct voice to the collective narrative of our academic community. Together, these writings form a rich mosaic of ideas, experiences, and aspirations, affirming the belief that creativity flourishes where expression is encouraged.

As Virginia Woolf aptly remarked, “Words do not live in dictionaries; they live in the mind.” Through Sourabh, these living words find resonance, meaning, and permanence. The magazine thus becomes not only a record of talent but also a testament to the vibrant cultural and intellectual ethos of our institution.

I extend my sincere appreciation to all contributors and the editorial team whose dedication has made this edition possible. May Sourabh continue to inspire young minds, nurture creative confidence, and illuminate the path of thoughtful expression in the years ahead.

With warm regards,



**Prof. Mamta Upadhyay**  
Incharge (Deptt. of English)



## I Shall Not Die In Vain

Prof. Mamta Upadhyay

Deptt. of English

It pains me to see  
My labor lost, my toil unseen,  
Efforts fading like whispers in the wind,  
Their worth forgotten, their weight unheeded.

With patient hands, I planted trees,  
Nurtured roots in hopeful soil.  
Yet others came, plucked the fruit,  
Savored the sweetness,  
And left my garden barren, bare.

But I will not wane, nor will I weep.  
I will plant again, with steadfast will,  
Teach my students to tend the earth,  
To guard, not steal; to give, not take,  
To honor the hands that sow.

I will shape them into souls  
Who serve with truth and grace,  
Who stand for justice,  
And walk with light upon their path.

I shall not die in vain.  
One day, my students will stand by my grave,  
And carve these words upon the stone:

"Here rests our mentor,  
Who planted wisdom in our hearts,  
And left the world in bloom."



## Digital Stress : Causes Effects & Remedies In The Modern Age

Prof. Bhawna Mittal  
Assistant Professor  
Deptt. of Physical Education

In today's hyper-connected world, digital devices have become an essential part of our daily lives. From smartphones and laptops to social media platforms and online classes, we are constantly engaged with digital screens. While this connectivity offers convenience and speed, it also brings with it a rising concern — **digital stress**.

**Digital stress** refers to the mental pressure and anxiety caused by the overuse of digital technologies. It often results from constant notifications, the pressure to stay updated, online comparisons, cyberbullying, and a lack of digital boundaries.

### Causes of Digital Stress

- 1. Information Overload:**  
The internet offers an endless stream of news, updates, and opinions. Constantly consuming this information can overwhelm the brain, leading to confusion and stress.
- 2. Social Media Pressure:**  
The urge to present a perfect life online and the habit of comparing oneself to others can lead to low self-esteem, anxiety, and even depression.
- 3. Work-from-Home or Online Learning Fatigue:**  
Long hours of screen time for work or study without breaks can cause eye strain, mental fatigue, and a lack of motivation.
- 4. Lack of Personal Time:**  
Being constantly available through messages, calls, and emails can blur the line between personal and professional life, reducing rest and recreation time.
- 5. Fear of Missing Out (FOMO):**  
Seeing others engage in exciting activities or achieve milestones online can make individuals feel left out or inadequate.
- 6. Constant Notifications:**  
Frequent pings from apps, emails, and social media can interrupt focus and create a sense of urgency, leading to anxiety and reduced productivity.
- 7. Cyberbullying and Online Harassment:**  
Negative comments, trolling, and online bullying can deeply affect emotional well-being, especially among teenagers and young adults.

8. **Digital Dependence:**

Excessive reliance on gadgets for entertainment, communication, or even decision-making reduces real-world engagement and increases stress when the device is unavailable.

9. **Sleep Disruption:**

Using phones or laptops before bedtime can affect melatonin levels due to blue light exposure, leading to poor sleep and fatigue.

10. **Pressure to Respond Quickly:**

The expectation to be available and respond immediately to texts, emails, and messages creates unnecessary stress and reduces personal time.

11. **Online Learning Challenges:**

Students often face digital fatigue, lack of motivation, technical issues, and a feeling of isolation during prolonged online learning sessions.

12. **Digital Surveillance and Privacy Concerns:**

Worries about being tracked online, data leaks, and loss of privacy can create a constant feeling of unease and mistrust.

13. **Online Shopping Triggers:**

Constant advertisements and offers can tempt users into impulsive buying, leading to financial stress and buyer's guilt.

14. **Multitasking on Devices:**

Switching between apps, tabs, or platforms to multitask can overload the brain, reduce concentration, and increase mental fatigue.

15. **Inconsistent Digital Boundaries at Home:**

Lack of rules about screen time for children or unrestricted gadget use by parents can disrupt family harmony and raise stress levels for everyone.

**Effects of Digital Stress**

1. **Mental and Emotional Effects:**

- o **Anxiety and Depression:** Constant connectivity and comparison can lead to low self-esteem, negative thoughts, and emotional exhaustion.
- o **Irritability and Mood Swings:** Overuse of screens can cause frustration, impatience, and sudden mood changes.
- o **Reduced Attention Span:** Continuous notifications and multitasking reduce the brain's ability to focus for long periods.

2. **Sleep Disorders:** Exposure to screens before bedtime affects melatonin production, causing insomnia and restless sleep.

3. **Social Withdrawal:** Overuse of digital platforms may reduce real-life social interaction, leading to feelings of loneliness and isolation.
4. **Physical Effects:**
  - o **Eye Strain (Digital Eye Syndrome):** Staring at screens for long hours causes dry eyes, blurred vision, and headaches.
  - o **Neck and Back Pain (Tech Neck):** Poor posture while using devices can lead to musculoskeletal problems.
5. **Fatigue and Low Energy:** Mental overload from too much digital input leads to physical tiredness and a lack of motivation.
6. **Obesity and Poor Fitness:** A sedentary lifestyle due to prolonged screen use limits physical activity, contributing to weight gain and related issues.
7. **Academic and Work-Related Effects:** Constant distractions lower work efficiency and delay task completion. Continuous online meetings, assignments, and screen time can lead to emotional and mental burnout. Over-dependence on technology can dull original thinking and problem-solving abilities.
8. **Behavioral Effects:** Inability to stay away from screens even for short periods is a growing concern. Excessive gaming or screen time can increase aggression or disobedience. People often lose track of time scrolling through social media, affecting daily routines.

### Remedies for Digital Stress

1. **Set Screen Time Limits:** Use apps or phone settings to restrict screen time, especially on social media. Schedule regular digital detox hours or days.
2. **Take Frequent Breaks:** Follow the 20-20-20 rule: every 20 minutes, look at something 20 feet away for 20 seconds to reduce eye strain and fatigue.
3. **Maintain Work-Life Balance:** Set fixed working hours and avoid checking emails or messages after work. Prioritize face-to-face interactions with family and friends.
4. **Engage in Offline Activities:** Pursue hobbies like reading, drawing, gardening, or walking. These activities refresh the mind and reduce dependency on screens.
5. **Practice Mindfulness and Relaxation:** Techniques like yoga, meditation, and deep breathing can help manage stress and improve mental clarity.
6. **Unfollow or Mute Stressful Content:** Clean your digital space. Unfollow pages or people that make you feel anxious or pressured.
7. **Establish a Digital Curfew:** Set a fixed time in the evening to disconnect from screens — at least 1–2 hours before bedtime — to promote restful sleep and mental calm.

8. **Use “Do Not Disturb” Mode:** Activate DND mode during study, work, or relaxation time to avoid unnecessary interruptions and regain control over your attention.
9. **Create a Tech-Free Zone:** Designate certain areas of your home — like the bedroom, dining table, or meditation space — as gadget-free zones.
10. **Practice Digital Minimalism:** Uninstall unnecessary apps, limit the number of social media platforms you use, and reduce digital clutter for a more peaceful experience.
11. **Engage in Nature Therapy:** Spending time in nature, even a short daily walk, can help refresh the mind, reduce screen fatigue, and improve mood.
12. **Use Blue Light Filters:** Install blue light filters or wear anti-glare glasses while using screens to protect your eyes, especially at night.
13. **Follow a Structured Daily Routine:** Balancing screen time with offline activities like exercise, reading, or chores adds rhythm and reduces over-dependence on digital devices.
14. **Schedule Social Media Time:** Instead of checking apps frequently, set specific time blocks during the day to engage with social media mindfully.
15. **Yogic Practices to Relieve Digital Stress: Pranayama (Breathing Techniques):** Helps calm the nervous system and reduce anxiety caused by digital overload.
  - o **Anulom Vilom (Alternate Nostril Breathing):** Balances the left and right brain, improves focus, and calms the mind.
  - o **Bhramari (Humming Bee Breath):** Reduces mental tension, relieves headaches, and promotes emotional balance.

**Asanas (Yoga Postures):** Release tension from the body, especially areas affected by screen use like the neck, shoulders, and spine.

  - o **Tadasana (Mountain Pose):** Improves posture and circulation.
  - o **Bhujangasana (Cobra Pose):** Relieves neck and back pain caused by poor posture.
  - o **Balasana (Child's Pose):** A calming posture to relax the mind and body.
  - o **Setu Bandhasana (Bridge Pose):** Opens the chest and reduces stress and anxiety.

**Meditation (Dhyana):** Regular meditation helps break the cycle of digital distraction and fosters inner peace.

  - o **Mindfulness Meditation:** Helps you become aware of your digital habits and regulate them.
  - o **Trataka (Candle Gazing):** Enhances concentration and reduces eye strain from screens.
  - o **Yoga Nidra (Yogic Sleep):** A powerful deep relaxation technique that rejuvenates the mind and body. Practicing Yoga Nidra for 15–20 minutes a day can feel as refreshing as hours of sleep.



## Second Innings

Dr. Seema Agarwal  
Deptt. of Education

The term “**second innings**,” a metaphor borrowed from cricket, denotes a new chapter or phase in life. While often associated with retirement or significant career transitions, it applies to any major life change. It signifies a departure from established career paths and offers a fresh start to explore new interests, passions, and goals, enabling the pursuit of personal fulfillment and purpose.

### A Fresh Beginning

Many view retirement as the culmination of life goals, initiating a passive, dependent phase marked by health challenges and limitations. Conversely, it represents a **second innings** — a **revitalized start** with renewed enthusiasm and perspective.

### Exploring Passions

This period allows for the pursuit of new objectives and the exploration of passions previously unattainable due to family responsibilities and demanding work schedules. Individuals should engage in activities that foster joy and fulfillment, such as art, music, gardening, writing, travel, socializing, volunteering, or physical fitness. Numerous fulfilling opportunities are available during this phase.

### Leveraging Experience and Maturity

While physical limitations may arise, the second innings provides a wealth of life experience and mature perspective, enabling individuals to approach new challenges with increased confidence and insight.

### Empowerment and Self-Actualization

Although often linked to post-retirement careers, the second innings encompasses personal growth, volunteerism, and the pursuit of a fulfilling life. This new phase should be embraced optimistically, focusing on joy and purpose to find a personally meaningful path.

Maslow's *Hierarchy of Needs* suggests that human motivation follows a hierarchical structure, beginning with basic physiological needs (air, food, water, shelter, clothing, sleep) and progressing through safety, love and belonging, esteem, and finally, self-actualization.

This represents the apex of human potential — the pursuit of self-actualization and becoming one's best self. Maslow's hierarchy, often visualized as a pyramid, positions self-actualization at its pinnacle, above fundamental needs. Individual progression through this hierarchy is driven by the fulfillment of lower-level needs.

### Post-Career Contributions

To maximize post-career contributions, individuals should leverage existing skills and experience through consulting, freelance work, mentorship, or passion projects. Community engagement through volunteering or teaching, coupled with well-being prioritization and social connection, is also recommended.

## Detailed Strategies

### 1. Leveraging Expertise:

Establish a consulting practice or mentor junior professionals in fields where you have excelled or have long-standing experience, such as teaching, marketing, finance, or IT. Alternatively, pursue freelance opportunities in writing, designing, or technology. Part-time roles aligned with prior experience offer flexibility while maintaining professional engagement.

### 2. Cultivating Passions:

Undertake passion projects such as blogging, writing, or exploring personal hobbies. Enroll in online courses to acquire new skills or deepen existing knowledge.

### 3. Community Contribution:

Volunteer with organizations that reflect personal values, such as environmental or social service groups. Share your expertise through teaching or mentoring, and participate in local community initiatives.

### 4. Prioritizing Well-Being and Connection:

Maintain physical and mental health through exercise, a healthy diet, and stress management. Nurture relationships with family, friends, and colleagues. Establish a structured daily routine that promotes purpose and productivity.

### 5. Embracing Technology:

Utilize online platforms for learning, networking, and social engagement. Leverage social media for connection and knowledge sharing. Explore new technologies to enhance personal and professional life.



## Education and Employability

Dr. Babita Maji  
Assistant Professor  
Deptt. of Political Science

No society can dream of marching ahead on the path of rapid progress without the vibrant support of its education system, as education is the ignition that sparks the cognitive instincts of learners. It leads to numerous discoveries and inventions, evident in the mind-boggling improvement in the quality of products, services, infrastructure, healthcare, and communication. Philosophers as well as revolutionaries have often presented plans to regulate and control the entire learning process, not merely restricting themselves to pedagogy but also including the curricular framework.

The great thinker Plato chalked out the minutest details of the education system in his ideal state to facilitate the smooth progression of society towards its goals. Rousseau aptly described his republic as the greatest treatise on education ever written. Education does not merely lead to knowledge, research, and inventions—it nurtures learners to excel in fields closer to their hearts, such as sports, music, dance, painting, and drawing. The overall development of the individual's personality is the ultimate goal of education. The learner should not only be equipped with basic skills and capabilities upon leaving the institution but also with the much-needed soft skills that help them navigate triumphantly through the challenges of life and profession.

On the global stage, the flurry of summits such as BRICS, the Shanghai Cooperation Organisation, and most notably the G20 Summit—where India commendably hosted world leaders in Delhi under its presidency—demonstrates the importance of shared goals. The theme of this year's G20 Summit, “*One Earth, One Family, One Future,*” resonates strongly with people worldwide. With the advent of liberalisation, privatisation, and globalisation, neo-liberal ideology and the market economy have distinctly impacted human life, including the courses and skills taught to learners in tune with market demands.

Employability of an individual depends upon personal assets or intrinsic characteristics such as capabilities, willingness, achievements, skills, understanding, and personal attributes. In line with economic needs, higher education institutions must ensure that learners across disciplines are equipped with better employability prospects when they enter the job market.

Scholars such as Small, Shacklock, and Marchant, in their research on employability, interpret it as the capacity to be self-reliant in navigating the labour market—utilising knowledge, individual skills, and attributes, adapting them to the employment context, and showcasing them to employers, while also accounting for external constraints. Possession of soft skills and technical skills enhances a person's employability, though individuals must remain committed to continually upgrading their capabilities in line with the demands of a market-oriented economy to stay relevant.



## From Chalkboards to Chatbots : Embracing Digital Tools In Modern Education

Dr. Shweta Mittal  
Deptt. of Computer Science

The transition from antiquated chalkboards to contemporary chatbots perfectly captures the revolutionary effect of digital tools on education. Static methods of instruction were the norm in the past, which limited student participation and interactivity. But with the introduction of digital tools, education is now more flexible, accessible, and personalized.

Traditional chalkboards have been replaced by interactive whiteboards, which enable educators to present multimedia-rich lessons that accommodate a range of learning preferences. These interactive whiteboards make it easier to incorporate films, animations, and interactive tests, which improve understanding and memory of difficult subjects.

Chatbots are a revolutionary development in the field of contemporary education. These artificial intelligence (AI)-powered resources offer pupils individualized help and guidance around the clock. Chatbots ensure that students receive instruction timely, promoting a more flexible and responsive learning environment by helping with homework and answering questions.

Adaptive learning platforms such as Khan Academy and IXL have made personalized learning a cornerstone of contemporary education. With the help of these platforms, which evaluate each student's unique needs and offer personalized exercises and feedback, students can advance at their own speed. This individualized method promotes inclusion and efficacy in education by accommodating a range of learning styles and abilities.

Digital tools have also transformed communication and collaboration. Students and teachers can communicate easily with each other thanks to platforms like Google Classroom and Microsoft Teams, which enable resource sharing, assignment submission, and real-time feedback. Software for video conferences has become indispensable, especially in situations where learning is done remotely and distances cannot be bridged.

There are still difficulties in spite of all the advantages. Inequality in access to technology, or the "digital divide," continues to be a hindrance to inclusive education. Furthermore, sufficient training for educators is necessary for the efficient use of digital instruments. Through tackling these obstacles and seizing the opportunities presented by digital tools, we can establish an educational setting that is more efficient, captivating, and welcoming to all students.

In summary, the transition from chalkboards to chatbots is a significant revolution in education, fueled by digital tools that improve accessibility, personalization, and engagement in learning. We can completely realize the promise of these advances and build a more efficient and equitable educational system by tackling issues like the digital divide and making sure teachers have the necessary training.



## The Role of Zoology in Society

Dr. Garima Pundir  
Associate Professor  
Deptt. of Zoology

Zoology, the branch of biology that studies animals and their interactions with their ecosystems, plays an indispensable role in modern society. Its significance spans environmental conservation, medical science, economic development, education, and ethical considerations. This essay explores these diverse roles of zoology, illustrating its vital contributions to humanity and the planet.

### Biodiversity Conservation

One of the primary contributions of zoology is in the field of biodiversity conservation. Zoologists study animal species, their behaviors, habitats, and ecological relationships. This research is essential for understanding the intricate web of life that sustains ecosystems and human well-being. Biodiversity is crucial for ecosystem resilience, which ensures the provision of essential services such as clean air and water, pollination of crops, and climate regulation.

Zoologists identify threats to species and ecosystems, such as habitat destruction, climate change, pollution, and poaching. For instance, the study of amphibians, which are highly sensitive to environmental changes, can provide early warnings about ecosystem health. By understanding these threats, zoologists can develop conservation strategies to mitigate them. They work with governments, NGOs, and local communities to implement policies and actions that protect endangered species and habitats. Conservation efforts informed by zoological research help maintain biodiversity, which is essential for the health and stability of the planet's ecosystems.

### Medical Advancements

Zoology also significantly contributes to medical science. Research on animals has led to numerous medical breakthroughs that have improved human health and well-being. Studying animal physiology, genetics, and behavior provides insights into human biology and diseases. Many medical treatments and vaccines have been developed through animal research. For example, the study of immune responses in animals has been instrumental in developing vaccines for diseases such as rabies and polio.

Animal models are crucial for understanding the mechanisms of diseases and testing new treatments before they are used in humans. For example, mice are commonly used in cancer research to study tumor growth and test potential treatments. Additionally, the study of **zoonotic diseases** — diseases that can be transmitted from animals to humans — is critical for preventing and managing pandemics. The COVID-19 pandemic highlighted the importance of understanding animal hosts and transmission pathways to develop effective public health strategies.

### Environmental Monitoring

Zoologists play a key role in environmental monitoring. Animals are often **bioindicators**, meaning their health and behavior reflect the state of their environment. By studying changes in animal populations and behaviors, zoologists can detect early signs of environmental degradation. For example, a decline in bird populations might indicate air or water pollution, while changes in fish populations can signal water quality issues.

This information is crucial for developing environmental policies and conservation strategies. Effective environmental monitoring helps protect natural resources and ensures sustainable development. For instance, monitoring coral reef health through the study of fish and invertebrates helps in the management and preservation of these vital ecosystems, which are essential for marine biodiversity and coastal protection.

### **Economic Contributions**

Zoology supports various economic sectors, including agriculture, fisheries, and tourism. In agriculture, knowledge of animal behavior and physiology can improve livestock management practices, enhancing productivity and animal welfare. For example, understanding the nutritional needs and social behaviors of livestock can lead to better feeding practices and housing conditions, resulting in healthier animals and higher yields.

In fisheries, zoologists study marine life to ensure sustainable fishing practices. This research helps maintain fish populations and protect aquatic ecosystems, which are vital for the fishing industry's long-term viability. Sustainable fishing practices informed by zoological research prevent overfishing and support the livelihoods of communities that depend on fishing.

Wildlife tourism, which relies heavily on zoological expertise, generates significant revenue and employment opportunities. Safaris, bird-watching tours, and marine wildlife excursions attract tourists worldwide, contributing to local economies and promoting conservation awareness. For example, the presence of charismatic species such as elephants, tigers, and whales draws tourists whose spending supports conservation efforts and provides income for local communities.

### **Educational and Scientific Value**

Zoology enriches education and scientific knowledge by deepening our understanding of life on Earth. It offers insights into evolutionary processes, genetics, and the relationships between species and their environments. This knowledge is disseminated through educational programs at schools, universities, and museums, inspiring future scientists and fostering a broader appreciation for the natural world.

Zoological research also contributes to interdisciplinary studies and innovations. For instance, understanding the biomechanics of animal movement has applications in robotics and engineering. The study of animal communication and social structures can inform artificial intelligence and human sociology. Thus, zoology not only expands our knowledge of the natural world but also drives technological and scientific advancements.

### **Ethical and Philosophical Perspectives**

The study of animals raises important ethical and philosophical questions about human–animal relationships. Zoologists often engage in discussions about animal rights, welfare, and conservation ethics, influencing public opinion and policy. This engagement promotes more humane and ethical treatment of animals, both in the wild and in captivity.

Ethical considerations in zoology also drive the development of better research practices that minimize harm to animals. For example, the principles of the **3Rs** — Replacement, Reduction, and Refinement — guide researchers to find alternatives to animal testing, use fewer animals, and improve experimental techniques to reduce suffering. These ethical frameworks ensure that zoological research is conducted responsibly and humanely.

## Conclusion

In conclusion, zoology plays a pivotal role in society by advancing our understanding of animals and their ecosystems. Its contributions to biodiversity conservation, medical science, environmental monitoring, economic development, education, and ethical considerations are invaluable. As we face global challenges such as climate change, habitat loss, and emerging diseases, the importance of zoology in informing and guiding our responses is paramount. Supporting zoological research and education is essential for a sustainable and harmonious coexistence with the natural world. By valuing and investing in zoology, we ensure a healthier planet for future generations.

## Look Deep in to the Nature

Lakshita Verma  
Student  
Deptt. of Geogrphy

Nature is our Creator.  
She designed you, me, and other.  
Hence she has the prestige of mother.  
She is ful of grace with beauty.  
Her features are noble and Lofty.  
With this she carry on her constant duty.  
In a world of continue change,  
So how can that nature manage?  
That is why the world is in a terrible stage.  
Nature and human is not apart,  
But men thinks nature is our art.  
For protect the nature, we must make a quick start.  
Nature provides us, All the facilities free of cost.  
Human do not understand that we are but a bit and nature is vast.  
That' why, day by day, people are facing environent lost.  
Nature don't need people, but people need Nature.  
Nature enjoys great bliss that nothing can offer.  
Conservation is a state of harmony between men and nature's future.



## Psychology of Colours : A Journey into the Mind's Palette

Dr. Sunita Singh  
Assistant Professor  
deptt. of Psychology

*"Life is a great big canvas, and you should throw all the paint on it you can."* – **Danny Kaye**

Colours, with their vibrant hues and subtle shades, have a profound impact on our thoughts, emotions, and behaviours. From the calming blues of the ocean to the fiery reds of a sunset, colours evoke a myriad of sensations and associations that shape our perceptions of the world. In this exploration, we delve into the fascinating realm of colour psychology, unravelling the hidden meanings and psychological effects behind the colours that surround us.

### **The Language of Colours**

Colours communicate with us in a language that transcends words, conveying emotions, moods, and meanings with remarkable clarity. Each colour possesses its own unique personality and symbolism, eliciting different psychological responses and associations based on cultural, societal, and personal factors.

### **The Influence of Colour on Emotions**

Colours have the power to evoke a wide range of emotions, from tranquillity and joy to sadness and agitation. For example:

#### ***Blue***

Blue is often associated with feelings of calmness, serenity, and relaxation. This association likely stems from the calming effect of blue tones found in nature, such as the sky and the ocean. Research has shown that exposure to blue environments or objects can promote a sense of tranquillity and reduce feelings of stress and anxiety. Blue is also commonly associated with feelings of peace, stability, and security. The cool, steady nature of blue hues can evoke a sense of groundedness, making it a popular choice for environments where calm and order are desired, such as bedrooms and meditation spaces.

#### ***Red***

The colour red has a profound impact on emotions, often evoking strong and intense feelings. Symbolising passion and intensity, red can evoke excitement, energy, and even anger or aggression. Red is a highly attention-grabbing colour that can capture and hold the viewer's focus. It has been found to increase heart rate and blood pressure, leading to heightened arousal and alertness. In this sense, red is often used to create a sense of urgency or importance, making it an effective choice for signage, warnings, and calls to action.

#### ***Yellow***

Radiating warmth and optimism, yellow is often associated with happiness, positivity, and vitality. Its

bright and cheerful appearance can uplift the spirits and evoke a sense of warmth and enthusiasm. Its vibrant and dynamic nature can stimulate the senses and boost energy levels, making it an effective choice for promoting activity and engagement. Yellow is often used in marketing and advertising to convey energy and dynamism, particularly in industries such as sports, fitness, and entertainment. It is also associated with creativity, innovation, and originality, inspiring imaginative thinking and optimism.

### **Green**

Representing nature and growth, green is linked to feelings of balance, harmony, and renewal. Its soothing and refreshing appearance can evoke a sense of peace and serenity, making it an ideal choice for creating restful and rejuvenating environments. Green is often used in spaces where a sense of stability and calm is desired, such as offices, classrooms, and living areas. It is closely associated with nature and the outdoors, evoking feelings of connection, vitality, and renewal. Green also symbolises health and well-being; its association with growth and life makes it a comforting and healing colour.

### **White**

The colour white is often associated with purity, simplicity, and clarity. This association can create a sense of peace and tranquillity, promoting feelings of renewal and openness. Its clean and uncluttered appearance can promote mental clarity and focus. White can have a calming and peaceful effect on the mind and body. Its neutral and non-intrusive nature can foster serenity and relaxation, making it a popular choice for tranquil and restful environments. Its minimalist aesthetic can also convey sophistication, elegance, and modernity.

### **Black**

The colour black, often associated with darkness, mystery, and elegance, can evoke various emotions and psychological responses. Its deep and rich appearance can provoke feelings of curiosity and intrigue, drawing individuals into the unknown. In art, literature, and media, black is often used to create an air of mystery and suspense, captivating viewers with its depth. Black is also perceived as a colour of sophistication, elegance, and refinement. Its sleek and timeless aesthetic conveys luxury and exclusivity, making it a popular choice for formal attire, upscale décor, and high-end products.

However, black can also evoke feelings of depression, negativity, and pessimism. Its association with darkness and emptiness can create a sense of heaviness and despair, leading to feelings of sadness or hopelessness. In psychology, the term “black mood” is sometimes used to describe a state of deep sadness or depression.

By understanding the psychology of colours, we gain insight into the complex interplay between perception, emotion, and behaviour, unlocking the potential to harness the transformative power of colours in our lives. As we navigate the vibrant spectrum of hues that surrounds us, may we embrace the beauty and richness of colour psychology, allowing it to illuminate our path and deepen our understanding of the world.



## Nature In The Fight Against Cancer

Prof. Sonika Chaudhary  
Deptt. of Home Science

Many foods contain beneficial compounds that may help decrease the growth of cancer. Several studies also show that a higher intake of certain foods may be associated with a lower risk of the disease. Broccoli contains sulforaphane, a plant compound found in cruciferous vegetables that may have potent anticancer properties. One test-tube study showed that sulforaphane reduced the size and number of breast cancer cells by up to 75%. Similarly, an animal study found that treating mice with sulforaphane helped kill prostate cancer cells and reduced tumor volume by more than 50%.

Several studies have found that eating more carrots is linked to a decreased risk of certain types of cancer. Try incorporating carrots into your diet as a healthy snack or a delicious side dish a few times per week to increase your intake and potentially reduce your cancer risk. Beans are high in fiber, which some studies suggest may help protect against colorectal cancer. An animal study also found that feeding rats black beans or navy beans and then inducing colon cancer blocked the development of cancer cells by up to 75%.

Berries are rich in anthocyanins, plant pigments with antioxidant properties that may be associated with a reduced risk of cancer. In one human study, 25 people with colorectal cancer were treated with bilberry extract for seven days, which was found to reduce the growth of cancer cells by 7%. Cinnamon is well-known for its health benefits, including its ability to reduce blood sugar and ease inflammation. In addition, some test-tube and animal studies suggest that cinnamon may help block the spread of cancer cells. Including  $\frac{1}{2}$ –1 teaspoon (2–4 grams) of cinnamon in your diet per day may be beneficial in cancer prevention, and may also support blood sugar control and reduce inflammation.

Research has found that eating nuts may be linked to a lower risk of certain types of cancer. For instance, a study of 19,386 people found that higher nut consumption was associated with a decreased risk of dying from cancer. Olive oil is loaded with health benefits and is a staple of the Mediterranean diet. Several studies have even found that higher intake of olive oil may help protect against cancer.

Turmeric is a spice well-known for its health-promoting properties. Curcumin, its active ingredient, is a chemical with anti-inflammatory, antioxidant, and anticancer effects. In a test-tube study, curcumin was found to decrease the spread of colon cancer cells by targeting a specific enzyme related to cancer growth. Other studies have shown that curcumin may slow the growth of lung, breast, and prostate cancer cells.

Eating citrus fruits such as lemons, limes, grapefruits, and oranges has been associated with a lower risk of cancer in some studies. One large study found that participants who consumed more citrus fruits had

a lower risk of developing cancers of the digestive and upper respiratory tracts. High in fiber as well as heart-healthy fats, flaxseed can be a healthy addition to your diet. Research suggests that it may help decrease cancer growth and promote cancer cell death. Try adding one tablespoon (10 grams) of ground flaxseed daily by mixing it into smoothies, sprinkling it over cereal or yogurt, or adding it to baked goods.

Lycopene, a compound found in tomatoes, is responsible for their vibrant red color and anticancer properties. Several studies have found that increased intake of lycopene and tomatoes may reduce the risk of prostate cancer. Include a serving or two of tomatoes in your diet each day by adding them to sandwiches, salads, sauces, or pasta dishes. Garlic contains allicin, a compound shown to kill cancer cells in multiple test-tube studies. Several studies have found an association between garlic consumption and a lower risk of certain types of cancer.

Thus, we see that nature holds a basket full of opportunities to help fight this deadly disease.

## Miracle Tree

**Dr. Shweta Tyagi**  
**Assistant Professor**  
**Deptt. of Home Science**

Moringa is often called the "miracle tree" due to its remarkable versatility and nutritional value. The tree's leaves, seeds, bark, and roots are all edible and possess numerous health benefits, making it a valuable resource in various applications. Andhra Pradesh takes the leading role in producing drumsticks, followed by Tamil Nadu and Karnataka. Moringa cultivation is increasingly popular in Uttar Pradesh (UP), with initiatives encouraging farmers to grow moringa, a nutritional superfood, for both economic and health benefits.

### **Why you should take moringa leaves :**

- Rich in Vitamins A, C, B1 (Thiamin), B2 (Riboflavin), B3 (Niacin), B6, and Folate.
- Moringa leaves are also rich in magnesium, iron, calcium, phosphorus, and zinc.
- One cup of moringa leaves contains 2 g of protein, magnesium (8% of the Recommended Dietary Allowance or RDA), vitamin B6 (19% of the RDA), iron (11% of the RDA), riboflavin (11% of the RDA), and vitamin A (9% of the RDA).



## Women Empowerment in the Digital Age

Dr. Shweta Mittal  
Deptt. of Computer Science

The digital age has transformed every facet of human life, from communication and education to commerce and governance. One of the most significant and powerful outcomes of this transformation is the rise of women's empowerment through digital tools and platforms. As the world becomes increasingly connected through the internet and technology, women across the globe are leveraging these advancements to break barriers, gain independence, and become active participants in societal progress.

In earlier times, many women faced obstacles in accessing education, job opportunities, and public platforms due to traditional societal norms and geographical limitations. However, digital technology has opened new doors for learning and skill development that are not limited by location or financial constraints. Today, countless women are enrolling in online courses, participating in webinars, and accessing digital libraries to upgrade their knowledge and acquire new skills. This accessibility to education is not only enabling women to pursue careers but also to contribute meaningfully to their communities.

The digital space has also created a fertile ground for female entrepreneurs. Through e-commerce platforms, social media, and digital marketing tools, women can now start and grow businesses from their homes. Whether it's handmade crafts, consulting services, online coaching, or small-scale product-based ventures, women are using technology to reach customers globally, manage transactions, and build brand identities. This financial independence has played a critical role in improving their confidence and decision-making power, both in families and in society.

Social media platforms have emerged as powerful tools for women to raise their voices and advocate for change. Women are using blogs, videos, and campaigns to talk about gender equality, share their stories, and inspire others. Movements like #MeToo and others have gained momentum because digital spaces gave women a platform to speak out against injustice and violence. This digital expression has created communities of support, awareness, and collective strength, contributing significantly to the shift in public attitudes towards women's rights.

Moreover, digital financial services like online banking, mobile wallets, and digital payments have brought women into the formal financial system, especially in rural and underserved areas. Access to these tools means women can now control their earnings, save money securely, and make independent financial decisions. Many government schemes aimed at women's development are now linked with digital identities and direct bank transfers, ensuring transparency and efficiency.

However, with opportunities come challenges. Cyberbullying, online harassment, and privacy violations remain significant concerns for women in the digital world. Many women face abuse on social platforms or become targets of online scams and misinformation. To address this, digital literacy and awareness are crucial. Training women in cybersecurity, safe browsing practices, and the responsible use of technology is essential to ensure they can navigate the digital world confidently and safely.

Despite these challenges, the momentum of women's empowerment in the digital age continues to grow. Technology, when used effectively and inclusively, becomes a powerful equalizer. It bridges the gender gap by providing equal access to information, resources, and platforms for expression. Women are no longer confined to the roles assigned by traditional expectations; they are creators, innovators, leaders, and changemakers—powered by digital tools.

In conclusion, the digital age is not just about faster communication or smarter devices; it is about creating an inclusive future where every woman has the freedom to learn, lead, and thrive. By empowering women digitally, we are not only transforming individual lives but also paving the way for a more just, equitable, and progressive society.



## The Road Ahead

Prof. Mamta Upadhyay  
Deptt. of English

The road is rough, yet on I go,  
Through winds that wail and embers glow.  
I sought a path both kind and true,  
But every way was stripped and new.  
I lingered long for storms to cease,  
For dust to rest, for peace to breathe.  
Yet time stood still, the way unclear,  
And waiting only bred more fear.  
So step by step, though torn, I climb,  
With aching limbs but steadfast mind.  
The night is long, the peak is steep,  
Yet at the end, my dreams I'll keep.

## Nature's Harmony

Shashi Ahlawat  
B.Ed. II year

Beauty of nature seems to stretch out,  
In this breathtaking milieu, all love to hang out.  
When the wind whispers, leaves dance,  
Rivers flow in soft tune, nature's harmony enhanced.  
Birds sing in cheer, greeting the first light,  
Mountains echo with unity, by day and night.  
Sky, stars, and moon in silent talk—  
Under their gaze, all life walks.  
Nature's composition is pure and free,  
Man should live in harmony with the cosmos, in unity.  
Save the world from ruination, this is the plea;  
Within nature's rhythm, we find the key.



सौरभ : 2024-2025

## The Pain of Goodbye

Anny Saifi  
Guest Faculty  
Deptt. of English

It arrived without warning-  
Not a storm,  
But a stillness  
That shattered everything.  
A phone call,  
A hushed voice,  
And suddenly  
The world tilted.  
In that breath,  
The air grew heavy,  
As if time itself paused  
To grieve.  
The room filled with silence  
Too thick to carry,  
And the walls,  
Once warm with memory,  
Turned unfamiliar and cold.  
They were the keepers of childhood,  
Their love a steady flame,  
Burning through the years  
With gentle hands  
And lullabies of belonging.  
But when the end came,  
It came swiftly,  
Turning laughter into echoes,  
Rooms into ruins.  
Tears fell like unspoken prayers,  
And even the sky seemed  
To lower its gaze.  
No words could hold  
The weight of that absence.  
Grief bloomed like ink  
In water,  
Everywhere,  
Uncontainable.  
And still, The world moved on.



सौरभ : 2024-2025

## A Flicker in the Fog

Kareena Qamar  
Guest Faculty  
Deptt. of English

The path ahead is veiled in mist,  
My dreams like stars I once had kissed.  
Now shadows creep where sunlight lay,  
And doubt walks with me every day.

I fear the fate I cannot see—  
What if it holds no peace for me?  
What if the battles never cease,  
And storms consume my hope, my peace?

But deep within, a whisper stirs,  
A softer voice than fear's harsh slurs.  
It says, "Hold on—though night feels long,  
Your soul was made for morning song."  
God's hand, unseen, still weaves my thread;  
Where I see ends, He sees ahead.

And if I fall or lose my way,  
His grace will lift, His light will stay.

So I will hope when fears arise,  
I'll find the dawn behind these skies.  
I'll speak of joy, though pain is near,  
And let my faith be louder than fear.



## Understanding and Nurturing Mental Health in Students

Gosiya  
Ex Guest Faculty  
Deptt. of English

In recent years, mental health has emerged as a critical topic in the academic world. Students today face numerous challenges—academic pressure, social expectations, and the uncertainty of the future—all of which can affect their emotional and psychological well-being.

Mental health refers to our emotional, psychological, and social well-being. It influences how we think, feel, and behave, as well as how we handle stress, relate to others, and make decisions. For students, maintaining good mental health is essential not only for academic success but also for overall life satisfaction.

Unfortunately, mental health issues among students often go unnoticed or are stigmatized. According to recent studies, nearly one in five college students experiences anxiety or depression, yet many hesitate to seek help due to fear of judgment or misunderstanding. This silence can worsen conditions such as anxiety, depression, and burnout.

**To nurture mental health, students can adopt several effective strategies :**

- 1. Open Communication :** Sharing thoughts and feelings with trusted friends, family members, or counselors can ease emotional burdens and provide valuable support.
- 2. Time Management :** Balancing studies with leisure and rest prevents overwhelming stress and helps maintain focus.
- 3. Healthy Lifestyle :** Regular exercise, proper nutrition, and adequate sleep contribute significantly to mental well-being.
- 4. Mindfulness and Relaxation :** Practices such as meditation and deep breathing can reduce anxiety and improve concentration.
- 5. Seeking Professional Help :** There is no shame in consulting mental health professionals when needed. Early intervention can make a significant difference.

Educational institutions also play a vital role by creating supportive environments that prioritize mental health awareness and resources. Workshops, counseling centers, and peer support groups can empower students to manage challenges effectively.

**Some inspiring quotes to remember :**

- *“Mental health... is not a destination, but a process. It's about how you drive, not where you're going.” – Noam Shpancer*
- *“You don't have to control your thoughts. You just have to stop letting them control you.”*
- *“Taking care of your mental health is a sign of strength, not weakness.”*

In conclusion, mental health is a vital aspect of a student's life that deserves attention and care. By understanding its importance and adopting proactive measures, students can cultivate resilience, achieve academic goals, and lead fulfilling lives.



सौरभ : 2024-2025

## The Spirit Of NCC

Vedika Siwach  
NCC Cadet

NCC, our pride and might,  
Marching forward, day and night.  
Discipline and unity in every stride,  
With valor and honor as our guide.  
In uniforms neat, we stand so tall,  
Answering bravely our nation's call.  
Through sun and storm, we never tire,  
Fueled by a patriot's burning fire.  
From drills to camps, we grow each day,  
In service to the nation, come what may.  
With courage in heart and duty in soul,  
As NCC cadets, we reach our goal.

## Symphony of Culinary Science

Misba  
B.Sc. IInd Sem  
Food Science Department

In labs where flavors meet the light,  
Food science crafts its artful bite.  
Through beakers, scales, and taste's delight,  
They blend the sweet with savory might.  
With knowledge deep in every dish,  
They measure dreams in plates we wish.  
From farm to fork, their wonders swish,  
Creating meals both bold and swish.  
A dash of science, a pinch of flair,  
They conjure magic in the air.  
For every taste, a love they share—  
Food science, guardians of our fare.



## Status of Women Literacy in India

**Mansi Mehra**  
B.A. 6th sem year

Literacy is the ability to read and write. Broadly, literacy may be viewed as particular ways of thinking about and practicing reading and writing, with the purpose of understanding or expressing thoughts or ideas in written form in some specific context of use. In other words, humans in literate societies have sets of practices for producing and consuming writing.

The range of definitions of literacy used by NGOs, think tanks, and advocacy groups since the 1990s suggests that this shift in understanding from a “discrete skill” to a “social practice” is both ongoing and uneven. The 2003 National Assessment of Adult Literacy (USA) included “quantitative literacy” (numeracy) in its treatment of literacy. It defined literacy as the ability to use printed and written information to function in society and to achieve one's goals. In 2015, the United Nations Statistics Division defined the youth literacy rate as the percentage of the population aged 15–24 years who can both read and write with understanding a short simple statement on everyday life. In 2016, the European Literacy Policy Network defined literacy as the ability to read and write in all media (print or electronic), including digital literacy.

Also called the “effective literacy rate,” the total percentage of the population aged seven and above who can read and write with understanding shows a wide gender disparity in India. According to the 2011 Census, the effective literacy rate was 84.7% for men and 70.3% for women. The low female literacy rate has a dramatically negative impact on family planning and population stabilization efforts in India. According to the Census of 2011, the state with the highest female literacy rate was Kerala. The female literacy rate in Kerala was reported as 92.07%, which was the highest among all the Indian states.

Women's education in India is a very important topic nowadays. Women's education is essential for the country to fully develop. It is like an effective medicine that can heal a patient completely and restore health. Women's education is a great opportunity for India to grow socially and economically. Educated women bring a positive impact on Indian society through their contribution both at home and in professional fields. They are the reason for an improved economy in the country as well as in society. An educated woman has the capability to handle both her home and professional life. They can also effectively contribute to controlling the population of India as they tend to marry at a later age compared to uneducated women.

The female education in India is highly necessary for the future of the country as women are the first teachers of their children, which means they shape the future of the nation.



## Climate Change

**Daxita**  
**M.A. Political Science**

Climate change refers to long-term shifts in temperature and weather patterns. Such shifts can be natural, due to changes in the sun's activity or large volcanic eruptions. But since the 1800s, human activities have been the main driver of climate change, primarily due to the burning of fossil fuels like coal, oil, and gas.

Burning fossil fuels generates greenhouse gas emissions that act like a blanket wrapped around the Earth, trapping the sun's heat and raising temperatures. The main greenhouse gases that are causing climate change include carbon dioxide and methane. These come from using gasoline for driving a car or coal for heating a building. For example, clearing land and cutting down forests can also release carbon dioxide. Agriculture, oil, and gas operations are major sources of methane emissions. Energy, industry, transport, buildings, and land use are among the main sectors causing greenhouse gases.

Climate scientists have shown that humans are responsible for virtually all global heating over the last 200 years. Human activities like those mentioned above are causing greenhouse gases that are warming the world faster than at any time in at least the last two thousand years.

The consequences of climate change now include intense droughts, water scarcity, severe fires, rising sea levels, flooding, melting polar ice, catastrophic storms, and declining biodiversity. The seven biggest emitters alone (China, USA, India, European Union, Indonesia, Russia, and Brazil) accounted for about half of all global greenhouse gas emissions in 2020.

Climate change can be mitigated by reducing the rate at which greenhouse gases are emitted into the atmosphere and by increasing the rate at which carbon dioxide is removed from the atmosphere. In order to limit global warming to less than 1.5°C, global greenhouse gas emissions need to be net zero by 2050, or by 2070 with a 2°C target. This requires far-reaching systematic changes on an unprecedented scale in energy, land, cities, transport, buildings, and industry.

Adapting to climate change consequences protects people, homes, businesses, livelihoods, infrastructure, and natural ecosystems. It covers current impacts and those likely in the future. Adaptation will be required everywhere, but must be prioritized now for the most vulnerable people with the fewest resources to cope with climate hazards.

Climate action requires significant financial investments by governments and businesses. But climate inaction is vastly more expensive. Hence, countries should adapt and move towards greener economies.



## Facts that you must know

Aliya Ansari  
B.A. 3rd year

11. Hot water will turn into ice faster than cold water.
2. The strongest muscle in the body is the tongue.
3. Ants never sleep.
4. Women blink nearly twice as much as men.
5. It is impossible to lick your elbow.
6. Honey is the only food that never spoils.
7. A snail can sleep for three years.
8. Elephants are the only animals that cannot jump.
9. The electric chair was invented by a dentist.
10. Like fingerprints, everyone's tongue print is different.
11. You cannot sneeze with your eyes open.
12. Stewardesses is the longest word typed with only the left hand.

## Rising Again

Gosiya  
Ex Guest Faculty  
English Department

In the darkest night, when all seems lost,  
And every step feels like a cost,  
Hold on tight, though you lose your way,  
The dawn will come with a brand-new day.

When doubts and fears surround your mind,  
And strength and courage seem hard to find,  
Remember this—you're not alone,  
Within your heart, hope has grown.

Every fall is a chance to rise,  
To spread your wings and touch the skies.  
The storm will pass, the sun will shine,  
Your story will be yours to define.

So keep the faith, embrace the fight,  
Your future's shining, bold and bright.  
For in your soul, a fire burns,  
With every challenge, wisdom returns.



## **Fashion : A Craze World Over**

**Sobia Matten**  
**M.A 2nd year**  
**Department of English**

Fashion—the word evokes a feeling of excitement among people. It is a craze among the masses all over the world. Not only Western countries, even developing countries like ours have been overtaken by this phenomenon. France and Italy are considered the 'Mecca' of the latest fashion trends.

People everywhere are very keen about the latest fashions—whether children, teenagers, women, or men, all try to dress in the latest styles to look smart and attractive. The masses, particularly actors, wear expensive and fascinating clothes in the latest colours, designs, and fabrics. They also make liberal use of beauty products from famous brands to match their garments, complete with the latest designs in sandals, bags, and other accessories. In the mad race of following fashions and trends, some waste their parents' hard-earned money, along with their own time and energy.

Today, shopping malls and boutiques are frequented by a large number of people for their fashion needs, physical charm, and grace. Fashion is not only confined to dressing alone, but has also come to include visiting hostels and clubs, indulging in drinking and smoking, exposing the body, and trying to look sophisticated and glamorous. However, all this is a life of 'artificiality.' Sometimes, students become so fashion conscious that even their studies suffer because of it.

We can say that today the trend of fashion is everywhere and there is no way out— but one should indulge in it sensibly and with moderation.

## **Why can't a Women be more like a Man**

**Sobia Matten**  
**M.A 2nd year**  
**Deptt. of English**

Why can't a woman be more like a man when we know she can do as much as he can? They think she is weak, fragile, and tame, but they don't realize that without her, society is lame. She is an engineer, a pilot, and a space researcher. She has realized her hidden potential, and the change she brings will not be inconsequential.

When time requires, she can show her might— though not like a man, always ready to fight. She has greater control over her instincts, as in the case of two lovers, where this is distinct. Her love and devotion are profound and deep, not like a man's, which is often superficial. To keep society strong, don't find her an easy prey; while with men, they often have a field day.

She has the magic of giving birth because God knows her worth. When she is so esteemed in the eyes of the Maker, are we not foolish to consider her weaker? Why then should we want a woman to be more like a man, when we know she can do more than he can?



## The Last Day of College

Ruma Khan  
M.A.  
Deptt. of English

The last day came, so soft, so slow,  
We didn't want to let it go.

The same old rooms, the same old gate,  
But something changed-it felt like fate.

We laughed, we smiled, but not too wide,  
Some feelings are too big to hide.

We clicked some pics, we shared a joke,  
And deep inside, our voices broke.

The bench I sat on every day  
Just watched me as I walked away.

The friends I met, the bonds I made  
Will live in heart, though time may fade.

We said, "Let's meet," and "Stay in touch,"  
But college days-they gave so much.

The chai, the talks, those silly fights,  
Now feel like gold in softer lights.

The teachers stood with quiet eyes,  
They've seen so many last goodbyes.

No words were said, but all hearts knew-  
This was the end, both sweet and true.

So here we are, all grown, all set,  
With dreams to chase, no time to fret.

But part of us will always stay  
Back in that class... on that last day.



## Cancer Survivors : Warriors or Victims of Society

Dr. Priyanka Yadav  
Assistant Professor  
Deptt. of Psychology

In the face of one of the most feared diseases of our time, cancer survivors emerge as living symbols of resilience, courage, and determination. Yet society often oscillates between applauding their bravery and unconsciously marginalizing them through ignorance, pity, or stigma. This duality raises a powerful question: Are cancer survivors truly seen and supported as warriors, or are they still treated as victims of societal misunderstanding?

Cancer survivorship is often framed in terms of triumph, resilience, and personal strength. However, beyond the medical battle lies a deeper challenge—navigating social identity and societal perceptions. This article explores the tension between the empowering image of survivors as "warriors" and the disempowering narrative that can cast them as "victims," drawing from psychological insights, social observations, and survivor accounts.

### **The Warrior Spirit: Strength in Survival**

Cancer survivors endure physical pain, emotional trauma, financial burdens, and lifestyle upheavals. Treatments like surgeries, chemotherapy, radiation, and follow-up care demand immense inner strength. Survival itself becomes an act of rebellion against despair. Survivors often become motivational figures, their experiences a beacon of hope and a call for societal compassion.

### **Society's Lens: Between Sympathy and Stigma**

Despite their courage, survivors frequently encounter subtle discrimination. Employers may hesitate to hire them, fearing relapse or healthcare costs. Insurance companies may charge higher premiums, and friends may withdraw out of discomfort or pity. Such social isolation turns survivors into victims—not of cancer, but of society's unease with illness. Survivors are sometimes labeled “fragile” or “damaged,” which can deeply impact mental health and self-esteem.

### **Language and Labels: Empowerment or Reduction?**

Calling someone a “survivor” is powerful, but labels like “warrior” are meaningful only when accompanied by systemic support: accessible healthcare, psychological counselling, job security, and genuine inclusion. Portraying survivors as perpetual “victims” reinforces helplessness, robs them of agency, and contributes to social marginalization.

### **Survivorship as a Psychological and Social Identity**

Facing cancer often brings profound changes in self-perception and identity. Psychologically, survivors may experience post-traumatic growth, resilience, and a redefined sense of purpose. Yet these internal shifts can clash with external perceptions, creating psychological dissonance that complicates reintegration into professional, familial, and social roles.

### **The Psychology of Cancer: Emotional and Mental Challenges**

Cancer is not only a biological illness but also a profound psychological experience. Survivors of chemotherapy and bone marrow transplantation (BMT) face long-term emotional and mental health challenges. Treatments can trigger trauma, anxiety, depression, identity crises, and social isolation, underscoring the need for integrative psycho-oncology support.

### **Chemotherapy: More Than a Physical Assault**

Chemotherapy, though lifesaving, is mentally taxing. Repeated cycles induce anticipatory anxiety, where the thought of the next session causes nausea, panic, or depressive symptoms. Emotional challenges include:

**Fear of side effects:** Hair loss, fatigue, and nausea affect body image and self-esteem.

**Loss of autonomy:** Dependency on caregivers can erode independence.

**Identity disruption:** Patients may feel physically or emotionally unfamiliar with themselves.

### **Bone Marrow Transplantation (BMT): A Psychological Trial**

BMT involves intensive chemotherapy or radiation, long isolation, and vulnerability to infection. Survivors face:

**Isolation-induced depression:** Confinement leads to loneliness and abandonment.

**Survivor guilt:** Emotional burden can arise when donors are family members.

**Trauma and post-traumatic stress:** Diagnosis-to-transplant experiences leave lasting emotional scars.

**Graft-versus-host disease (GVHD):** Chronic complications like GVHD cause ongoing physical pain and emotional fatigue.

### **The Shadow of Uncertainty**

Even after treatment, survivors live with the fear of recurrence. Regular scans or minor symptoms can trigger panic, anticipatory anxiety, and post-traumatic stress- a constant reminder of vulnerability.

### Psychosocial Challenges in Survivorship

1. Depression and anxiety: Often underdiagnosed due to overlap with physical symptoms.
2. Emotional pain related to appearance: Hair loss, scars, and other changes affect identity and social belonging.
3. Post-traumatic growth vs. PTSD: Some develop appreciation for life, others suffer flashbacks or emotional numbness.
4. Social reintegration issues: Friends and colleagues may not understand survivors' struggles.
5. Spiritual crisis or transformation: Facing mortality can trigger existential questioning or resilience.
6. Cognitive changes (“chemo brain”): Memory and attention are often affected.
7. **Chronic fatigue**: Persistent exhaustion limits independence, contributing to emotional distress.

### Integrative Psychological Support: A Vital Need

True support requires structural and cultural change, including:

Psycho-social rehabilitation programs.

Narrative autonomy to define personal stories.

Educating society on life after cancer.

Policies protecting survivors' rights.

Support networks promoting dignity, purpose, and community engagement.

Cancer survivors are individuals navigating physical recovery and social reintegration. While the “warrior” metaphor can be empowering, it should not overshadow practical support. Similarly, framing survivors as “victims” risks reinforcing helplessness.

Survivorship is not merely about enduring disease; it is about reclaiming life. Recognizing their silent struggles is the first step toward humanizing the cancer experience. True healing begins when mind, body, and spirit are supported together, allowing survivors not just to survive—but to thrive.



## Life And Its Values

Ms. Shail Verma  
Assistant Professor  
Deptt. of Geography

A meaningful life is not defined by wealth, fame, or achievements. It is measured by the depth of our humanity, the warmth we bring to others, and the truth we live by. It is a life lived from the heart, where every action is guided by purpose and every step reflects a deeper connection to the world around us.

At the core of this life lies **humanity**—the recognition that we are all bound by the same thread of existence, sharing joys, struggles, and dreams. When we embrace humanity, we begin to see ourselves in others. This awakening is the first step toward a life that truly matters—one that uplifts not just the self, but the world.

Flowing naturally from humanity is **kindness**, the gentle expression of a caring heart. Kindness is humanity in motion. It turns empathy into action, reminding others that they are seen, valued, and not alone. A kind act, no matter how small, can create ripples of hope that extend far beyond what we can imagine.

To sustain kindness and live with open hearts, we must cultivate **gratitude**. Gratitude helps us recognize the blessings in our lives— not just in moments of ease, but especially during hardship. It grounds us, allowing us to give sincerely, love without conditions, and appreciate life as it is, not just as we wish it to be.

Holding all of this together is the quiet strength of **honesty**. A meaningful life cannot stand on illusion. Honesty brings clarity, integrity, and the courage to live authentically. When we speak and act with truth, we build trust with others and within ourselves. It becomes the foundation upon which humanity, kindness, and gratitude can flourish.

These values are not separate threads but a single fabric woven together to form the essence of a life worth living. When we live with humanity, we open our hearts; with kindness, we reach others; with gratitude, we find peace; and with honesty, we walk with integrity. In the end, a meaningful life is not something we chase—it is something we create, moment by moment, choice by choice, through the way we treat others and the truth we carry within.



## Keys to Successful And Happy Life

Dr. Manju Singh  
Professor  
Deptt. of Zoology

Self-Belief

Self-Confidence

Self Discipline - Control your thought process

*"Nothing in this world other than your thoughts may trouble you"*

Work hard - It should be directional

Life is a process; persistence pays in your life

Overcome fear of failure

Worry is a misuse of your imagination

Control anger (beneath anger is always fear)

Say no to arrogance

Never think it's too late

You have to become the master of your mind

Managing your time is most important

Think highly of yourself

Love yourself

Learn to ignore and maintain social distance from persons who may disturb you



# The Menace of Pollution : Understanding, Effects and Solutions

Dr. Shital Pandey  
Deptt. of Chemistry  
M.Sc. (Self Finance)

## Introduction–

Pollution, the introduction of harmful substances or products into the environment, is one of the most pressing issues of our time. It affects the air we breathe, the water we drink, and the soil in which we grow our food. Addressing pollution is crucial not only for the health of our planet but also for the well-being of future generations.

## Types of Pollution–

Pollution can take many forms, but the most common types are air, water, soil, and noise pollution.

### Air Pollution :

Caused by emissions from factories, vehicles, and agricultural activities, air pollution includes harmful gases like carbon dioxide, sulfur dioxide, and nitrogen oxides. These pollutants can lead to respiratory diseases, cardiovascular problems, and contribute to global warming.

### Water Pollution :

Contaminants such as chemicals, waste products, and microorganisms pollute our rivers, lakes, and oceans. This type of pollution can cause severe health issues, disrupt aquatic ecosystems, and degrade water quality.

### Soil Pollution :

Often a result of industrial waste, agricultural chemicals, and improper waste disposal, soil pollution affects crop quality and can lead to health issues for humans and animals.

### Noise Pollution :

Excessive noise from traffic, industry, and other human activities can lead to hearing loss, stress, and other health problems.

## Causes of Pollution–

Pollution stems from various human activities:

- **Industrial Activities** : Factories emit pollutants into the air and water, contributing significantly to environmental degradation.
- **Transportation** : Vehicles release exhaust gases, a major source of air pollution.
- **Agricultural Practices** : The use of pesticides and fertilizers contaminates soil and water sources.
- **Household Activities** : Everyday activities, such as the use of cleaning agents and improper disposal of waste, contribute to pollution.

### Effects of Pollution–

The consequences of pollution are far-reaching:

- **Health Impacts** : Pollutants can cause respiratory diseases, heart conditions, and cancers. Long-term exposure to polluted air and water can lead to chronic health issues.
- **Environmental Impacts** : Pollution disrupts ecosystems, harms wildlife, and leads to the loss of biodiversity. For example, plastic pollution in oceans severely affects marine life.
- **Economic Impacts** : Pollution can lead to significant economic costs, including healthcare expenses, loss of productivity, and the cost of cleaning up polluted sites.

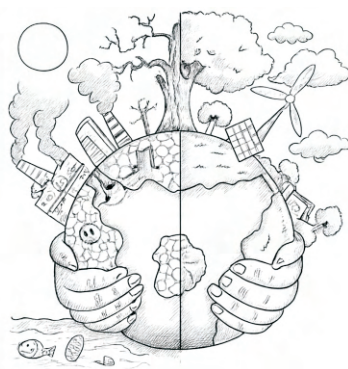
### Solutions and Mitigation–

Addressing pollution requires a multi-faceted approach:

- **Government Regulations** : Enforcing strict environmental laws and standards can significantly reduce pollution levels. Policies like the Clean Air Act and the Water Pollution Control Act have proven effective.
- **Technological Innovations** : Advancements such as renewable energy, electric vehicles, and pollution control technologies can mitigate pollution.
- **Individual Actions** : Simple actions like reducing waste, using public transportation, and conserving energy can make a difference.
- **Community Efforts** : Local initiatives, such as community clean-up programs and awareness campaigns, can lead to meaningful changes.

### Conclusion–

Pollution is a complex issue that requires immediate and sustained action. By understanding its types, causes, and effects, we can better address this global challenge. Governments, businesses, communities, and individuals all have a role to play in combating pollution. It is time to take decisive action to protect our health and preserve our environment for future generations.



## Environmental Degradation And Its Consequences

Dr. Shashi Bala  
Assistant Professor  
Department of Zoology

Environmental degradation is the deterioration of the natural environment due to multiple factors, like depletion of natural resources such as air, water, and soil due to human activities. Degradation of the environment affects multi-dimensional aspects of any nation in terms of social and economic status. The major factors behind this problem are the Industrial Revolution, population explosion, and poverty, due to the demand for a luxurious life. Poverty is an important factor in such issues, and other factors are climate change, deforestation, overgrazing, pollution, urbanization, lack of proper awareness, and low education. These are major contributors toward the degradation of natural resources.

Environmental degradation is the biggest threat to the world for the extinction of life. There are many techniques being used to prevent the degradation of the environment. Because of its negative impact on human health, loss of biodiversity, depletion of the ozone layer, destruction of the tourism industry, and negative impact on the economy of countries or regions as well as the global ecosystem, it also leads to scarcity of natural resources and increases various human health issues, along with the level of loss of biodiversity.

Researchers are working on alternatives to this issue and adopt some strategies like stopping deforestation, reducing consumption levels, promoting regenerative farming, planting more trees, and applying savings and loan opportunities, which are effective tools for prevention of environmental degradation. They also promote reuse, reduce waste generation, avoid the use of plastic, spread awareness, properly dispose of solid and harmful waste, and provide environmental education among people or society.

To prevent these types of environmental disasters, governments, local communities, and international organizations must work together at all levels, and individuals must ensure that their work is eco-friendly and sustainable.



## Cutting Down on Highly Processed Foods : A Way to Improve Health

Alina Athar  
(Lecturer, Food Science  
and Quality Control)

Consuming ultra-processed foods (UPFs) has been connected in recent years to a number of health problems, including diabetes, heart disease, and obesity. There is a strong effort to cut back on UPF intake as people become more aware of these health risks. Customers, health activists, and government agencies are driving this movement, which promotes natural, minimally processed foods in an effort to enhance public health outcomes.

**Understanding Ultra-Processed Foods** – Industrial recipes with five or more ingredients, such as sugar, oils, fats, salt, stabilizers, antioxidants, and preservatives, are known as ultra-processed foods. These foods go through a number of physical, biological, and chemical processes to improve their taste, texture, and longevity. Soft beverages, prepackaged snacks, reconstituted meat products, and ready-to-eat meals are typical examples. Because of their poor nutritional content, high intake of UPFs poses a problem. They are generally deficient in vital nutrients like fiber, vitamins, and minerals and high in added sugars, unhealthy fats, and sodium. This combination aggravates a number of chronic illnesses, necessitating dietary adjustments.

**Health Implications of Ultra-Processed Foods** – High UPF consumption is strongly correlated with unfavorable health effects, according to research that is frequently conducted. According to a *British Medical Journal* study, there is a statistically significant increase in the risk of overall mortality for every 10% increase in the amount of UPFs in the diet. In a similar vein, consuming UPFs has been connected to a higher chance of developing metabolic syndrome, a group of illnesses that raise the risk of diabetes, heart disease, and stroke. UPFs are connected to the obesity pandemic as well. Overeating and weight gain are caused by their high energy density, palatability, and the presence of chemicals that enhance taste and cravings. In addition, UPFs frequently have low dietary fiber content, which impairs satiety and encourages excessive calorie intake.

**Regulatory and Industry Responses** – Around the world, governments and health organizations are working to cut back on UPF usage. Regulations have been implemented in the UK to limit the promotion of foods that are rich in fat, salt, or sugar. By restricting the availability and promotion of unhealthy foods, especially to children, these policies aim to promote better eating practices. In response, food producers are also changing the composition of their products to include less harmful ingredients. For example, attempts are being made to improve the nutritional profiles of processed foods by adding whole grains, fiber, and other beneficial nutrients, and to reduce the quantities of sugar, salt, and unhealthy fats.

**Consumer Awareness and Behavioral Changes** – Reducing the use of UPFs is largely dependent on consumer education. It is imperative to run awareness efforts on the dangers UPFs pose to health and the advantages of eating whole, minimally processed foods. People can be empowered to make healthier food choices by participating in programs that educate them on how to read food labels and recognize healthier options. Additionally, there is a growing movement toward whole food and plant-based diets. Foods with fewer additives and processing stages, and a closer resemblance to their original state, are what consumers are increasingly looking for. The farm-to-table movement, the growth of farmers' markets, and the organic food movement– all of which place an emphasis on locally grown, fresh produce– all encourage this change.

**The Role of Technology and Innovation** – Processed foods are becoming more nutritious thanks to advancements in food technology. Food science developments have made it possible to create novel processing methods that increase food's shelf life without sacrificing its nutritional value. To lessen dependency on harmful additives, the use of natural preservatives and substitute ingredients is also being investigated. To improve food formulations, machine learning and artificial intelligence (AI) are also being used. Large volumes of data can be analyzed by these technologies to determine the optimal ingredient combinations that enhance nutritional quality without sacrificing convenience or flavour.

**Conclusion** – Lowering the intake of highly processed foods is an essential first step in enhancing public health. Together, industry players, consumers, and regulatory agencies must work toward this. The use of technological breakthroughs, coupled with awareness-raising and regulatory action, can facilitate a shift in eating habits toward more natural, healthier food options. As a result of these adjustments, we should see a decrease in diet-related health problems.



## Puranic Tradition

Mrs. Ritu Tomar  
Research Scholar  
Deptt. of Drawing & Painting

The Puranas are a class of literary texts, all written in Sanskrit verse, whose composition dates from the 4th century BCE to about 1000 A.D. The word *Purana* means “old,” and they are generally considered as coming in the chronological aftermath of the epics, though sometimes the *Mahabharata*, which is generally classified as a work of *Itihasa* (history), is also referred to as a Purana. Although the items characterized as being *Purana* are indeed “ancient,” they are also, more specifically, affirmed to be “still in existence at the time when the speaker used the term.” The most salient feature of items described as *purane* is that they continue to exist in the present; while being ancient, they are “new, young, and of repeated occurrence” simultaneously.

There can be two traditions regarding the origin of the Purana—one claiming a divine origin, the other a human one. The view that the Purana is of divine origin is found in a number of Vedic texts such as the *Atharvaveda*, *Satapatha Brahmana*, and *Chandogya Upanishad*. In the *Brihadaranyaka Upanishad*, the Puranas are regarded with parity to the *Rig Veda* and other Vedas, and are envisioned as the breath of the Great Being.

The Puranas themselves make their divine origin more explicit, with several of them claiming that originally the Purana was one and first conceived by the god Brahma, emanating from his fifth mouth to the extent of 100 crores of *shlokas*. The original Purana continues to exist in the world of gods but was abridged by Vyasa in each *Dvapara Yuga* into an essence of four lakhs of *shlokas*, further categorized by him into 18 Puranas existing in this mortal world.

The Puranic tradition of human origin is based on seeing Vyasa composing the *Purana Samhita* out of tales, episodes, verses, and descriptions of the ages. As per affirmations, he must have then taught this *Samhita* to his disciple SutaLomaharshana, who in turn taught it to six of his disciples in six versions. Three of these composed their own *Samhitas*, which, together with Lomaharshana's, comprise the basic compilation (*Mula Samhita*), from which the later 18 Puranas were derived.

The Puranas are a dynamic representation of the truth of the Vedas in a form that is appropriate to the needs of a later age. The two traditions agree on the nature and function of the Puranas while differing on their origin. The special subject of the Puranas is the powers and works of the gods. One Sanskrit lexicographer, Amarasimha, in his 5th–6th century A.D. text *Amarakosha*, defines the Puranas as that which has five characteristics (*Panchalakshana*), which are as follows:

1. Sarga – Creation or evolution of the universe.
2. Pratisarga – Re-creation of the universe after its periodic dissolution.
3. Vamsha – Genealogies of gods, patriarchs, sages, and kings.

4. Manvantara – “Manu-intervals,” cosmic cycles each of which is presided over by Manu, the “father of mankind.”

5. Vamshanucharita – Accounts of royal dynasties.

According to historian Willibald Kirfel, out of about 400,000 *shlokas* in the Puranas, only about 10,000, or less than 3% of the total, are *Panchalakshana* material. The other 97% consists of heterogeneous material, including glorification of one or more sectarian deities like Brahma, Shiva, and Vishnu; and multifarious topics concerning religion and society—for instance, duties of different castes and stages of life, sacraments, customs, duties of women, funeral rites, ceremonies, impurity on birth and death, penances and expiations, donations, dedication of wells and tanks, places of pilgrimage, consecration of temples and images of gods, various mystic rites and practices, etc.

No single Purana can be described as exhibiting in detail all five of these distinguishing traits, but *Vishnu Purana* is often thought to most closely resemble the traditional definition. To some degree, Puranas can be described as a form of sectarian literature, as by the time they began to be composed, people had already established their belief in particular deities. Some Puranas exhibit devotion to Shiva; in others, devotion to Lord Vishnu is predominant.

There are 18 major Puranas, as well as a similar number of minor or subordinate ones. One method of classification employs the traditional tripartite division of the *gunas* or qualities: purity (*Sattva*), passion (*Rajas*), and ignorance (*Tamas*). Thus, the 18 Puranas can be classified as follows:

1. **Sattva** – *Vishnu, Narada, Bhagavata, Garuda, Padma, Varaha* (Vishnu appears as the supreme being).
2. **Tamas** – *Matsya, Kurma, Linga, Shiva, Skanda, Agni* (devotion rendered to Lord Shiva).
3. **Rajas** – *Brahma, Brahmanda, Brahmavaivarta, Markandeya, Bhavishya, Vamana*.

This list is sometimes enlarged to 20 to include *Vayu Purana* and *Harivamsa*. However, classifying the Puranas solely on the basis of their devotion is not justified, because they are not exclusively dedicated to their respective deities. Moreover, at some point, these texts would have been revised, as evident from the considerable variations in their verses. For example, the *SkandaPurana* has 80,000 verses, while the *Brahma* and *VamanaPuranas* each have about 10,000.

### **Purana as a Source of History**

The Puranas predict future events, genealogies of various dynasties, Aryan invasions, and the general life of people during that time. According to some Puranas, their original homeland was Pratisthana, from where they expanded all over the Gangetic Doab. The Puranas claim to give us the ancient history of Aryan India, beginning from the earliest *Rigvedic* period, describing genealogies of kings, their kingdoms, and their occasional feats and achievements. A.S. Altekar has rightly pointed out that the history of India of the pre-*Bharata* period can be reconstructed with the help of epic and Puranic

traditions and evidences. Historians, after reading these traditions, compare and verify the claims with actual history. On such analysis, it can be inferred that most of the kings mentioned in the genealogical lists are real; only a few are fictitious. Also, the duration of reigns of various dynasties, as mentioned in the Puranas, when verified with contemporary documents, shows that while some figures were inflated or arbitrary, others were accurate. Thus, they help in the chronological computation of genealogies and are extremely important for historical reconstruction, as acknowledged by various scholars.

The historical material available in the Puranas about kingdoms and dynasties covers the period from the primeval King Manu Vaivasvata down to the times of Prithviraj Chauhan. The details of towns, cities, *Janapadas*, kingdoms, state, government, polity, administration, society, religion, and culture are also recorded in the Puranas. Puranic data about the foundation, planning, naming, antiquity, and growth and decay of towns and cities are very important for the study of the history of urbanization in ancient India.

They also shed light on the nature of urban settlements, showing the growth of towns as political, administrative, commercial, religious, or educational centers. The towns and cities described in these texts include Hastinapura, Indraprastha, Ahichhatra, Kampilya, Mathura, Ujjain, Virata, Ayodhya, Takshashila, Iravati, Dwarka, Suktimatipura, Surparaka, and Kanchi. Archaeological discoveries of the remains of most of these towns not only confirm their existence but also prove the historicity of the Puranic accounts.

The Puranic descriptions of socio-religious life, with reference to *Varnashrama Dharma* (the four stages of life), the caste system, and the Shaiva, Shakti, and Vaishnava cults of Hinduism, have considerable historical value. Several broken chains in the political and cultural history of ancient India can be restored with the help of the historical data contained in the Puranas.

### **Rise of Puranic Hinduism and Some Features of the Puranic Tradition**

Vedic Brahmanism was centered on *yajna* (sacrifice). It came under criticism by the 6th century BCE. The Buddhists denounced sacrifice as violent and destructive. Criticism poured in from a range of social groups, and gradually politically powerful patrons also joined them. Vedic religion also suffered at the hands of rulers like the Mauryas, who patronized heterodox faiths. Ashoka was a Buddhist, and Chandragupta Maurya was a Jain. The Puranas described these kings as *Shudras* and the age they ruled in as the *Kali-yuga*—the age when *adharma* is rampant.

During this time, Brahmins split into two sections—one took up the work of compiling *Dharmasutras* (detailed rules on who can and cannot participate in Vedic rituals), and the other formulated texts and institutions meant for everyone (including those who previously had no access to Vedic study) in simpler language. These were the Epics—the *Mahabharata*, the *Ramayana*, and the Puranas—classified as *Smriti* texts.

The transition from Vedic Brahmanism to the Puranic tradition of Hinduism was not sudden or quick; rather, it was a slow process of assimilation, negotiation, and incorporation of local cults. With this transition, old ideas were not abandoned. It can be said that Vedic Brahmanism remained one of the

constituents of Puranic Hinduism. The Gupta rulers sponsored the codification of many Puranas. When Tantric practices began influencing Shaivism and Vaishnavism and undermining Brahmanical orthodoxy, the authors of Puranas began legitimizing and incorporating them into Puranic Hinduism.

The performance of *puja* and collective rituals became central as the importance of Vedic sacrifices declined. Image worship and temple worship also gained significance. The inclusion of leaves and flowers from forest areas in *puja* acts marks the relationship between Brahmanism and the cults it absorbed. The increasing placement of pilgrimages during this phase was also strategic, as they were specifically located away from the core Brahmanical zones—an engagement between Brahmins and local cults. Much of Hinduism commonly practiced today is rooted in the Puranic tradition. This tradition represents the religious shift from an exclusive religion to a more inclusive one.

Some important features of the Puranic tradition are idol or image worship, temple rituals, pilgrimage, *vrata*, *mantra*, ritual specialists, and *bhakti*. Though the divine was formless and invisible, it was believed that the chosen deity could take up residence in his or her image (*murti/pratima*).

### Conclusion

The Puranic traditions form a rich tapestry of mythology, philosophy, and spirituality in Hinduism. Through their diverse narratives and teachings, they provide insights into the cosmos, the divine, and the human condition. While interpretations vary, their enduring relevance lies in their ability to inspire devotion, reflection, and cultural continuity. With the rise of Puranic traditions, orthodox Brahmanical practices were replaced with a more inclusive form of Hinduism. They also offer valuable insight into the history and cultural life of ancient India.



## Environmental Issues

Dr. Sangeeta Bajaj  
Guest Faculty  
Deptt. of Zoology

Environmental issues are challenges facing Earth and its natural systems. From climate change and pollution to overpopulation and energy use, these problems are interconnected, affecting human health, ecosystems, and economic activities. While Earth can handle natural disturbances like floods and forest fires, human activity has intensified their effects. Since the Industrial Revolution, burning fossil fuels and other activities have increased greenhouse gas emissions, leading to global warming and disruption of natural processes. Land use, resource extraction, and waste disposal further contribute to environmental issues.

**Global Warming from Fossil Fuels** – 2023 was the hottest year on record, with global average temperatures 1.46°C above pre-industrial levels. Atmospheric CO<sub>2</sub> levels now exceed 420 ppm, more than double pre-Industrial Revolution levels. Human activities such as fossil fuel burning, cement production, deforestation, and agriculture are the main contributors, causing extreme weather events like hurricanes, heatwaves, and floods. Even if emissions stopped immediately, temperatures would continue to rise due to past emissions.

**Poor Governance** – Market failures contribute to climate change, and economists urge policies like carbon taxes to stimulate low-carbon innovations. Governments must fund green technologies and implement policies addressing all market failures to reduce emissions effectively.

**Food Waste** – Around 1.3 billion tons of food are wasted annually, enough to feed 3 billion people. Food waste accounts for about 26% of global greenhouse gas emissions. Developing countries waste food post-harvest, while developed nations discard aesthetically imperfect produce, causing food insecurity.

**Biodiversity Loss** – Human consumption, population growth, and urbanization have caused a 68% decline in wildlife populations between 1970 and 2016 (WWF, 2020). Habitat loss, illegal wildlife trade, and climate change threaten species like pangolins, sharks, and emperor penguins. The sixth mass extinction is accelerating, with over 500 land species at risk within 20 years.

**Plastic Pollution** – Global plastic production rose from 2 million tons in 1950 to 419 million tons in 2015. About 14 million tons enter oceans annually, harming marine life. Microplastics could reach 600 million tons by 2040. With 91% of plastics unrecycled and decomposition taking 400 years, the long-term impact is severe.

**Deforestation** – Forests the size of 300 football fields are cut every hour. By 2030, only 10% of forests may remain. Agriculture is the leading cause, especially in Brazil's Amazon. Forests prevent soil erosion, sequester carbon, and support biodiversity.

**Air Pollution** – Outdoor air pollution causes 4.2–7 million deaths annually (WHO). Industrial emissions, vehicles, biomass burning, and dust storms are major contributors.

**Melting Ice Caps and Sea Level Rise** – Arctic warming and Greenland ice melt raise sea levels by 3.2 mm per year. By 2100, sea levels may rise 0.7 m, affecting 340–480 million coastal residents.

**Ocean Acidification** – Oceans absorb 30% of CO<sub>2</sub>, lowering pH and harming marine ecosystems. Coral bleaching threatens reef survival, with reefs at risk of being wiped out by 2050.

**Agriculture** – Responsible for up to one-third of human-caused greenhouse gas emissions, agriculture consumes three-quarters of freshwater and covers one-third of land. Plant-based diets can reduce its carbon footprint.

**Food and Water Insecurity** – Soil erosion, unsustainable farming, and overpopulation threaten food security. Global food demand may rise 70% by 2050, with 820 million people already undernourished.

**Overfishing** – 30% of commercial fishing waters are overfished, threatening marine biodiversity and coastal communities.

**Soil Degradation** – 40% of the world's soil is degraded due to farming practices, chemical use, and deforestation. Healthy soil is vital for carbon storage and food security; degradation threatens future food production.

**Steps to Combat Climate Change** – Reduce driving, reuse and recycle items, aim for zero waste, promote renewable energy, plant native species, and educate communities about sustainable practices. Decisions today will shape Earth's future environmental health.



## NCC Camp Life

Nikki  
1/22 UP Girls' BN NCC, Meerut

Woh din bhi kya din the!  
When the disturbing bangs of the alarm shout out,  
Calling for a half-minded morning workout.  
Huge luggage of memories, lessons, new friends, challenges carried out.  
Here's the glorious saga of NCC Camp,  
Sculpting a cadet into a successful champ.

Tuck the shirt, lock the belt, tie the lace—  
Offo! Smear the beret a thousand times!  
Amidst the sore pain, breakfast is an instant gain.  
“Fall in 35, sit in 35,” commanded our senior.  
Woh din bhi kya din the!

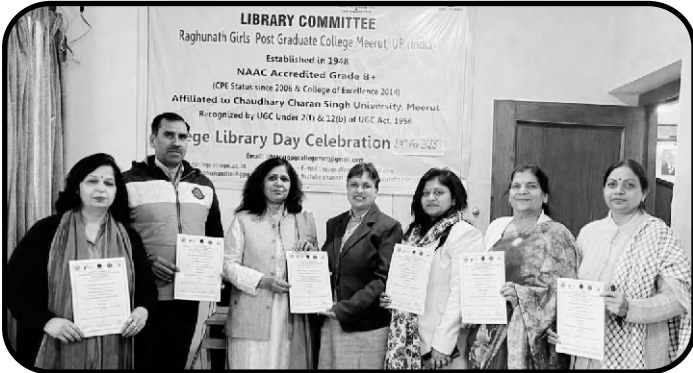
United we stand, divided we fall,  
For I loved performing drill with infinite thrill.  
Hit the bull's eye with the .22 rifle—  
Trust me, not to baffle.  
Woh din bhi kya din the!

Parade, punishment, P.T. staff,  
Lectures, culture, competitions—  
What great compilations!  
With fluttering hackle and smiling faces,  
The unanimous answer of "How's the Josh?—High Sir!"  
Kept us on firm bases.  
Woh din bhi kya din the!

One may forget map reading, FC-BC, judging distance,  
But shall never forget this priceless experience.  
NCC isn't just the National Cadet Corps;  
It's nurturing curious minds with commitment.  
Sach mein, woh din bhi kya din the!



# महाविद्यालय प्रशासनिक कार्नेर



# महाविद्यालय प्रशासनिक कार्नेर



# महाविद्यालय प्रशासनिक कार्नर



# COLLEGE FACULTY MEMBERS



## IQAC, AISHE & NIRF MEMBERS



## MENTORING & COUNSELLING CELL, ANTI RAGGING CELL & STUDENTS GRIVANCES REDRESSAL CELL



## PROCTORIAL BOARD



## FACULTY OF EDUCATION



## SELF FINANCE FACULTY OF B.VOC & SCIENCE



## FACULTY OF COMMERCE



## OFFICE STAFF



## LIBRARY STAFF



## LAB ASSISTANTS' STAFF



## CLASS IV STAFF



## सम्पादिका मण्डल



प्रो० निवेदिता कुमारी  
(प्राचार्या एवं संरक्षिका)



प्रो० पूनम लखनपाल  
(मुख्य सम्पादिका)  
प्रभारी : संस्कृत विभाग



प्रो० सुनीता  
(सह सम्पादिका)  
प्रभारी : हिन्दी विभाग



प्रो० ममता उपाध्याय  
(सह सम्पादिका)  
प्रभारी : अंग्रेजी विभाग



प्रो० अर्चना रानी  
(सम्पादिका-अलंकरण)  
प्रभारी : ड्राइंग एवं पेंटिंग विभाग

## सहयोगी सदस्य

डॉ० अन्नू रस्तौगी, प्रो० मन्जु सिंह, डॉ० हीना यादव, डॉ० ज्योत्सना

छात्र प्रतिनिधि- दिव्या, साक्षी चौधरी, वंशिका, मुस्कान, टीशा, इफरा रिज़वी

# समाचारों के झरोखे से.....

### दूसरे दिन छात्राओं को समस्या का मूल्यांकन कैसे करें, पर भी

## हर चुनौतियों का डटकर करें मुकाबला

जगत के पारक तत्व ही होती हः प्र।

## आरजी कालेज में पर्यावरण स्थिरता में महिलाओं की भूमिका पर संगोष्ठी

### पर्यावरण बचाने के लिए महिला-पुरुष व युवाओं का सहयोग जरूरी

## सड़क सुरक्षा की शपथ दिली

राज्य सरकार द्वारा सड़क सुरक्षा अभियान का शुभारंभ किया गया।

## राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा संघ

राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा संघ द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

## खिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी में शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन

Dainik-Aaj ka Bulletin

## राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा संघ

राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा संघ द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

## आरजी पीजी कालेज में शनिवार को 22 यूपी गल्वर्स बटालियन एवं आइडएवर्सी द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

आनर टीम के विजेता

## आरजी पीजी कालेज में 60 घंटे का एडऑन सर्टिफिकेट कोर्स

ऑन को लाभान्वित करने के लिए महाविद्यालय की दोनों समितियों द्वारा शुभ प्रयास किया

## पूनम लखनपाल को ऑनरेरी मेजर रैंक

उद्योग विभाग द्वारा पूनम लखनपाल को ऑनरेरी मेजर रैंक का प्रदान किया गया।

## आरजी पीजी कालेज में 60 घंटे का एडऑन सर्टिफिकेट कोर्स

ऑन को लाभान्वित करने के लिए महाविद्यालय की दोनों समितियों द्वारा शुभ प्रयास किया

## आरजी पीजी कालेज में शनिवार को 22 यूपी गल्वर्स बटालियन एवं आइडएवर्सी द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

आनर टीम के विजेता

## आरजी पीजी कालेज में 60 घंटे का एडऑन सर्टिफिकेट कोर्स

ऑन को लाभान्वित करने के लिए महाविद्यालय की दोनों समितियों द्वारा शुभ प्रयास किया

## आरजी पीजी के मार्गदर्शन प्रकोष्ठ ने यूजी अनर्बोक्सि

यूजी अनर्बोक्सि के मार्गदर्शन प्रकोष्ठ ने एक कार्यक्रम का आयोजन किया।

## आरजी पीजी कालेज में 60 घंटे का एडऑन सर्टिफिकेट कोर्स

ऑन को लाभान्वित करने के लिए महाविद्यालय की दोनों समितियों द्वारा शुभ प्रयास किया

## आरजी पीजी कालेज में 60 घंटे का एडऑन सर्टिफिकेट कोर्स

ऑन को लाभान्वित करने के लिए महाविद्यालय की दोनों समितियों द्वारा शुभ प्रयास किया

## आरजी पीजी कालेज में 60 घंटे का एडऑन सर्टिफिकेट कोर्स

ऑन को लाभान्वित करने के लिए महाविद्यालय की दोनों समितियों द्वारा शुभ प्रयास किया

E-mail : [rgpgcollegemrt@gmail.com](mailto:rgpgcollegemrt@gmail.com), [studentrgpgcollegemrt@gmail.com](mailto:studentrgpgcollegemrt@gmail.com)  
 Website : <https://www.rgcollege.ac.in>  
 Facebook ID : [Raghubanthgirlspg Meerut](https://www.facebook.com/RaghubanthgirlspgMeerut)  
 Instagram : <https://www.instagram.com/rgpg58?igsh=aGpveDZDGxxaGFU>  
 Youtube : [www.youtube.com/@RGPGCOLLEGE](https://www.youtube.com/@RGPGCOLLEGE)  
 LinkedIn : [www.linkedin.com/in/raghunath-girls-post-graduate-college-meerut-college-b29ab7327](https://www.linkedin.com/in/raghunath-girls-post-graduate-college-meerut-college-b29ab7327)